जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर
Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 32 संख्याः 242 प्रभात उदयपुर, शनिवार 5 जुलाई, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

‘लंगड़े बारात के घोड़े, “रेस हॉर्स” बनना चाहते हैं’

राहुल की इस शिकायत से कई पुराने नेता अति नाखुश, पर बेबस हैं

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 4 जुलाई। राहुल गांधी ने अपनी पार्टी के उन जनरलों (वरिष्ठ नेताओं), जिन्होंने वर्षों तक वफादारी और समर्पण के साथ पार्टी की सेवा की है, के प्रति असभ्य भाषा का प्रयोग करते हुए उन्हें “लंगड़े घोड़े” कहा, जो अब बूढ़े, बीमार और संगठन के लिए बेकार हो चुके हैं, जिन्हें अब हटा कर ‘चरागाह’ में भेज दिया जाना चाहिए। इस पर पार्टी के अंदर जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई।

पार्टी के नेता और कार्यकर्ता इस टिप्पणी से न केवल आहत हैं, बल्कि गुस्से और दुख से भी भर उठे हैं। पार्टी से लंबे समय से जुड़े मझोले स्तर के कार्यकर्ता ने राहुल गांधी की भाषा और शब्दों के चयन को घमंड से भरा तथा एक नेता के लिए अनुपयुक्त करार दिया।

एक अन्य कार्यकर्ता ने यह पूछ लिया कि क्या वे (राहुल) यही शब्द अपनी मां और बहन के लिए भी इस्तेमाल करेंगे, क्योंकि एक ने रिटायरमेंट ले लिया है और दूसरी को कुछ वर्षों से कोई जिम्मेदारी नहीं दी गई है।

- पर इतना जरुर हुआ है कि दबी ज़ुबान से सवाल भी पूछे जाने लगे हैं, राहुल गांधी के बारे में।
- जब राहुल, पुराने “अनफिट” नेताओं के रिटायरमैंट की बात करते हैं तो सोनिया गांधी का नाम लेने लगे हैं लोग, क्योंकि वे काफी अर्से से बीमार चल रही हैं, पर आखिरी निर्णय में उनकी काफी चलती है।
- जिन लोगों को राहुल रिटायर देखना चाहते हैं, उनमें कमलनाथ, अशोक गहलोत, भूपेन्द्र हुड्डा का नाम ऊपर ही ऊपर है।
- जो, अपने आप रिटायर कर दिये गये उनमें टॉप में नाम है जनार्दन द्विवेदी का, जनार्दन द्विवेदी एक तरह से सोनिया गांधी के “मैंटर” जैसे थे, पर, उन्होंने अकारण एक स्टेटमैंट दे दिया कि राजीव गांधी ने उनसे कहा था कि दोनों भाई-बहन में प्रियंका ज्यादा उपयुक्त हैं, राजनीति के लिए। इस वक्तव्य के बाद वो कांग्रेस के रंगमंच से गायब से ही हो गये थे।
- इसी प्रकार गहलोत, हाईकमान के खिलाफ बगावत करने के कारण, “साइड लाइन्ड” हैं और लगातार कोशिशों के बावजूद, “एंट्री” नहीं पा सके हैं।

जब से राहुल गांधी ने कांग्रेस पार्टी की कमान संभाली है, पार्टी में नेताओं की तीन श्रेणियां उभर कर सामने आई हैं: वे, जिन्हें दरकिनार कर दिया गया है, वे जिन्हें जबरन रिटायर कर दिया गया है, और वे, जो पार्टी के संचालन के तौर-तरीकों से नाखुश होकर पार्टी छोड़ गये हैं।

सबसे पहला नाम, जिसकी चर्चा पार्टी में होती है, वह है प्रियंका गांधी का। वे हाईकमान का हिस्सा मानी जाती हैं, लेकिन राहुल गांधी ने उन्हें एक तरह से निष्क्रिय कर दिया है। वे कहने को तो एआईसीसी की महासचिव हैं, लेकिन उनके पास न कोई विभाग है, न कोई जिम्मेवारी। उनके करीबी लोग पार्टी पदों से हटा दिए गए हैं और अन्य लोग भी उनसे दूर हो गए हैं, क्योंकि अब उन्हें लगता है कि प्रियंका उनके करियर में कोई मदद नहीं कर सकतीं।

ऐसे नेताओं की सूची लंबी है। जनार्दन द्विवेदी, जिन्हें सोनिया गांधी का राजनीतिक गुरु तक माना जाता था, ने एक बार सार्वजनिक रूप से कह दिया था कि राजीव गांधी ने उनसे कहा था कि प्रियंका गांधी राजनीति में राहुल से अधिक उपयुक्त हैं तथा वे राजनीति में अच्छा काम कर सकती हैं। उसी दिन से द्विवेदी का पतन शुरू हो गया और वे पूरी तरह हाशिए पर चले गए।

अशोक गहलोत, जो पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं तथा तीन बार मुख्यमंत्री रह चुके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

‘भगवान को न्याय में देखें जजों में नहीं’

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत नई दिल्ली-

नई दिल्ली, 4 जुलाई। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को लोगों से यह सलाह दी कि वे भगवान को न्यायाधीशों में न ढूंढ़े बल्कि न्याय में ढूंढ़े। जस्टिस एमएम सुंद्रेश ने यह टिप्पणी उस समय की, जब एक वकील ने कोर्ट में कहा, “जज हमारे लिए भगवान की तरह होते हैं।’

न्यायमूर्ति सुंद्रेश ने स्पष्ट किया कि न्यायधीश सिर्फ विनम्र सेवक होते हैं और उन्होंने कहा, “हम में भगवान की न तलाश करें, न्याय में भगवान की तलाश करें। हम केवल विनम्र सेवक हैं।”

- सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस सुंद्रेश ने एक मामले की सुनवाई के दौरान उस समय यह टिप्पणी की जब वकील ने कहा कि जज हमारे लिए भगवान की तरह होते हैं।

यह टिप्पणी एक वकील द्वारा एक नोटिस पर आपत्ति जताए जाने के बाद आई, जिसमें यह दावा किया गया था कि वकीलों ने न्यायधीशों को फिक्स किया था। वकील ने उस नोटिस को “अपमानजनक” बताया।

जस्टिस सुंद्रेश ने कहा, कृपया भावुक न हों। जज के तौर पर हमें इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता।”

पिछले साल, भारत के पूर्व चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने भी यह स्पष्ट

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका व भारत के बीच टैरिफ समझौते की सम्भावना लगभग समाप्त

केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने वाशिंगटन में पत्रकारों से कहा, भारत “डैड लाइन” के दबाव में वाणिज्य समझौते नहीं करता है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 जुलाई। भारत और अमेरिका के बीच एक अंतरिम व्यापार समझौता, जिसे अमेरिका द्वारा 9 जुलाई से शुरू किए जाने वाले “रैसिप्रोकल टैरिफ” से पहले अंतिम रूप दिया जाना था, अब फिलहाल टलता हुआ नजर आ रहा है।

राष्ट्रपति पद के अपने दूसरे कार्यकाल के आरंभ के तुरंत बाद, डॉनल्ड ट्रंप ने विश्व के विभिन्न देशों पर “रैसिप्रोकल टैरिफ” लगाने की घोषणा की थी, जिसमें भारत पर भी 25 प्रतिशत शुल्क लगाया गया था, जो 9 जुलाई से लागू होना है।

वॉशिंगटन में केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल द्वारा पत्रकारों को दिया गया यह बयान, कि भारत किसी डैडलाइन के दबाव में व्यापार समझौते नहीं करता, इस बात का संकेत है कि यह बातचीत अब लम्बे समय तक चल सकती है। भारत यह संदेश देना चाहता था कि उसे दबाव डालकर किसी समझौते के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। भारत सरकार के सर्वोच्च स्तर से स्वीकृति के बिना सार्वजनिक रूप से इस रुख की घोषणा नहीं की जा सकती थी।

- जैसा की विदित ही है, दोबारा राष्ट्रपति बनने के बाद ट्रम्प ने घोषणा की थी, कि 9 जुलाई से अमेरिका भारत से आयातित सभी सामान पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगायेगा।
- टैरिफ समझौता वार्ता टूटने का आभास इस बात से भी मिलता है, कि, भारत ने डब्ल्यु.टी.ओ. में कहा है कि अमेरिका द्वारा भारतीय सामान पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा, एक तरफा निर्णय है, और गलत है।
- अमेरिका ने चीन को चेतावनी दी थी, कि “रेअर अर्थ” ख़निज की सप्लाई अमेरिका को तुरन्त शुरू करे अन्यथा कई सख्त आर्थिक प्रतिबन्ध लगाने पड़ेंगे। इसके बाद चीन ने निर्यात शुरू कर दिया था।
- अमेरिका, भारत से भी यह उम्मीद कर रहा था। पर, पिछले दिनों पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष आसीफ मुनीर के भड़काऊ भाषणों के बाद पहलगाम नरसंहार हुआ, तथा अमेरिका ने मुनीर को भारी सम्मान दिया उनकी की यात्रा के दौरान।

इस बीच, भारत ने वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गनाइज़ेशन के डिस्प्यूट ट्रिब्युनल में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कुंभलगढ़ जिले में मोहर्रम जुलूस की अनुमति का विवाद गहराया

किले में प्रवेश बंद, सैंकड़ों पर्यटक वापस लौटे, बाज़ार पूरा बंद रहा

उदयपुर, 4 जुलाई। (कासं)। राजसमंद जिले के कुंभलगढ़ किले में मोहर्रम के जुलूस की अनुमति को लेकर विवाद अब और अधिक गहराता जा रहा है। शुक्रवार को भी हालात यथावत ही बने रहे। किले में किसी को प्रवेश नहीं दिया जा रहा है, बाजार आज भी बंद रहे और स्थानीय बसों का संचालन भी पूरी तरह ठप्प है। विवाद के कारण बाहर से आने वाले पर्यटक भी किला नहीं देख पा रहे हैं जिससे पर्यटन प्रभावित हुआ है और स्थानीय व्यापारियों में नाराजगी है। हिंदू संघर्ष समिति ने मोहर्रम के जुलूस को दी गई अनुमति को लेकर विरोध जताते हुए आज भी प्रदर्शन किया गया।

समिति का कहना है कि जब पुरातत्व विभाग के नियमों के अनुसार शाम पांच बजे के बाद किले में प्रवेश की अनुमति नहीं होती तो मोहर्रम के ताजियों को शाम को किले में जाने की अनुमति कैसे दी गई। समिति ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई और धार्मिक आयोजनों में दोहरे मापदंड अपनाने का आरोप लगाया। गुरुवार को हिंदू संघर्ष समिति के आव्हान पर बड़ी संख्या में लोग कुंभलगढ़ बस स्टैंड पर एकत्र हुए और किले की ओर मार्च किया। रास्ते में टायर जलाकर प्रदर्शन किया गया। पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन प्रदर्शनकारी आगे बढ़ गए। इस दौरान किले में प्रवेश पर रोक को लेकर पुलिस और प्रदर्शनकारियों में तीखी नोकझोंक भी हुई। संभावित तनाव को देखते हुए प्रशासन ने कुंभलगढ़ में भारी पुलिस बल तैनात किया है।

- हिन्दू संघर्ष समिति का कहना है कि जब पुरातत्व के नियमों के अनुसार, शाम पाँच बजे के बाद किले में प्रवेश की अनुमति नहीं होती तो मोहर्रम के ताजियों को शाम को किले में जाने की अनुमति कैसे दी गई। समिति ने इसे धार्मिक आयोजनों पर दोहरा मापदंड बताया।

इस बीच कुंभलगढ़ विधायक सुरेंद्र सिंह राठौड भी प्रदर्शनकारियों से बातचीत कर रहे हैं। गुरुवार को उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि इस पूरे विवाद की जड़ पुरातत्व विभाग की गलती है। उन्होंने याद दिलाया कि इससे पहले केलवाड़ा में भी मोहर्रम के रूट को बदला गया था तो यहां भी ऐसा किया जा सकता था। उन्होंने कहा कि सरकार और प्रशासन इस मामले में समुचित समाधान निकालने का प्रयास कर रहे हैं। इधर हिंदू संघर्ष समिति ने साफ कर दिया है कि जब तक मोहर्रम जुलूस की अनुमति वापस नहीं ली जाती तब तक कुंभलगढ़ का बाजार अनिश्चितकाल के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कोचिंग विद्यार्थियों की आत्महत्या पर सुनवाई जुलाई के अंत में

जयपुर, 4 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने कोचिंग सेंटर के विद्यार्थियों के आत्महत्या करने से जुड़े मामले में सुनवाई जुलाई माह के अंतिम सप्ताह में रखी है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस चन्द्र प्रकाश श्रीमाली ने यह आदेश प्रकरण में लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट में समान मामला लंबित बताया जा रहा है। वहां 17 जुलाई को सुनवाई होनी है। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि सुप्रीम कोर्ट उच्च शिक्षा को लेकर मामला सुन रहा है या कोचिंग छात्रों के बिंदु पर प्रकरण की सुनवाई कर रहा है। ऐसे में 17 जुलाई को होने वाली सुनवाई के बाद इसकी स्पष्ट जानकारी मिल सकेगी। इसलिए प्रकरण की सुनवाई जुलाई माह के अंतिम सप्ताह में करना उचित होगा। गौरतलब है कि हाईकोर्ट ने

- सुप्रीम कोर्ट का इस बिंदू पर रुख स्पष्ट होने तक हाई कोर्ट ने सुनवाई टाली।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सात हाईकोर्ट्स में 36 न्यायाधीशों की नियुक्ति को मंजूरी

सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने दो दिन तक 54 उम्मीदवारों का इटरव्यू लेकर यह नियुक्तियां की हैं

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 4 जुलाई। न्यायिक नियुक्तियों की प्रक्रिया में बड़े बदलाव की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने इस सप्ताह की शुरुआत में दो दिन तक 54 उम्मीदवारों के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार किया उसके बाद 7 उच्च न्यायालयों में जजों के रूप में पदोन्नति के लिए रिकॉर्ड 36 नामों को मंज़ूरी दी। इसके साथ ही देशभर के 25 उच्च न्यायालयों में 1,122 स्वीकृत पदों के मुकाबले 371 रिक्तियों में से कुल 90 पद भर दिए गए हैं।

जिन उच्च न्यायालयों में नियुक्तियों के लिए नाम मंज़ूर किए गए हैं, उनमें दिल्ली, पंजाब एवं हरियाणा, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, पटना, आंध्र प्रदेश और राजस्थान सहित कई न्यायालय शामिल हैं।

कोलीजियम के प्रस्ताव के अनुसार, पंजाब एवं हरियाणा और मध्य प्रदेश उच्च न्यायालयों में 10-10, तेलंगाना और गुवाहाटी उच्च न्यायालयों में 4-4, दिल्ली उच्च न्यायालय में 3, राजस्थान और पटना उच्च न्यायालयों में 2-2 तथा आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय में 1 नाम की सिफारिश की गई है।

कोलीजियम में भारत के मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई, और वरिष्ठ न्यायमूर्ति सूर्यकांत व विक्रम नाथ शामिल हैं। उन्होंने 2 और 3 जुलाई को ये साक्षात्कार आयोजित किए। चयनित उम्मीदवारों में न्यायिक अधिकारी और बार से जुड़े वकीलों का मिश्रण है, जिनका चयन कानूनी समझ, समसामयिक संवैधानिक मुद्दों पर उनके विचार और व्यक्तित्व के व्यापक आकलन के आधार पर किया गया।

कोलीजियम की यह नवीनतम पहल एक स्थायी बदलाव को दर्शाती है, जिसमें केवल दस्तावेज़ी समीक्षा की पारंपरिक प्रणाली से हटकर अब प्रत्यक्ष संवाद और सक्रिय मूल्यांकन पर अधिक जोर दिया जा रहा है। पहले की प्रणाली में उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश, राज्य सरकारों, केंद्रीय विधि मंत्रालय और खुफिया ब्यूरो की रिपोर्टों को प्रमुखता दी जाती थी, जबकि नई प्रक्रिया में उम्मीदवारों के साथ सीधे संवाद को ज्यादा महत्त्व दिया गया है।

ध्यान देने वाली बात यह है कि ये साक्षात्कार सुप्रीम कोर्ट की पारंपरिक गर्मी की छुट्टियों के दौरान आयोजित किए गए, जिन्हें अब "आंशिक कार्य दिवस" के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इस दौरान जहां न्यायिक पीठों ने अत्यावश्यक मामलों की सुनवाई की, वहीं प्रशासनिक व संस्थागत कार्य, जैसे नियुक्तियाँ आदि, भी सक्रिय रूप से जारी रहे।

- इन 36 जजों में से दो जज राजस्थान हाईकोर्ट के लिए चयनित हुए हैं। इसके अलावा पंजाब, हरियाणा हाईकोर्ट व मध्यप्रदेश में दस-दस, तेलंगाना व गौटारी हाईकोर्ट में 4-4, दिल्ली हाईकोर्ट में तीन तथा पटना हाईकोर्ट में दो जज नियुक्त किए गए है।
- कोलीजियम ने इस बार नियुक्ति के लिए साक्षात्कार का विकल्प चुना है, बजाय दस्तावेजों की जांच के। जिन अभ्यर्थियों का साक्षात्कार हुआ उनमें न्यायिक अधिकारी व वरिष्ठ वकील शामिल हैं।

सब लैफ्टिनैंट आस्था पूनिया नौ सेना की पहली महिला फाइटर पायलट बनीं

नयी दिल्ली, 04 जुलाई। सब लेफ्टिनेंट आस्था पूनिया नौसेना की पहली महिला फाइटर पायलट बनी हैं।

नौसेना ने शुक्रवार को बताया कि विशाखापत्तनम स्थित नौसैनिक एयर बेस पर दूसरे बेसिक हॉक कन्वर्जन कोर्स के पूरा होने के बाद गुरूवार को उन्हें यह गौरव हासिल हुआ। इस कोर्स में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए लेफ्टिनेंट अतुल कुमार और सब लेफ्टिनेंट आस्था पूनिया को सहायक नौसेना प्रमुख (वायु) रियर

- बेसिक हॉक कन्वर्ज़न कोर्स के बाद उन्हें यह गौरव मिला। ज्ञातव्य है कि आस्था पूनिया व अतुल कुमार को इस कोर्स में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए “विंग्स ऑफ गोल्ड” सम्मान भी मिला है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

‘चीन, पाकिस्तान को “ऑपरेशन सिंदूर” के दौरान, भारत के हवाई हमले व सेना के “मूवमैंट” की सारी जानकारी तुरंत भेज रहा था’

भारतीय सेना के डिप्टी चीफ, ले.जनरल राहुल आर. सिंह ने स्पष्ट जानकारी दी

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 जुलाई। देश के डेपुटी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ (कैपेबिलिटी डवलपमैंट एंड सस्टीनेन्स) लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर. सिंह ने आज यह स्वीकार किया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन ने पाकिस्तान को लाइव ऑपरेशनल डेटा प्रदान किया, जिससे भारत की रक्षा और रणनीतिक योजना पर सवाल खड़े हो गए हैं।

भारत की रक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण गैप को उजागर करते हुए, उप सेनाध्यक्ष ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत तीन दुश्मनों से लड़ रहा था। “हमारे पास एक सीमा थी और दो दुश्मन थे, वास्तव में तो तीन थे। पाकिस्तान तो सामने था। चीन उसे सभी संभव सहायता प्रदान कर रहा था। पाकिस्तान का 81 प्रतिशत सैन्य हार्डवेयर चीनी है, चीन अपने हथियारों का परीक्षण दूसरे हथियारों के खिलाफ करना चाहता है, तो यह संघर्ष उसके लिए एक “लाइव” प्रयोगशाला की तरह था।”

फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एफआईसी सी- फिक्की) के एक कार्यक्रम में बोलते हुए, लेफ्टिनेंट जनरल सिंह ने कहा, “जब डीजीएमओ स्तर की वार्ता चल रही थी, तब पाकिस्तान को चीन से हमारी सैन्य तैनाती के बारे में इनपुट मिल रहे थे। इस मसले पर हमें तेजी से कदम उठाने और उचित कार्रवाई करने की आवश्यकता है, पिछले पांच वर्षों में, पाकिस्तान का 81 प्रतिशत सैन्य हार्डवेयर चीन का ही रहा है।”

सिंह ने कहा कि चीन की मदद से ही पाकिस्तान भारत की गतिविधियों को तुरंत ट्रैक कर सका, जिससे ऑपरेशन का रूप बदल गया और भारत की रक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण झोल (गैप) का पता चला, जिसे जल्दी ही ठीक करने की आवश्यकता है।

सिंह ने यह भी कहा कि तुर्की ने पाकिस्तान को उन्नत किस्म के ड्रोन प्रदान किए। “तुर्की ने भी पाकिस्तान को विशिष्ट प्रकार का सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसने पाकिस्तान को

- सिंह के अनुसार, उस समय हम तीन दुश्मनों, चीन, पाकिस्तान व टर्की से एक साथ लड़ रहे थे तथा पाकिस्तान का अस्सी प्रतिशत युद्ध का सामान चीन में निर्मित था और चीन द्वारा सप्लाई किया गया था।
- पाकिस्तान, चीन व टर्की यह जानते थे कि जैसे ही युद्ध लंबा खिंचा और उसका स्तर, तकनीकी दृष्टि से और जटिल हुआ, भारत का पलड़ा बहुत भारी हो जाएगा और पाकिस्तान उसके मुकाबले में टिक नहीं पायेगा।
- अतः, जैसे ही युद्ध “एस्कलेट” होता दिखा, चीन ने पाकिस्तान को सलाह दी, आत्मसमर्पण करो व संधि की कोशिश करो। इसलिए, पाकिस्तान के डी.जी.एम.ओ. ने भारत के डी.जी.एम.ओ. को फोन किया और युद्ध विराम की अर्ज़ी दी।
- ले.जनरल सिंह के अनुसार, भारत के लिये यह जानना अत्यन्त जरुरी है कि उसके हवाई जहाजों, मिसाइल्स आदि की जानकारी चीन तक कैसे पहुँच रही थी, भारत के सुरक्षातंत्र में इतना बड़ा “गैप” क्यों था और कहाँ से आया था।
- ले.जनरल सिंह के अनुसार, भारत ने भी पाकिस्तान की युद्ध विराम की अर्ज़ी इसलिये स्वीकार कर ली, क्योंकि, ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य तो पूरा हो गया था। पाकिस्तान समझ गया था कि भारत अब दर्द बर्दाश्त नहीं करेगा, तुरंत प्रभाव से आंतकवादी हमले का अवश्य जवाब देगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिहार के एस.आई. आर. के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाएगी कांग्रेस

नयी दिल्ली, 04 जुलाई। कांग्रेस ने शुक्रवार को कहा कि बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया को चुनौती देते हुए इसके खिलाफ वह उच्चतम न्यायालय जायेगी।

कांग्रेस का आरोप है कि एसआईआर प्रक्रिया लगभग दो करोड़ मतदाताओं को मताधिकार से वंचित करने की साजिश है।

- कांग्रेस ने आरोप लगाया कि मतदाता सूची के स्पेशल इन्टैंसिव रिवीज़न से दो करोड़ मतदाता वोट देने के अधिकार से वंचित हो जाएंगे। यह राष्ट्रीय मसला है इसलिए पार्टी सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करेगी।

पार्टी सूत्रों ने आज यहां बताया कि संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

कोई भी भाषा अपने साथ एक संस्कार, एक सोच, एक पहचान और प्रवृत्ति को लेकर चलती है। – भरत प्रसाद

हिन्दी भाषा को लिंक भाषा के रूप में अनिवार्य करने की आवश्यकता

देश सम्राट अशोक के शासन काल में एक बृहत देश बन गया था जिसकी सीमाएं पूर्व में म्यांमार, श्री लंका, अफगानिस्तान, कश्मीर, गिलगित, नेपाल भूटान आदि अनेक राज्य उसका हिस्सा थे। इस बात के प्रमाण अभी भी अनेक देशों में मिलते हैं। भाषा सदैव भिन्न रही है बल्कि प्रति पचास मील पश्चात् बोली बदल जाती है। मध्य भारत में अवध, ब्रज, भोजपुरी, बंगाली, उड़िया, कन्नड़, तेलगु, तमिल, मराठी और मलयालम प्रमुख भाषाएँ रहीं हैं इन सबके अतिरिक्त संस्कृत सभी प्रांतों में बोली और लिपिबद्ध कर शास्त्र रचना में मुख्य भूमिका निभाती थी। कालान्तर में अनेक कारणों और बदलती परस्तिथिओं ने इन भाषाओँ का प्राय लोप होता गया.. और सही व्याकरण न बन पाने से बिदेशी आक्रांताओं द्वारा फ़ारसी, अरबी, उर्दू आदि भाषाओं और बोलिओं का प्रादुर्भाव् इतना बढ़ा कि राज काज भी इन्ही भाषाओँ में होंने लगे,..मध्य कालीन भारत में कतिपय कुछ हिंदी साहित्यकारों ने हिंदी (देवनागरी) का सूत्रपात किया और व्याकरण के नियम बना कर सुद्रण भाषा का निर्माण आरम्भ किया। आज हम देख रहे हैं कुछ राज्यों में हिंदी के प्रति दुर्भाव चरम तक बढ़ गया है दक्षिण भारत और बंगाल में सब राज्य अपनी लोकल भाषा को राज्य की भाषा का दर्जा देने की बकालत कर आंदोलन तक कर रहे हैं। उन्हें ज्ञान होना चाहिए कि इतने बड़े और सभी भौगोलिक परिस्तिथिओं के रहते तथा सामजिक परम्पराओं के चलते जब तक एक कोई भाषा लिंक भाषा नही बनेगी राज्यों के आपस में व्यवहार और क्रिया कलापों में सामजस्य और सामाजिक सम्बन्ध नहीं पनप पाएंगे? सभी अपनी अपनी ढपली और राग आलापते रहेंगे। अन्य आम बोलचाल और लिखित सामग्री न होने से विचार विनमय और सम्बाद की कमी खलेगी। समाजों से सामजस्य नही होने से द्वेष, विषमता, क्लेश बढ़कर समाज अनेक समूह में बट जायेगा और यह स्तिथि संभवत: राजनैतिक लोगों को भी मुफीद न लगे?

शिक्षित और जागरूक समाज इस समस्या पर गहन विचार करें, समय निकलने पर फिर पछताते क्या होत 'जब चिड़ियाँ चुग गयी खेत' उदाहरण हमारे सामने हैं। भूटान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका, वर्मा, नेपाल, आदि, अभी भारत के संघीय ढांचे से बाहर हैं। बलूचिस्तान और सिंध प्रान्त पाकिस्तान से स्वतंत्र होने के कगार पर हैं। बंगाल,, और बांग्ला देश भी टूटेगा, क्योंकि वहां धर्म आधारित द्वेष चरम पर है। हिन्दू और हिंदीभाषी लोग वहां के एक विशेष धर्म को सुहाते नहीं, इससे वहां इन लोगों को असुरक्षा की भावना बढ़ गयी है। वहीं कट्टरता के बढ़ते प्रभाव से संघर्ष की स्तिथि उत्पन्न हो चुकी है। बंगाल में तो केंद्र को बहुत पहले ही राष्ट्रपति शासन लगा देना चाहिए। ऐसी अनुशासनहीनता ही बड़े रूप में बिघटन का रूप ले लेती है। मैं कोई राजनैतिक आदमी तो हूँ नहीं, संभवत: केंद्र में बैठे नेता अपने कुछ गुना भाग और समीकरण अलग ही रचते हैं।

केंद्रीय सरकार भी अपने स्तर पर समय रहते वांछित कदम उठाकर स्तिथि को बिगड़ने से बचा सकती है। हिंदी भाषा को एक लिंक भाषा के रूप में सभी राज्यों में आवश्यक रूप से अनिवार्य करना चाहिए, तदुपरांत संस्कृत, अंग्रेजी, ब्रज, अवधी, मलयालम, कन्नड़ आदि अलग से पाठ्यक्रम में छात्र की रूचि के अनुसार समावेश किया जा सकता है। कोई भी कितनी भी भाषाएँ सीख सकता है, भविष्य में ये उसके काम आ सकती हैं।

देश में आग सुलग रही है लोग सभी तरह से असंतुष्ट हैं अभी कोई बोल नहीं रहा है। सरकार कहती है कि जातियां ख़तम हो चुकी हैं तो फिर, एस सी, एसटी, ओ बी सी, बेकवर्ड, आदि क्या जातियाँ नहीं हैं? सरकार जनता को क्या विवेकहीन समझती है? आम चुनाव के समय जातीय समीकरण और संख्या प्रत्याशी चुनने से लेकर मंत्री बनने तक प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जाति ही जहन में रह कर मुख्य भूमिका निभाती है। देश के सभी नेता अभी स्वप्निल अवस्था में है उन्हें खुद का कार्यकाल ठीक प्रकार बीत जाने का बोध रहता है अन्य घटनाओं के होते हुए वे अपना पांच साल का कार्यकाल ढो रहे होते हैं।

ऐसा कभी नहीं रहा कि देश पूर्व में विखंडित न हुए हों। सोवियत संघ का उदाहरण अभी घटित ही हुआ है शायद सत्तर वर्षों तक ही संघीय बना रहा फिर गोर्बाचोव के आने के बाद सब खंडित होकर स्वतंत्र देश बन गए, उससे पूर्व भी ये सभी अलग ही थे। इसलिए मेरी अंतरात्मा विभिन्न परिस्तिथिओं से संकेत दे रही हैं कि बिघटन प्रकृति प्रदत्त है, उसके लिए कारण भी अपने आप बनते हैं हालांकि जनता का कारणों को बनाने में योगदान होता है। चरम सीमा होने पर जनता उपद्रव पर उतर आती है। फिर स्वतंत्र होने की लालसा बलवती होकर बिघटन को अंजाम देती है। देश में वैसे तो प्रधान मंत्री एक योग्य व्यक्ति हैं और विदेश नीतिओं में अभी तक सफल भी रहे हैं., कुछ ताकतों को यह स्वीकार नहीं होता चाहे वे देश के अंदर की हों अथवा बाहर की हों। आरम्भ अंदर से ही निर्मित होता है इसके लिए हवा-पानी भी अंदर ही मिलता है फिर कुछ विदेशी ताकतें बिभिन्न प्रकार से संलग्न होकर उस सुलगती आग में घी अथवा अन्य ज्वलनशील पदार्थ डाल कर असंतोष को भड़का देते हैं। जिसके लिए उन्हें विदेशों से ही आर्थिक संबल मिलता रहता है।

खैर, ऐसी बाते सभी राजनीतिक लोग जानते रहते हैं लेकिन चुप रहते हैं। शायद पार्टी भय या अन्य कोई लालसा उनेह चुप रहने के लये आत्मीय बल देता रहता है।

यह सब लिखने के लिए मेरे पास कोई भी प्रमाण नहीं हैं केवल घटित हो रही दशाएं और मीडिया पर उपलब्ध सामग्री के आधार पर मेरी ये सोच बनी और मजबूत हुई है हो सकता है मेरी सोच और धरना भविष्य में गलत और आधारहीन सावित हो। फिर भी राजनैतिक और सामाजिक स्तिथिओं को देखते हुए, संघीय ढांचे से केरल, महाराष्ट्र, मिजोरम, तेलंगना, पंजाब, कश्मीर, बंगाल आदि कुछ राज्यों के स्वत: स्वतंत्र घोषित होने की प्रबल सम्भावना बनती दिखती है। मैं कोई राजनितिक आदमी नहीं और न ही किसी पार्टी और नेता से मेरा नाता। विचारधारा जरूर मेरी सनातनी पुश्तैनी रही है और उसी को आज भी पोषित कर रहा हूँ। लेख के माध्यम से मैं पाठकों को और राजनीत में रूचि रखने वालों को उपरोक्त विचार जरूर दे रहा हूँ ताकि वे स्वंग और सामूहिक और सामाजिक स्तर पर उपज रहे फफूंदी की तरह जयचंदो को शीघ्रति शीघ्र निपटा लें। केंद्रीय सरकार भी अपने स्तर पर समय रहते वांछित कदम उठाकर स्तिथि को बिगड़ने से बचा सकती है। हिंदी भाषा को एक लिंक भाषा के रूप में सभी राज्यों में आवश्यक रूप से अनिवार्य करना चाहिए, तदुपरांत संस्कृत, अंग्रेजी, ब्रज, अवधी, मलयालम, कन्नड़ आदि अलग से पाठ्यक्रम में छात्र की रूचि के अनुसार समावेश किया जा सकता है। कोई भी कितनी भी भाषाएँ सीख सकता है, भविष्य में ये उसके काम आ सकती हैं।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो. वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं डेरी विज्ञ, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राज.

राशिफल शनिवार 5 जुलाई, 2025

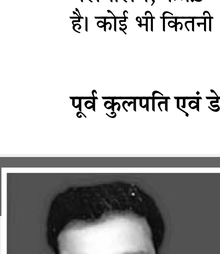

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, स्वाती नक्षत्र सायं 7:51 तक, सिद्ध योग सायं 8:36 तक, तैतिल करण प्रात: 5:45 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 7:51 तक है। रवियोग रात्रि 7:51 तक है। आज आशा दशमी का व्रत है। आज गुप्त नवरात्रौत्थापन, मन्वादि, गिरिजा दशमी पूजा है। आज कत्ल की रात (मु.) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:24 से 9:06 तक, चर 12:31 से 2:13 तक, लाभ-अमृत 2:13 से 5:38 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:20

मेष

परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

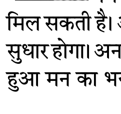

वृष

स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

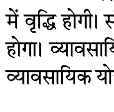

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा।

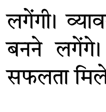

मकर

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

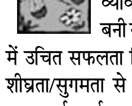

तुला

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक

आज मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मीन

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सरकार के निर्णयों से "सहकार से समृद्धि" के पथ पर आगे बढ़ रहा राजस्थान

5 जुलाई, अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस विशेष.....

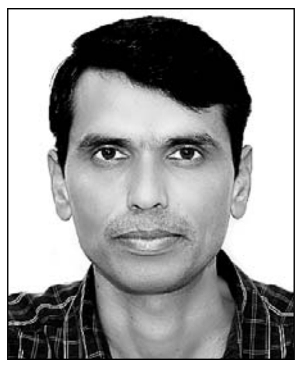

दिनेश शर्मा

सहकारिता हमारे सामाजिक जीवन और अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग रही है। प्राचीन भारतीय लोकाचार में भी सहकारिता के बीज देखने को मिलते हैं। ऋग्वेद जैसे प्राचीन शास्त्र में भी संगठन और सहकारिता पर जोर दिया गया है। वसुधैव कुटुम्बकम से बड़ा सहकारिता मंत्र और क्या हो सकता है, जिसमें कुछ लाख या करोड़ लोगों के बीच नहीं, मानव मात्र के बीच नहीं, सम्पूर्ण प्रकृति जिसमें मूर्त और अमूर्त, चल और अचल, सभी के बीच, अनंत, शाश्वत और सनातन पारस्परिक निर्भरता और सह अस्तित्व की संकल्पना है। समय के साथ सहकारी आन्दोलन मजबूत हुआ और इसने सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से किसानों, श्रमिकों, शिल्पकारों, लघु व्यवसाईयों एवं विविध स्तरों पर उत्पादक गतिविधियों में संलग्न जनसाधारण को बिचौलियों के शोषण से मुक्त कराने में सहकारिता का अहम योगदान है।

सहकारिता के महत्व को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष घोषित किया गया है। पूरा विश्व 'सहकारिता से एक बेहतर दुनिया का निर्माण होता है' थीम पर अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष मना रहा है। राजस्थान में भी सहकारी आन्दोलन का लगभग 125 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है। राजस्थान में वर्ष 1904 में अजमेर से सहकारी आन्दोलन की शुरूआत हुई और वर्तमान में इसने विशाल वट वृक्ष का रूप ले लिया है। वर्तमान में राज्य में 41 हजार से अधिक पंजीकृत सहकारी समितियों के 1 करोड़ 10 लाख से अधिक सदस्य हैं।

सहकारिता के महत्व को इंगित करते हुए 6 जुलाई, 2021 को केन्द्र सरकार ने सहकारिता मंत्रालय का गठन कर अमित शाह को इसका जिम्मा सौंपा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना पर मंत्रालय द्वारा 'सहकार से समृद्धि' योजना क्रियान्वित की जा रही है, जिसके अंतर्गत 60 से अधिक पहलों के माध्यम से सहकारी सेक्टर को सशक्त बनाया जा रहा है। ये पहलें विशेष रूप से सहकारी समितियों, किसानों, कारीगरों, पशुपालकों और छोटे उद्यियों को सशक्त बनाने की दिशा में केन्द्रित हैं। राज्य में योजना के सफल एवं प्रभावी क्रियान्वयन के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में राज्य शीर्ष समिति गठित है। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में राज्य सहकारी विकास समिति एवं जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला सहकारी विकास समिति गठित है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व एवं सहकारिता मंत्री गौतम कुमार दक के निर्देशन में राजस्थान भी 'सहकार से समृद्धि' के पथ पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है। 'सहकार से समृद्धि' की विभिन्न पहलों को क्रियान्वित करने एवं सहकारी क्षेत्र में नवाचार करने में राज्य अग्रिम पंक्ति में है।

पैक्स कम्प्यूटराइजेशन के अंतर्गत अब तक 5,300 से अधिक पैक्स को गो-लाइव किया जा चुका है। प्रत्येक पंचायत में बहुउद्देशीय पैक्स/ डेयरी/ मत्स्य सहकारी समितियों के गठन की दिशा में कार्य करते हुए अब तक लगभग 2,700 नई सहकारी समितियां गठित की जा चुकी हैं। विश्व की सबसे बड़ी विकेन्द्रीकृत अन्न भण्डारण योजना के अंतर्गत राज्य में 500 मीट्रिक टन के 135 गोदाम स्वीकृत किये जा चुके हैं, जिनमें से 97 गोदामों का निर्माण आगामी जुलाई माह के अंत तक पूरा करने का लक्ष्य है। राज्य की 3,800 से अधिक पैक्स प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केन्द्र एवं लगभग 5,300 पैक्स कॉमन सर्विस सेंटर के रूप में कार्य कर रही हैं। सहकारी क्षेत्र में प्रदेश की पहली बाइक ऑन रेंट सेवा 'को-ऑप राइड' का विगत दिनों उदयपुर से शुभारम्भ हुआ है।

राज्य सरकार सहकारी क्षेत्र में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किसानों के मान-सम्मान और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने पर विशेष रूप से फोकस कर रही है। मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि की राशि को 2,000 रुपये से बढ़ाकर 3,000 रुपये कर दिया गया है। पीएम किसान सम्मान निधि योजना के राज्य के पात्र किसानों को अब 9,000 रुपये सालाना मिल रहे हैं। राज्य सरकार इसे चरणबद्ध रूप से 12 हजार रुपये करने के लिए प्रतिबद्ध है। राजस्थान सहकारी गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के अंतर्गत गोपालक परिवारों को गाय/भैंस के लिए शैड, खेली निर्माण और चारा/बांटा सहित उपकरण खरीदने के लिए 1 लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है। वर्ष 2025-26 के दौरान 35 लाख से अधिक किसानों को 25 हजार करोड़ रुपये के ब्याज मुक्त अल्पकालीन फसली ऋण वितरित किए जाने का प्रावधान राज्य बजट में किया गया है। इसके ब्याज अनुदान पर 768 करोड़ रुपये व्यय होंगे। इसी प्रकार, सहकारी भूमि विकास बैंकों के अवधिपार ऋणों हेतु 200 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान कर मुख्यमंत्री अवधिपार ब्याज राहत योजना लागू की गई है। इसमें ऋणी सदस्यों को केवल मूल धन की राशि जमा करवाने पर राज्य सरकार द्वारा अवधिपार ब्याज में 100 प्रतिशत की राहत दी जा रही है। राज्य सरकार सहकारी संस्थाओं में पारदर्शिता के लिए भी प्रतिबद्ध है। सहकारी संस्थाओं में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए नवीन को-ऑपरेटिव कोड लागू करने की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है।

सहकारिता हमारी सामाजिक परम्परा के साथ ही हमारी आवश्यकता भी है। बदलते दौर में यह और अधिक प्रासंगिक होती जा रही है। यह आर्थिक सशक्तीकरण के साथ ही ग्रामीण विकास में योगदान देती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है। सहकारी संस्थाएं स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न करती हैं, जिससे पलायन रूकता है। सहकारिता के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता एवं नेतृत्व के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। इतना ही नहीं, सहकारिता जाति, वर्ग, धर्म और लिंग आदि से ऊपर उठकर सबको साथ लेकर चलती है, जिससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलता है। आशा है कि राज्य व केन्द्र सरकार और अन्य स्टेकहोल्डर्स मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष में राज्य में सहकारिता आन्दोलन को नई दिशा देकर विकसित राजस्थान के संकल्प का साकार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगें।

दिनेश शर्मा, सहायक जनसम्पर्क अधिकारी, सहकारिता विभाग, राजस्थान।

अंत्योदय संबल शिविर में पांच भाइयों का 25 वर्ष से लम्बित भूमि बंटवारा हुआ तो कटुता दूर हुई

हरिओम सिंह गुर्जर

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के द्वारा प्रदेशभर में शुरू किये गये पं. दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़ा ग्रामीणों की समस्याओं का मौके पर निराकरण के साथ परिवारों में चली आ रही आपसी कटुता को दूर कर भाईचारे का संदेश भी दे रहा है। भरतपुर जिले के बांसीकलां में आयोजित शिविर में ओमप्रकाश और उसके 4 भाइयों का विरासत नामांतरण व आपसी बंटवारे की 25 वर्ष से चली आ रही समस्या का एक दिन में आपसी सहमति से निराकरण हुआ। इससे सभी भाइयों में आपसी मनमुटाव दूर होने के साथ भूमि के कृषि व राजस्व संबंधी अनुदान योजनाओं का लाभ मिलने का रास्ता भी आसान हुआ।

बांसीकलां निवासी पन्नालाल जाट की मृत्यु के बार उनके पांचों बेटों में विरासत भूमि का बंटवारा हो गया लेकिन आपसी सहमति नहीं बन पाने के कारण खाता विभाजन तथा नामांतरण संबंधी समस्या चली आ रही थी। वे इसके लिए 25 साल से एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय के चक्कर काट रहे थे लेकिन कोई न कोई नई समस्या आ जाती थी, कभी कोई भाई और कभी कोई भाई उपलब्ध नहीं हो पाता था और काम नहीं हो पाया। किसान ओमप्रकाश और उसके भाई रामगोपाल, भीमसिंह, सोहनलाल व संजय सिंह ने शिविर में उपस्थित होकर माता के नाम चली आ रही विरासत नामांतरण एवं आपसी सहमति से खाता विभाजन संबंधी समस्या से शिविर प्रभारी को अवगत कराया। शिविर प्रभारी ने राजस्व विभाग की टीम को निर्देश देकर प्रकरण को गंभीरता से लेते हुये समस्या का शिविर में ही समाधान करने के निर्देश दिए। ग्रामीणों एवं अधिकारियों की समझाइश से पांचों भाइयों में आपसी सहमति से विरासत भूमि का नामांतरण संभव हो सका। राजस्व टीम द्वारा पांचों भाईयों की माता स्व. श्रीमती सोमोती के नाम चली आ रही भूमि का विरासत नामांतरण भी खोला तथा बहनों के नाम चला आ रहा हिस्से की हक त्याग कार्यवाही भी पूरी करवाई गई।

किसान ओमप्रकाश ने बताया कि उनकी 65 बीघा भूमि पर 25 वर्षो से खाता विभाजन, नामांतरण संबंधी समस्या चली आ रही थी, जिसके समाधान के लिये अनेक बार प्रयास किये गये। कार्यालयों में आवेदन देने के साथ परिवार के मध्य बैठकर

समझाइश भी की गई लेकिन आपसी सहमति नहीं बनने के कारण समस्या दूर नहीं हो सकी। शिविर में जैसे ही राजस्व विभाग की टीम द्वारा समस्याओं का निराकरण कर खाता विभाजन के पत्र सौंपे तो पांचों भाईयों की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने घर बैठे समस्या निराकरण होने पर शिविर आयोजन के लिये मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा का आभार व्यक्त करते हुये अधिकारियों द्वारा किये गये प्रयास के लिये जिला प्रशासन को धन्यवाद दिया।

राधा के लिये खुशियों की सौगात लेकर आया अन्त्योदय संबल अभियान- भजनलाल स्व. दीनदयाल जी के अन्त्योदय को साकार करने के लिए ही मुख्यमंत्री बने हैं। भरतपुर जिले के सेवर ब्लॉक की ग्राम पंचायत बांसी खुर्द में आयोजित शिविर राधा पुत्री हरद्वारी के लिये खुशियों की सौगात लेकर आया। फार्मर आईडी नहीं बनवा पाने के कारण उसे सरकार की योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा था। फार्मर आईडी मोबाईल लिंकेज के कारण नहीं बन पाई थी। यह समस्या राधा ने जिला कलेक्टर कमर चौधरी को बताई तो उनके निर्देश पर राधा के पुत्र से मोबाईल पर बात कर रजिस्टर्ड मोबाईल नम्बर से ओटीपी प्राप्त किया तथा शिविर में ही फार्मर आईडी पंजीकरण की आईडी का पंजीकरण किया गया।

राधा ने बताया कि फार्मर आईडी बन जाने से उसे प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का पैसा मिलेगा, साथ ही केसीसी लोन, उन्नत बीज, फार्म पौंड, स्प्रिंकलर सहित कृषि एवं राजस्व विभाग की विभिन्न योजनाओं का लाभ मिलेगा। राधा ने इस पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि वह कम पढ़ी लिखी है लेकिन उसने सुना है कि जिन दीनदयालजी के नाम पर ये कैंप लगा, वे हम जैसे आम लोगों को ही खास लोग बनाकर इस देश का विकास चाहते थे। मुख्यमंत्रीजी ने उन्हें सच्ची श्रृद्धांजलि दी है।

हरिओम सिंह गुर्जर, संयुक्त निदेशक, जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय भरतपुर।

चार महीनों से जारी पानी की किल्लत से लोग परेशान

■ **ग्रामीणों ने प्रदर्शन कर 30 साल पुरानी जर्जर पत्थर की पाइपलाइन को बदलने की मांग की, जो बार-बार टूटने से आपूर्ति बाधित करती है**

सूरतगढ़, (निसं)। उपखंड की ग्राम पंचायत भैरोंपुरा सीलवानी और विशेष रूप से अमरपुरा जाटान में पिछले चार महीनों से जारी पानी की किल्लत ने ग्रामवासियों का जीना मुहाल कर दिया है। इस समस्या के समाधान के लिए कांग्रेस के किसान नेता अमर सिंह गोदारा, ओमप्रकाश गेदर, कांग्रेस नेता श्रवण सिंगाठिया के नेतृत्व में ग्रामीणों ने जलदाय विभाग के सहायक अभियन्ता कार्यालय पर गुरूवार को प्रदर्शन कर 30 साल पुरानी जर्जर पत्थर की पाइपलाइन को बदलने की मांग की, जो बार-बार टूटने से आपूर्ति बाधित करती है। ठेकेदारों द्वारा मरम्मत में देरी की शिकायत भी दर्ज की गई।

जलदाय विभाग के एईएन को ज्ञापन सौंपते हुए ग्रामवासियों ने कहा कि पुरानी पाइपलाइन को तुरंत नई लाइन से बदला जाए। अमर सिंह गोदारा ने सुझाव दिया कि 5 लाख लीटर की गोल डिग्गी, जिसे ग्रामवासियों ने मिलकर कुछ दिन पहले साफ करवाया है, उसमे पानी भंडारण की व्यवस्था की जाए। इससे 4-5 दिनों तक गांव की जरूरतें पूरी हो सकती हैं। उन्होंने सोलर ट्यूबवेल के लिए बिजली आपूर्ति और नहर से पाइपलाइन के जरिए मीठे पानी की व्यवस्था का प्रस्ताव भी रखा। पुराने ट्यूबवेल का पानी फ्लोराइड युक्त और कड़वा होने से ग्रामवासियों में घुटनों की बीमारियां बढ़ रही हैं।

कई घरों में आज तक जलदाय विभाग की पाइपलाइन नहीं पहुंची, जिसके लिए नई लाइन बिछाने की मांग की गई। जलदाय विभाग के अधिकारी ने गांव में कैंप आयोजित करने का आश्वासन दिया, जहां ग्रामवासी अपनी समस्याएं रख सकेंगे। अधिकारी ने सभी मुद्दों के जल्द समाधान का भरोसा दिलाया। ग्रामवासियों ने कैंप में एकजुट होकर अपनी मांगें रखने का फैसला किया है।

इस मौके पर गांव के जितेंद्र खालिया, मोमनराम गोदारा, मांगीलाल सैन, मूलाराम पंवार, पपूराम मेघवाल, मनीराम मेघवाल, मानसिंह गोदारा, दिलीप नायक और बनवारी नायक सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद रहे।

सूरतगढ़ रेलवे स्टेशन पर चल रहे पुनर्विकास कार्यों में गंभीर खामियां मिली

■ **बीकानेर मंडल के 'ए' श्रेणी के सूरतगढ़ रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुनर्विकास कार्य चल रहा है**

सूरतगढ़, (निसं)। बीकानेर मंडल के 'ए' श्रेणी के सूरतगढ़ रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत चल रहे पुनर्विकास कार्यों में गंभीर खामियां सामने आई हैं। बीकानेर डिवीजन के एडीआरएम रुपेश कुमार के निरीक्षण के दौरान रेल विकास संघर्ष समिति ने इन समस्याओं को उनसे मुलाकत करते हुए कार्रवाई की मांग की।

समिति ने बताया कि पहली बरसात में ही स्टेशन की दीवारों में रिसाव, सर्कुलेटिंग एरिया की सड़क का उखड़ना, और चारों प्लेटफार्म पर बने शेड से पानी टपकने जैसी खामियां सामने आईं, जिससे यात्रियों में भारी आक्रोश है। संघर्ष समिति ने इंजीनियरिंग विभाग और स्थानीय अधिकारियों की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया। समिति के संयोजक दर्शन भगत प्रणामी, संजय वेद, सुभाष सोनी, भंवर बारिया, कृष्ण स्वामी, उमेश मुद्गल, खूबचंद नायक, लीलाधर फौजी, धर्मवीर सैनी, श्याम सोमानी, सुरेंद्र कोठारी, गुरु भूपेंद्र, अमरचंद नायक और ललित किशोर शर्मा ने अधिकारियों को चेतावनी दी कि यदि यात्री सुविधाएं जल्द उपलब्ध नहीं करवाई गई तो आम जनता के साथ मिलकर विरोध प्रदर्शन तेज किया जाएगा। समिति ने दोषी अधिकारियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की और शनिवार से ही धरना-प्रदर्शन की घोषणा की।

निरीक्षण के दौरान गति शक्ति यूनिट के चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर प्रमोद कुमार, सीनियर डीएसटी ललित किशोर, स्टेशन अधीक्षक हरि शंकर त्यागी और ट्रैफिक इंस्पेक्टर सलविंदर सिंह मौजूद थे। रेलवे का दावा है कि स्टेशन पर 83 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है, जिसमें सर्कुलेटिंग एरिया का विस्तार, नई बाउंड्री वॉल और पार्किंग सुविधाएं शामिल हैं। हालांकि, समिति का कहना है कि आधुनिक प्रतीक्षालय, स्वच्छ शौचालय, और दिव्यांगजनों के लिए रैंप जैसी यात्री सुविधाएं नदारद है। समिति ने बताया कि आम जनता में स्टेशन की बदहाल स्थिति को लेकर गुस्सा है। कहा गया कि यात्रियों की सुविधा के लिए त्वरित कदम उठाने की जरूरत है। समिति ने स्पष्ट किया कि जब तक दोषियों पर कार्रवाई नहीं होती, उनका आंदोलन जारी रहेगा।

संक्षिप्त

प्राणघातक हमले में युवक घायल

उदयपुर, (कासं)। पेट्रोल पंप से लौटते समय युवक पर कार में सवार बदमाशों ने प्राणघातक हमला कर दिया। घायल युवक को उपचार के लिए चिकित्सालय में भर्ती करवाया। जानकारी के अनुसार पीडित लेखराल नकवाल निवासी कच्ची बस्ती भोपामगरी सेक्टर 3 ने हिरणमगरी पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें उसने बताया कि 2 जुलाई रात में परिचित ने फोन कर बताया कि मेरा पुत्र हरीश नकवाल हिरणमगरी सेक्टर 3 स्थित पेट्रोलपंप से गाडी में पेट्रोल लेकर निकला। इसी दौरान पीछे से आए वाहन ने उसे टक्कर मार नीचेगिरा दिया। इस दौरान दूसरे वाहन में आए रितिक चौहान, प्रवीण सालवी, विक्की, रिषभ गुर्जर सहित अन्य बदमाशों ने पुत्र पर चाकू से हमला कर दिया। चिल्लाने की आवाज सुन बीच बचाव में लोगों के आने पर हमलावर फरार हो गए। घर से मौके पर पहुंच पुत्र को उपचार के लिए चिकित्सालय में भर्ती करवाया।

बदमाशों के खिलाफ प्रकरण दर्ज

उदयपुर, (कासं)। कन्हैया हत्याकांड पर रिलीज होने वाली फिल्म प्रसारण से रोकने का संदेश वायरल करने वाले बदमाशों के खिलाफ सूरजपोल थाना पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। शहर के सूरजपोल थानाधिकारी रतनसिंह ने सैय्यद हाफिज पुत्र सैय्यद ईरशाद निवासी गोसिया कॉलोनी किशनपोल, शराफत खान पुत्र सैयद खान शेख निवासी गोसिया कॉलोनी के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें बताया कि इंस्टाग्राम आईडी पर डीजे बबलू234यूजर नेम द्वारा इंस्टाग्राम उदयपुर फाईल्स कन्हैयालाल टेलर मर्डर नाम की फिल्म को बायकट करने के संबंध में स्टोरी शेयर की गई। जिस पर लिखा कि इसे नबी पाक की शान में गुस्ताखी करने जा रही है। ये फिल्म ईस सिनेमा पर लगाने से रोकों सब मुस्लिम एक साथ हो जाओ मैसेज लिखा हुआ था। उक्त संदेश से शहर में अशांति होने की संभावना के चलते प्रकरण दर्ज किया।

शास्त्रीय संगीत व मल्हार 26 से

उदयपुर, (कासं)। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर द्वारा 26 एवं 27 जुलाई को दर्पण सभागार, शिल्पग्राम में मल्हार् उत्सव का आयोजन किया जाएगा। निदेशक फुरकान खान ने बताया कि मानसून की रिमझिम के साथ स्वर लहरियों का गूंजन और घुंघरुओं की झंकार से माहौल को उत्सवमय करता मल्हार उत्सव विगत वर्षो से काफी लोकप्रिय हो चुका है। इस वर्ष भी देश के ख्यात नाम कलाकार शास्त्रीय संगीत और नृत्यों की उम्दा प्रस्तुतियों से मल्हार को अविस्मरणीय बनायेंगे। उन्होंने बताया कि 26 जुलाई की शाम सात बजे मुजफ्फर रहमान द्वारा ताल वाद्य कचहरी की प्रस्तुति के साथ कार्यक्रम की शुरुआत होगी इसके बाद माया कुलश्रेष्ठ के दल द्वारा कथक नृत्य प्रस्तुत होगा। पं. सुभाष घोष द्वारा स्वर रागिनी वाद्य यंत्र की प्रस्तुति होगी। स्वर रागिनी की प्रस्तुति के बाद वाणी माधव के दल द्वारा ओडिसी नृत्य की प्रस्तुति दी जाएगी।

कृषक संवाद व बैठक 15 को

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष सी. आर. चौधरी 15 जुलाई को उदयपुर आएंगे। संयुक्त निदेशक कृषि सुधीर वर्मा ने बताया कि किसान आयोग अध्यक्ष चौधरी 15 जुलाई को सुबह 10 बजे प्रतापनगर स्थित विभाग के आत्मा सभागार में समीक्षा बैठक लेंगे। इसके पश्चात् दोपहर 12 बजे नगर निगम के सुखाडिया रंगमंच सभागार में कृषक संवाद कार्यक्रम होगा।

जनहित के मुद्दों पर हुई व्यापक चर्चा, विकास कार्यों में गति लाने के निर्देश

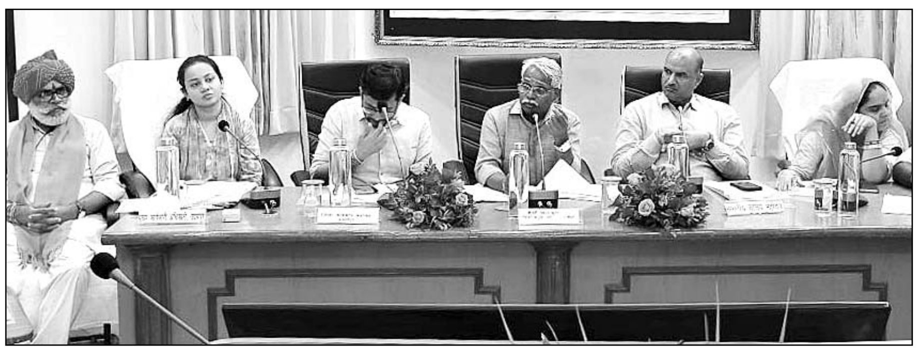

जिला परिषद की साधारण सभा की बैठक जिला प्रमुख ममता कुंवर पंवार की अध्यक्षता में हुई।

■ जिला कलक्टर ने रोडवेज बस चालकों को निर्धारित बस स्टेशन पर बस रोकने के लिए पाबंद करने के निर्देश दिए

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर जिला परिषद की साधारण सभा बैठक शुक्रवार को जिला प्रमुख ममता कुंवर पंवार की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में टीएडी मंत्री बाबूलाल खराड़ी, चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी, मावली विधायक पुष्करलाल डांगी, धरियावद विधायक थावरचंद मीणा, जिला कलक्टर नमित मेहता, उप जिला प्रमुख पुष्कर तेली सहित जिला परिषद के सदस्यगण और विभागीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बैठक का प्रारंभ चिकित्सा विभाग पर चर्चा के साथ हुआ। वल्लभनगर में सीएचसी निर्माण सामग्री गुणवत्तापूर्ण नहीं होने का मुद्दा उठाया गया। इस पर जिला प्रमुख ने प्रधान को साथ लेकर जांच करवाने के निर्देश दिए। भिंडर, वल्लभनगर, मावली सहित जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में रात्रि में चिकित्सकों के नहीं ठहरने का मुद्दा उठाया। इस पर सीईओ जिला परिषद ने सीएमएचओ को चिकित्सकों को रात्रि में रूकने के लिए पाबंद करवाने के निर्देश दिए।

विद्युत विभाग से संबंधित योजनाओं और कार्यों की समीक्षा के दौरान ऋषभदेव क्षेत्र में ठेकेदार द्वारा ट्रांसफर लगाने के बदले उपभोक्ताओं से 10-15 हजार रुपये वसूलने की शिकायत पर जांच के निर्देश दिए गए। जिला प्रमुख ने ग्रामीण क्षेत्रों में झुके हुए बिजली के खंभों का सर्वे करवाने के लिए अधीक्षण अभियंता को निर्देशित किया। विधायक फूलसिंह मीणा ने बिजली विभाग के अधिकारियों द्वारा फोन न उठाने पर कार्रवाई की मांग की। जीएसएस पर ठेकेदार के कर्मचारियों के अनुपस्थित रहने का मुद्दा भी उठाया गया, जिस पर कलक्टर ने ठेकेदार से टेंडर की शर्तों का पालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। पीडब्ल्यूडी, रसद, शिक्षा, खान, परिवहन, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज आदि विभागों से जुडे जनहित के मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। पंचायत समिति गिर्वा में राउप्रावि सुराणा, ग्राम पंचायत बछार को 18 हजार 292 वर्ग फीट, पंचायत समिति मावली के अंतर्गत राउप्रावि खरवड़ों का गुढ़ा, ग्राम पंचायत मांगथला को 48 हजार 500 वर्ग फीट भूमि का नि:शुल्क पट्टा जारी करने के प्रस्ताव का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया। कैबिनेट मंत्री बाबूलाल ने जल जीवन मिशन के कार्यों की धीमी गति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि विकास कार्यों में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिला कलक्टर नमित मेहता ने डीएमएफटी के तहत स्वीकृत कार्यों की गति बढ़ाने के निर्देश दिए। कृषि विभाग पर चर्चा के दौरान वल्लभनगर प्रधान ने बीज वितरण की जांच करवाने की मांग की।कलक्टर ने बीज वितरण की लिस्ट जनप्रतिनिधियों को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

रोडवेज बसों के बस स्टेशन पर ठहराव की मांग की, जिस पर जिला कलक्टर ने रोडवेज बस चालकों को निर्धारित बस स्टेशन पर बस रोकने के लिए पाबंद करने के निर्देश दिए। जिला प्रमुख ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे अगली बैठक में पूरी तैयारी के साथ आएं।

सार-समाचार

विद्यार्थियों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

उदयपुर, (कासं)। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक विभाग डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साइंस एंड इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी की निदेशक प्रोफेसर मंजू माण्डोत ने बताया की विभाग के बीसीए, एमसीए, एमएससी, पीजीडीसीए में अध्यनरत विद्यार्थियों हेतु एक दिवसीय शेक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसमे उन्हें द उदयपुर सेंट्रल को-आपरेटिव बैंक लिमिटेड ले जाया गया। भ्रमण का उद्देश्य विधार्थियों को बैंकिंग क्षेत्र में उपयोग होने वाली तकनिकी प्रणालियों और प्रक्रियाओं से अवगत कराना था। विधार्थियों ने बैंक के आईटी विभाग की कार्यप्रणाली को देखा और समझा। भ्रमण के दौरान जिज्ञाशु विधार्थियों ने अतिरिक्त रजिस्ट्रार गुंजन चौबे, बैंक की प्रबंध निदेशक मेहजबीन बानो, के. एल. शर्मा, आशुतोष भट्ट, मीना नेभनानी से विभिन्न प्रश्न पूछे और अपने संदेहों का समाधान किया। उक्त भ्रमण में विधार्थियों के साथ संकाय सदस्य डॉ. भरत सुखवाल और डॉ. दिलीप चौधरी शामिल हुए। यह भ्रमण विधार्थियों के लिए एक अदितीय अनुभव रहा, जिससे उन्हें वास्तविक दुनिया में सुचना प्रोद्योगिकी तकनिकी के अनुप्रयोग की समझ मिली। इससे उन्हें अपने भविष्य के कैरियर निर्माण के लिए तैयार होने में मदद मिलेगी।

पीएमसीएच ने कमजोर बच्चे को दी राहत

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर के हाथीपोल निवासी 12 वर्षीय मोहम्मद अली, जो जन्म से ही सुनने और बोलने में अक्षम था, अब सामान्य बच्चों की तरह सुन और बोल सकता है। यह संभव हो पाया 2017 में पेसिफिक हॉस्पिटल, भीलो का बेदला स्थित ईएनटी विभाग द्वारा किए गए निशुल्क कॉकलियर इम्पलांट की बदौलत। कॉकलियर इम्पलांट के बाद मोहम्मद अली की ज़िंदगी बदल गई थी। लेकिन मई 2025 में एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना में उसके कान के बाहर लगे डिवाइस का प्रोसेसर गिरकर खराब हो गया, और परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे उसका नया प्रोसेसर खरीद सकें। ऐसे में पीएमसीएच के चेयरमेन राहुल अग्रवाल ने मानवीय संवेदनशीलता दिखाते हुए प्रोसेसर को निशुल्क बदलवाने की व्यवस्था की, जिससे बच्चा दोबारा सुनने और बोलने में सक्षम हो सका। इस प्रयास से न केवल मोहम्मद अली की मुस्कान लौट आई, बल्कि परिवार को भी बडी राहत मिली। इस प्रक्रिया में ईएनटी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ.ऋचा गुप्ता एवं डॉ.एस.एस. कौशिक का भी विशेष योगदान रहा। दोनों चिकित्सकों ने तकनीकी विशेषज्ञता से यह सुनिश्चित किया कि प्रोसेसर सही ढंग से काम करे और बच्चा पुन: सामान्य जीवन जी सके। इस दौरान पीएमसीएच के चेयरमेन राहुल अग्रवाल ने कहा कि कोई भी बच्चा केवल बहरापन के कारण मूक-बधिर न रहे। हम हर संभव सहायता देने को तैयार हैं। कॉकलियर इम्पलांट ऐसे बच्चों के लिए आशा की किरण है, जिनकी ज़िंदगी केवल एक उपकरण से सामान्य बन सकती है। गौरतलब है कि पेसिफिक हॉस्पिटल, उदयपुर स्थित ईएनटी विभाग ने अब तक 75 से अधिक कॉकलियर इम्पलांट करके बच्चों को सुनने और बोलने की शक्ति प्रदान की है।

पंच गौरव कार्ययोजना को लेकर बैठक

उदयपुर, (कासं) पंच गौरव योजना के तहत तैयार की जा रही विस्तृत कार्ययोजना को लेकर महत्वपूर्ण बैठक शुक्रवार शाम को जिला कलक्टर नमित मेहता की अध्यक्षता में कलक्ट्रेट सभागार में हुई। प्रारंभ में संयुक्त निदेशक सांख्यिकी एवं पंच गौरव नोडल अधिकारी पुनीत शर्मा ने सभी का स्वागत करते हुए विभागों की ओर से प्रस्तुत कार्ययोजना की जानकारी दी। इसमें एक जिला एक गंतव्य के तहत फतहसागर व पिछोला झील, एक उत्पाद के तहत मार्बल व ग्रेनाइट उत्पाद, एक खेल के तहत तैराकी, एक प्रजाति के तहत महुआ तथा एक उपज के तहत सीताफल को लेकर विभाग स्तर पर तैयार कार्ययोजना की जानकारी दी। जिला कलक्टर मेहता ने बिन्दुवार चर्चा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने फतहसागर एवं पिछोला झीलों को ओर अधिक सुंदर बनाने, पर्यटकों के लिए सुविधाओं के विस्तार आदि को लेकर निर्देशित किया। एक जिला एक उत्पाद के तहत मार्बल व ग्रेनाइट के आर्टिजन प्रशिक्षण आयोजित कराने, पंच गौरव पार्क एवं पंच गौरव सर्किल विकसित किए जाने, सीताफल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रोत्साहन, प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था करने, प्रोसेसिंग युनिट स्थापित किए जाने सहित अन्य प्रस्तावों पर चर्चा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में प्रशिक्षु आईएएस सृष्टि डबास, युडीए अधीक्षण अभियंता अनिक माथुर, नगर निगम के अधीक्षण अभियंता मुकेश पुजारी, उप वन संरक्षक मुकेश सैनी, उपनिदेशक पर्यटन शिखा सक्सेना, उपनिदेशक जनसंपर्क गौरीकांत शर्मा, जिला उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक शैलेंद्र शर्मा, जिला खेल अधिकारी डॉ महेश पालीवाल, राजीविका प्रबंधक ख्यालीलाल खटीक आदि उपस्थित रहे।

अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्यों का बहिष्कार कर किया प्रदर्शन

उदयपुर में अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्यों का बहिष्कार कर जिला कलेक्टेट्र पर प्रदर्शन किया।

उदयपुर, (कासं)। अधिवक्ता समूह पर पिछले कुछ दिनों में लगातार हमलो के विरोध शुक्रवार को अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्यो का बहिष्कार करते हुए जिला कलेक्ट्रेट परिसर में जोरदार हंगामा किया और पुलिस महकमें के खिलाफ हल्ला बोला।

अधिवक्ता सर्वप्रथम कोर्ट परिसर में इकठ्ठा हुए उसके बाद अधिवक्ता रैली के रूप में जिला कलेक्ट्रेट परिसर के बाहर पहुंचे लेकिन यहां पर अधिवक्ता बाहर प्रदर्शन करने की बजाय अंदर घुस गए और जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय में जाने की कोशिश की। इस पर पुलिस ने उन्हें रोकना चाहा तो अधिवक्ताओं ओर पुलिस के बीच धक्का मुक्की हो गई। इसके बावजूद अधिवक्ताओं ने जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय में घुसने का प्रयास किया लेकिन जब उन्हें नहीं जाने दिया तो अधिवक्ताओं ने पुलिस के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।उदयपुर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष चंद्रभान सिंह शक्तावत ने बताया कि पिछले एक माह में वकीलों के साथ 3 से 4 घटनाएं हो चुकी है जिसमें महिला अधिवक्ता के साथ मारपीट व दुष्कर्म का मामला भी शामिल है। इसके अलावा बार एसोसिएशन के पूर्व महासचिव रामलाल जाट पर अभियुक्तों ने जानलेवा हमला कर दिया जिसकी थाने में रिपोर्ट दर्ज है। इसके बावजूद अभी तक पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की है।

प्रमुख शासन सचिव ने किया स्वास्थ्य केन्द्रों का निरीक्षण

चिकित्सा संस्थानों का निरीक्षण करती चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़।

■ स्टेट रिव्यू मिशन के तहत टीमों ने किया दौरा

उदयपुर, (कासं)। स्टेट रिव्यू मिशन के तहत चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ 10 टीमों के साथ उदयपुर पहुंची। श्रीमती राठौड़ ने शुक्रवार को उदयपुर जिले में स्वास्थ्य संस्थानों का निरीक्षण किया। इस दौरान राज्य स्तर से आई टीमों ने भी अलग-अलग संस्थानों पर पहुंच कर चेकलिस्ट के अनुसार सघन निरीक्षण किया। प्रमुख शासन सचिव राठौड़ ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नाई का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान संयुक्त निदेशक उदयपुर संभाग डॉ प्रकाश चंद्र शर्मा, उपनिदेशक डॉ पंकज गौड़, सीएमएचओ डॉ अशोक आदित्य,उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ विक्रम सिंह, आरसीएचओ डॉ राकेश गुप्ता, डीपीएम सदाकत अहमद उपस्थित रहे। सीएचसी नाई के चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ मीठा लाल मीणा ने सभी का स्वागत करते हुए निरीक्षण करवाया। प्रमुख शासन सचिव ने ओपीडी, डीडीसी, जनरल वार्ड, प्रसूता महिला वार्ड एवं ओपरेशन थियेटर का निरीक्षण किया और लेबर रूम एवं पूरे अस्पताल की साफ-सफाई की सराहना की। उपस्थित मरीजों से वार्तालाप कर सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं की जानकारी ली। अस्पताल में दी जा रही निशुल्क दवा योजना और निशुल्क जांच योजना की जानकारी ली।

सीएमएचओ डॉ अशोक आदित्य ने बताया कि प्रमुख शासन सचिव महोदया वहां से झाडोल के आयुष्मान आरोग्य मंदिर उप स्वास्थ्य केन्द्र मगवास पहुंची सीएचओ और एएनएम से उपलब्ध योजनाओं के बारे में जानकारी ली। साथ ही सभी योजनाओं का लाभ आमजन तक पहुंचाने के निर्देश दिए। श्रीमती राठौड़ ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फलासिया के निरीक्षण के दौरान व्यवस्थाओं पर संतुष्टि जताई। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कोटडा के निरीक्षण में साफ सफाई और अव्यवस्था पर नाराजगी जताते हुए सुधार करने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर सीएमएचओ डॉ आदित्य ने बताया कि प्रमुख शासन सचिव सहित राज्य स्तर से आयी अन्य टीमों ने अलग अलग क्षेत्रों में जाकर निरीक्षण किया। शुक्रवार को जिला परिषद सभागार में इससे संबंधित समीक्षा बैठक होगी।

लोक मंडली कार्यशाला में 100 से अधिक लोक कलाकारों ने लिया भाग

लोक मंडली कार्यशाला में लोक कलाकारों ने भाग लिया।

उदयपुर, । तीन दिवसीय राज्य स्तरीय लोक मंडली कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, नई दिल्ली, राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी, जयपुर तथा मोहनलाल सुखाडिया विवि के रेड रिबन क्लब उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।

इस लोक मंडली कार्यशाला में प्रदेशभर से लोक कलाओं में निपुण 100 से अधिक लोक कलाकारों ने भाग लिया। इसमें ख्याल, कठपुतली, नुक्कड नाटक, जत्था कला, जादू, लोक नृत्य आदि विधाओं के कलाकार सम्मिलित हुए। आयोजन का मुख्य उद्देश्य एचआईवी/एड्स एवं एसटीआई (यौन संचारित संक्रमण) के प्रति लोक कला के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाना था, ताकि आमजन को इन बीमारियों से संबंधित जानकारी एवं उनके निदानात्मक उपायों से अवगत कराया जा सके। अध्यक्षता विवि की कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने की। उन्होंने अपने संबोधन में राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन एवं राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजनों से ग्रामीण एवं दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में एचआईवी/एड्स जैसी गंभीर बीमारियों के प्रति जागरूकता बढेगी।

प्रो. मिश्रा ने यह भी कहा कि क्षेत्रीय स्तर पर अधिकांश लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं, जहां लोक कला एक प्रभावी माध्यम बन सकती है। लोक कलाओं के माध्यम से दी गई जानकारी का प्रभाव गहरा होता है। राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी, जयपुर द्वारा इस अभियान को लोक कला के माध्यम से संचालित करना एक सराहनीय कदम है। रेड रिबन क्लब, मोहनलाल सुखाडिया विवि के समन्वयक डॉ. पी. एस. राजपूत ने बताया कि यह आयोजन एचआईवी/एड्स एवं एसटीआई के प्रति जागरूकता फैलाने तथा लोककलाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए कलाकारों ने भाग लिया।

'प्रजातंत्र का मखौल उठाया जा रहा है'

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान प्रदेश में प्रजातंत्र का मखौल उडाया जा रहा है। जब भाजपा की सरकार चाहती है तब चुनाव होगें न तो सविधान को मानने को तैयार है और न ही संविधान के अनुसार प्रदेश में कोई कार्य हो रहा है केवल और केवल प्रदेश की भाजपा सरकार तानाशाही रवैये पर कार्य कर रही है इससे प्रदेश की जनता बहुत दुखी है।

यह बात उदयपुर और डूंगरपुर में कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन में भाग लेने के लिए शुक्रवार को उदयपुर पहुंचे प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने महाराणा प्रताप एयरपोर्ट पर मीडिया से संक्षिप्त मुलाकात में कही।उनके साथ विधानसभा नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली भी मौजूद थे। महाराणा प्रताप एयरपोर्ट पर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी ने उनका स्वागत किया। इसके बाद उन्होंने मीडिया से बात करते हुए प्रदेश की भजनलाल सरकार पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार पूरी तरह से फेल हो गई है। प्रदेश में सरकार को डेढ साल से अधिक का समय हो गया है लेकिन एक भी वादा अभी तक पूरा नहीं किया है। भाजपा झूठ बोलकर सत्ता में आई है और उन्होंने बजरी चोरी,एसआई भर्ती घोटाला सहित अन्य सभी मुद्दों पर सरकार पूरी तरह से फेल रही है। उन्होंने कहा कि एसआई भर्ती को चुनाव से पहले रद्द करने का वादा किया जो कि अभी तक पूरा नहीं हुआ है। डोटासरा ने कहा कि प्रदेश में पंचायत और निकाय के चुनाव एक साल पहले ही हो जाने चाहिए थे लेकिन वन स्टेट वन इलेक्शन के नाम पर इतना समय बीत जाने के बाद भी अभी तक चुनाव का नाम नहीं लिया जा रहा है। चुनाव कब होगें किसी को पता नहीं है सरकार तानाशाही रवैया अपनाए हुए है। सरकार ने प्रशासक लगाकर संविधान का उल्लघंन किया है। डोटासरा ने भाजपा से पूछा कि क्या वे देश के चुनाव भी इसी तरह करवाना चाहते है। वन नेशन वन इलेक्शन की बात कर रहे है लेकिन लगता है कि राष्ट्रपति शासन लगाकर किसी स्टेट के चुनाव के साथ देश के चुनाव करवाकर भाजपा इतिश्री करना चाहती है।

मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर शहर के ऋषभदेव थाना पुलिस ने महिला द्वारा आत्महत्या करने पर उसके पति व ससुराल जनों के खिलाफ आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करने का प्रकरण दर्ज किया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार ऋषभदेव थाना क्षेत्र पीपली बी निवासी मीरा पत्नी निलेश कुमार ने अपने मकान में फांसी लगा ली थी।

आम-सूचना

स्टेट लेवल एन्वायरमेन्ट इम्पेक्ट एसेसमेन्ट ऑथोरिटी जयपुर (राज.)के पत्र RJ/24/SEAC2(6)/MIN/R.EC/0392/Cat.B2/2024-25 Jaipur दिनांक 22/01/2025 द्वारा श्री देवी लाल कुमावत, एम.एल.नम्बर 94/1988, एरिया 1.00 हेक्टर, वास्ते खनिजमार्बल, निकटग्रामसापोल ,तहसील एवं जिला राजसमंद के पक्ष में पर्यावरण क्लीरियेन्स (राज.) (SEIAA) राजस्थान जयपुर व सम्बन्धित विभागों में उपलब्ध है तथा इसे राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मण्डल की वेबसाईट www.rpcb.nic.in पर भी देखी जा सकती है।

'बूथ स्तर तक काम करना होगा'

■ उदयपुर संभाग स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर संभाग स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन शुक्रवार को सुखाड़िया रंगमंच टाऊन हाल नगर निगम प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

संभाग स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन में उदयपुर शहर,उदयपुर देहात, चित्तौड़गढ़,राजसमंद एवं बांसवाड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्षए ब्लॉक अध्यक्ष मंडल अध्यक्ष, प्रदेश पदाधिकारी, जिला पदाधिकारी एवं वरिष्ठ नेताओं ने भाग लिया। संभाग स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता एवं मीडिया चेयरपर्सन पवन खेड़ा ने कहा कि मोदी सरकार ने देश का सिर विश्व के सामने झुका दिया है। वैश्विक स्तर पर कांग्रेस ने हमेशा देश का सिर गर्व से ऊंचा किया था लेकिन मोदी सरकार इसमें विफल रही है। पिछले एक साल में हमारे नेता राहुल गांधी ने मोदी सरकार को कई बार यू टर्न करवा दिया है। जातीय जनगणना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

अखिल भारतीय कांग्रेस सचिव एवं राजस्थान सह प्रभारी ऋत्विक मकवाना ने कहा कि आज आप सभी का जोश देखकर लगता है कि राजस्थान में आने वाले विधानसभा चुनाव में उदयपुर संभाग में कांग्रेस बड़ी जीत हासिल करेगी। हम सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को हर बूथ तक जाना होगा और सभी से समन्वय कर कांग्रेस को मजबूत करना होगा। आने वाले समय में उदयपुर संभाग के जमीनी स्तर तक के कार्यकर्ता को जिम्मेदारी देकर कांग्रेस को मेवाड़ में मजबूत किया जाएगा।

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जुली ने कहा कि आज मेवाड़ ने आप सभी का उत्साह देखकर यह निश्चित हो गया कि आने वाले विधानसभा चुनावों में कांग्रेस आ रही है। आज देश में क्या हो रहा है है ये आप सभी के सामने है। विश्व पटल पर मोदी सरकार ने देश को कमजोर करने का प्रयास किया है। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने कहा कि संगठन में हमको सबको काम करना होगा जो भी कार्यकर्ता संगठन में गंभीरता से काम नहीं करेगा उसको समय पर सोचना होगा। प्रदेश हो या जिला हम सभी को काम तो करना होगा। और अगर हम भी काम नहीं करेंगे तो पार्टी दूसरे को मौका देगी। इसीलिए हमें बूथ स्तर तक काम करना होगा। कांग्रेस कार्यकर्ता को वोटर लिस्ट को भी ठीक से देखना होगा। और समय समय पर हमें जनता के बीच में जाकर उनके सुख दुख में साथ रहना होगा। हमें राजस्थान की पर्ची सरकार की नाकामियों को उजागर करना होगा। जिससे कि आम जनता को कांग्रेस और भाजपा में अंतर दिखाई देगा। राजस्थान में सरकार नहीं सर्कस चल रहा है। पिछले डेढ़ साल से पोपा भाई का राज चल रहा है। मंत्रियों की मुख्यमंत्री नहीं सुन रहा है, भाजपा विधायक की मंत्री नहीं सुन रहे है। भाजपा कार्यकर्ताओं की उनके विधायक नहीं सुन रहे है।

अखिल भारतीय कांग्रेस महासचिव एवं राजस्थान प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने कहा कि जब तक हम हमारे ब्लॉक अध्यक्ष और मंडल अध्यक्ष को मजबूत नहीं करेंगे तक तक जमीनी स्तर तक कांग्रेस मजबूत नहीं हो पाएगी। संभाग स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन में पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री डॉ गिरिजा व्यास के निधन पर एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी।

सालों पुरानी समस्या का हाथों-हाथ हुआ समाधान

राजसमंद, (निसं)। जिले में आमेट पंचायत समिति की झौर ग्राम पंचायत में आयोजित रात्रि चौपाल में बडी संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया और वर्षों से लंबित समस्याएं अधिकारियों के समक्ष रखीं। जिला परिषद सीईओ बृजमोहन बैरवा, उपखंड अधिकारी गोविंद सिंह, विकास अधिकारी गुलाबसिंह गुर्जर, समाजसेवी माधव जाट सहित विभागीय अधिकारी व ग्रामीण मौजूद रहे। ग्रामीणों की समस्याएं सुनने के बाद कलक्टर अरुण कुमार हसीजा ने मौके पर ही संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए अधिकांश समस्याओं का त्वरित समाधान करवा दिया। कई ऐसी समस्याएं जो वर्षों से लंबित थीं, उनका भी निस्तारण एक ही दिन में हो सका। चौपाल में बिजली, पानी, सडक, राजस्व, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, खाद्य सुरक्षा सहित अनेक जनकल्याणकारी विषयों पर चर्चा हुई। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन द्वारा त्वरित कार्रवाई के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि रात्रि चौपाल के माध्यम से उन्हें अपनी समस्याओं को सीधे उच्च अधिकारियों तक पहुंचाने का अवसर मिला और समाधान भी तत्काल मिला।विकास अधिकारी ने बताया कि रात्रि चौपाल में हीरालाल पुत्र मांगीलाल जाट आवासीय पट्टे की दरख्वास्त लेकर पहुंचा, जिस पर अधिकारियों ने मौके पर ही समस्या का समाधान करते हुए रात्रि चौपाल समाप्त होने से पहले ही उसे पट्टा सौंप दिया।

BLOCK DEVELOPMENT OFFICE
PANCHAYAT SAMITI
DEVOGARH, DIST.RAJSMAND

S.No./E-TENDER/2025-26/305 DATE:13-06-2025

E-TENDER NOTICE-05/2025-26

E-Tender Notice are invited for Verious work Rate Contract Detail about Tender specification, cost, EMD, tender inviting and receiving Date Etc. Other Particulars of the bid may be visited on the State Public Procurement Portal Http://sppp.raj. gov.in Procurement Portal http://eprocure.gov.in of the State

UBN NO- ZRR2526WSRC00360 NIB CODE- ZRR2526A0195

Block Development Officer
Panchayat Samiti Devogarh

हथियार और मादक पदार्थों की तस्करी का कुख्यात सरगना गिरफ्तार

तस्कर पर आईजी, अजमेर रेंज ने 50 हजार रुपये का इनाम घोषित कर रखा था

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा पुलिस ने हथियारों और मादक पदार्थों की तस्करी के कुख्यात सरगना को गिरफ्तार किया है। इस पर आईजी, अजमेर रेंज ने 50 हजार रुपये का इनाम रखा था। इस ऑपरेशन को शाहपुरा, हमीरगढ़ थानों के साथ ही सायबर टीम ने अंजाम दिया।

जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि इनामी-वांछित आरोपित की धरपकड़ को लेकर अभियान चला रखा है। इसी के तहत 50 हजार रुपये के इनामी बजरंग पिता अम्बा लाला मीना निवासी टोपा थाना शाहपुरा की गिरफ्तारी के लिए एएसपी शाहपुरा राजेश आर्य के निकटतम सुपरविजन व डीएसपी शाहपुरा ओमप्रकाश विश्नोई के नेतृत्व में विशेष टीम का गठन किया गया। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि शाहपुरा थाने में आरोपी बजरंग व अन्य आरोपियों को हथियार देने का मामला दर्ज किया गया। आरोपी के खिलाफ पूर्व में चार प्रकरण एक्साईज एक्ट, दो प्रकरण एनडीपीएस एक्ट, एक प्रकरण डकैती का, तीन प्रकरण जानलेवा हमला मारपीट का एक प्रकरण जालसाजी धोखाधड़ी का दर्ज है जो जैर ट्रायल है। आरोपी की गिरफ्तारी पर महानिरीक्षक पुलिस अजमेर रेंज अजमेर ने 50 हजार रूपये इनाम की घोषणा की थी। गठित पुलिस टीम ने आरोपी के बारे में सूचना देने के लिए दोस्तों, रिश्तेदारों के यहां मुखबीर लगाये। आरोपित इतना शातिर है कि पुलिस के पहुंचने से पहले वह फरार हो जाता था।

पुलिस ने 50 हजार रुपये के इनामी आरोपी बजरंग को गिरफ्तार किया।

■ ऑपरेशन को शाहपुरा, हमीरगढ़ थानों के साथ ही सायबर टीम ने अंजाम दिया

तकनिकी विश्लेषण से मिले सुराग के बाद पुलिस ने उसके ठिकाने का पता लगाया और उसे दबोच लिया। सजा पुलिस ने आरोपित बजरंग का आपराधिक रेकार्ड का खुलासा करते हुये बताया कि इसके खिलाफ 2009 में फूलियाकलां थाने में जानलेवा हमले का, जबकि 2012 में एक्ससाइज एक्ट के दो मामले दर्ज हुये थे। इन दोनों में 20 दिसंबर 2012 को उसे सजा हो चुकी है। इसके अलावा मारपीट, जानलेवा हमले जैसे कई गंभीर आरोपों में अलग अलग थाने में दर्जन भर मामले दर्ज है।

किसान की डिग्गी में डूबने से मौत

अनूपगढ़, (निसं)। गांव एक पीजीएम में खेत में बनी 30 फीट गहरी पानी की डिग्गी में डूबने से बुजुर्ग की मौत हो गई।

■ मौके पर गोताखोरों को बुलाया गया

पानी निकालते समय 65 वर्षीय सुखविंदर सिंह का पैर फिसल गया, जिससे यह हादसा हो गया। सुबह करीब नौ बजे उनके बेटे गुरप्रीत सिंह को डिग्गी के पास चप्पल और बाइक दिखी। शक होने पर जब वह डिग्गी के पास गया तो अंदर सुखविंदर सिंह का साफा तैरता दिखा। गुरप्रीत ने तुरंत आसपास के ग्रामीणों को सूचना दी। मौके पर गोताखोरों को बुलाया गया। करीब 3 घंटे की मशक्कत के बाद डिग्गी से पानी कम कर सुखविंदर को बाहर निकाला गया, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। परिजनों ने पोस्टमॉर्टम और पुलिस कार्रवाई से इनकार कर दिया। प्रथमदृष्टया में लग रहा है कि सुखविंदर सिंह डिग्गी में से बाल्टी के जरिए पानी निकाल रहा होगा और उसी दौरान उसका पैर फिसल गया और यह दर्दनाक हादसा हो गया। मृतक के बेटे गुरप्रीत सिंह ने बताया कि वह और परिवार के अन्य सदस्य पोस्टमॉर्टम नहीं करवाना चाहते हैं और न ही कोई पुलिस कार्रवाई करवाना चाहते है।

कार्यालय अधीक्षण अभियंता, जन स्वा. अभि. विभाग, वृत बीकानेर

Email ID - sephedbkn@gmail.com, Contact No. 0151-2226454

क्रमांक-3186 दिनांक: 23-6-2025

बोली सूचना संख्या 03/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु मोहरबंद निविदा आमंत्रित की जाती है। इस कार्य का निविदा प्रपत्र वेबसाईट http:/eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 24.06.2025 को दोपहर 02.00 बजे से दिनांक 14.07.2025 को सांय 06.00 बजे तक डाउनलोड/अपलोड किया जा सकता है तथा दिनांक 15.07.2025 को दोपहर 01.00 बजे उपस्थिति निविदादाता अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधि के समक्ष ऑनलाईन http://eproc.rajasthan.gov.in पर खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र में शुल्क, धरोहर राशि ई-चालान के रूप में निविदा प्रपत्र में वर्णित पक्ष में देय हो, जमा करानी होगी। निविदा प्रपत्र विभागीय वेबसाईट "www.sppprajasthan.gov.in" एवं http:/eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है। कार्य की राशि 158.35 लाख है। शर्त सहित निविदा मान्य नहीं होगी। डाक द्वारा प्रस्तुत निविदा पर विचार नहीं किया जायेगा।

UBN No. PHE 2526W50B04011

जल सीमित है, इसकी बचत करें।

(खेमचंद सिंगारिया) अधीक्षण अभियंता जन स्वा. अभि विभाग, वृत बीकानेर

DIPR/C/8806/2025

Sanitation, Water and Community Health Project

कार्यालय निदेशक, स्वच्छ परियोजना, उदयपुर

पुलिस अन्वेषण भवन के आगे, बडी रोड, उदयपुर (राज.)

ई-मेल-directorswach@rajasthan.gov.in, swachhoudaipur@gmail.com

Ref.: 2540 **E-TENDER NOTICE :- 69/2025-26** Date: 26.06.2025

NIB-SWP2526A0197 UBN:-SWP2526G LRC00452

FOR SUPPLY OF NUTRITIONAL FOOD ITEMS (FOR MAKING SATTU) FOR TB PATIENTS AT FOR MAKING SATTU KENDRA PS JAISAMAND DISTRICT SALUMBER (RAJASTHAN)

Single Stage, Two-envelopes unconditional Bids are invited from Manufacturers/ Distributors/Bonafide dealer in the good for the SUPPLY OF NUTRITIONAL FOOD PRODUCTS (FOR MAKING SATTU) FOR TB PATIENTS AT FOR MAKING SATTU KENDRA PS JAISAMAND DISTRICT SALUMBER (RAJASTHAN) under Swach Project:

S. No	Details of Commodities	Estimated Total cost (in Lacs.)	Bid Security (EMD) (in Rs.)	Bid Fee (in Rs)	Processing Fee (in Rs)
1.	SUPPLY OF NUTRITIONAL FOOD ITEMS (FOR MAKING SATTU) FOR TB PATIENTS AT FOR MAKING SATTU KENDRA PS JAISAMAND DISTRICT SALUMBER (RAJASTHAN)	116.37	232740/-	1000.00	2000.00

The Tender/Bid will only be submitted through online tendering system of www.eproc.rajasthan.gov.in. The interested bidders will have to be enrolled/registered with portal of www.eproc.rajasthan.gov.in for participating in the bidding process.

DIPR/C/9097/2025 DIRECTOR SWACH

दस हजार का इनामी दलपतसिंह व दो साथी गिरफ्तार

चार देशी पिस्टल मय 19 कारतूस व कार जब्त

उदयपुर, (निसं)। हिरणमगरी थाना पुलिस ने दस हजार रूपये के इनामी बदमाश दलपतसिंह व उसके दो अन्य साथियों को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से चार पिस्टल, 19 कारतूस व एक कार जब्त की। तीनों बदमाश हिस्ट्रीशिटर प्रवीण वसीटा व शंभू झिडोली की हत्या के प्रयास में थे।

प्रकरण के अनुसार 3 जुलाई को डीएसटीटीम के हेडकांस्टेबल भंवर विश्नोई को सूचना मिली कि हिरणमगरी पुलिस थाने का वांछित अभियुक्त दस हजार के इनामी दलपतसिंह अपने दो साथी राजेन्द्र सिंह देवड़ा उर्फ वीरू व किशनलाल खटीक के पास अवैध हथियार हैं जो बेचने की फिराक में है तथा एक कार में सबसिटी सर्कल की तरफ घूम रहे हैं।

इस पर डीएसटी टीम प्रभारी श्यामसिंह रत्नू, हिरणमगरी थानाधिकारी भरत योगी मय टीम ने मौके पर पहुंच दलपतसिंह पुत्र रणजीतसिंह डुलावत निवासी खेतपाल का गुडा खमनौर राजसमंद हाल ग्रेटर कैलाश नगर बड़ी बड़गांव के कब्जे से अवैध 2 देशी पिस्टल 11 जिंदा कारतूस, राजेन्द्र सिंह उर्फ वीरू पुत्र मोतीसिंह देवड़ा निवासी लियों का गुड़ा बड़ी के कब्जे से अवैध एक देशी पिस्टल मय 4 कारतूस तथा किशन खटीक पुत्र लोगर खटीक निवासी थूर बड़गांव के कब्जे से अवैध पिस्टल एवं चार जिंदा कारतूस जब्त किये। दलपत सिंह के कब्जे से कार जब्त कर आरोपियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया।

इस मामले में 23 मार्च को पीड़ित चतरसिंह ने हिरणमगरी पुलिस थाने में रिपोर्ट दी। जिसमें उसने बताया कि सवेरे मेरी पत्नी फाटक बजाने की आवाज सुने बाहर आकर देखा तो घर के बाहर रोड़ पर एक मोटरसाइकिल पर दो जने सवार थे एक ने मास्क लगा रखा था एवं एक खुले मुंह था। दोनों ने चतरसिंह के घर पर है या नहीं पूछा तो पत्नी ने घर पर होना बताया। दोनों के कहने पर पत्नी ने मुझे बाहर बुलाया। इस दौरान बदमाश ने मुझ पर पिस्टल से फायर किया तो मैने फाटक के सहारे निचे झुककर बचाव किया। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर दलपतसिंह द्वारा भेजे गए अभियुक्त सुभाष लौहार पुत्र मदन लौहार निवासी डांगियों की पचोली हाल वैशाली नगर प्रतापनगर, रघुवीरसिंह देवड़ा उर्फ विशाल पुत्र शंभू सिंह निवासी मटुन को गिरफ्तार किया गया था जबकि दलपतसिंह फरार था। जिस पर जिला पुलिस अधीक्षक ने 10 हजार रूपये का इनाम घोषित कर रखा था।

मंदिर में चोरी

अजमेर, (कासं)। शहर के अजय नगर स्थित कांच वाले भोलेश्वर मंदिर में बीती रात चोरी की वारदात सामने आई है।

मंदिर के पुजारी चक्रेशचंद जोशी ने बताया कि जब वह रोजाना की तरह सुबह आरती के लिए पहुंचे तो भगवान की मूर्ति के ऊपर लगा चांदी का करीब चार सौ ग्राम वजनी छत्र गायब मिला। रामगंज थाना पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई है। पुजारी के अनुसार एक चोर मंदिर में दाखिल हुआ और भगवान की मूर्ति के ऊपर से चांदी का छत्र चुरा ले गया। मंदिर के बाहर एक और संदिग्ध व्यक्ति रैकी करता नजर आया। घटना के बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी।

मंदिर परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज में वारदात कैद हो गई है, जिसमें एक चोर मंदिर के भीतर घुसकर छत्र चोरी करता नजर आ रहा है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज जब्त कर चोर की शिनाख्त और तलाश शुरू कर दी है।

ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

बीकानेर, (निसं)। गंगाशहर थाना क्षेत्र में ट्रेन की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। हादसे के बाद उसका शव पीबीएम अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखा गया है। रेलवे लाइन के आसपास सुसाइड के मामलों में बढ़ोतरी हुई है।

जानकारी के अनुसार गंगाशहर पुलिस थाना क्षेत्र के घड़सीसर गांव के पास पुलिया के निकट से गुजर रही रेलवे लाइन पर युवक का शव मिला है। माना जा रहा है कि ट्रेन की चपेट में आने से उसकी मौत हो गयी। हादसा शुक्रवार सुबह का है। मौत कैसे हुई इसकी जांच की जा रही है। घटना की जानकारी मिलते ही गंगाशहर पुलिस मौके पर पहुंची। शव को रेल पटरी से हटाकर किनारे रखवाया गया। सामाजिक संगठनों से जुड़े लोगों ने मौके पर पहुंचकर खून से लथपथ शव को पीबीएम अस्पताल की मॉर्च्युरी तक पहुंचाया। शव आशीष नगर निवासी माणक चंद का है, जिसकी उम्र करीब पचास साल है। उसके परिजनों को सूचना दी गई है। उनके आने के बाद ही पोस्टमॉर्टम होगा। परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर गंगाशहर पुलिस जांच करेगी।

■ परिजनों के आने के बाद शव का पोस्टमॉर्टम होगा

शव को पीबीएम पहुंचाने में खादिमतगार खादिम सोसाइटी और असहाय सेवा संस्थान के सेवादार हाजी जाकिर, हाजी नसीम, सोयब, असहाय सेवा संस्थान के राजकुमार खडगावत, ताहिर हुसैन, मो जुनैद, अब्दुल सतार ने शव को मॉर्च्युरी में रखवाया।

जयपुर विकास प्राधिकरण

इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004

क्रमांक: प.6()जविप्रा/सा.स्टोर/स्केनिंग कार्य/2025/डी-251 दिनांक : 03.07.2025

निविदा सूचना

जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा ''स्केनिंग कार्य'' हेतु जिसकी अनुमानित लागत राशि रू. 60,00,000/- (अक्षरे साठ लाख रूपये) के लिए ऑनलाईन बिड्स दिनांक 14.07.2025 को सायं 6:00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा बोली का ऑनलाईन आवेदन व भुगतान जविप्रा पोर्टल पर करने की अन्तिम तिथि 14.07.2025 को सायं 6:00 बजे तक है। निविदा बोली के दस्तावेजों का विस्तृत विवरण www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in and www.jda.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

निविदा में भाग लेने वालो को निम्न शर्तो की पूर्ति करनी होगी :-

1. निविदादाता जयपुर विकास प्राधिकरण की वेबसाईट www.jda.rajasthan.gov.in पर पंजीकृत हो एवं निविदा में भाग लेने के लिए बोलीदाता को आवेदन करने के लिए दस्तावेज शुल्क, अमानत राशि, आर.आई.एस.एल. प्रोसेसिंग शुल्क ऑनलाईन जमा करनी होगी।
2. ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने के लिए निविदा दाताओं का राजस्थान सरकार के ई-प्रॉक्योरमेन्ट पोर्टल www.eproc.rajasthan.gov.in पर पंजीकृत होना आवश्यक है।

राज.संवाद/सी/25/5551 उपायुक्त (सा.स्टोर)

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

राज्य कृषि प्रबंध संस्थान परिसर, दुर्गापुरा, जयपुर-302018, फोन - 0141-2552796

क्रमांक-प.14(131)RSSB/अर्थना/NHM/संविदा भर्ती/2024/

दिनांकः यथाहस्ताक्षर

प्रेस विज्ञप्ति

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन एवं राजस्थान मेडिकल एजुकेशन सोसायटी के विभिन्न संवर्ग के संविदा पदों हेतु सीधी भर्ती परीक्षा-2025

बोर्ड द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन एवं राजस्थान मेडिकल एजुकेशन सोसायटी के विभिन्न संवर्ग के लिये **राजस्थान कान्ट्रेक्चुअल हायरिंग टू सिविल पोस्ट रूल्स, 2022 यथा संशोधित** के अन्तर्गत राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के विभिन्न संवर्ग के कुल 8256 (गैर अनुसूचित क्षेत्र के 7828 एवं अनुसूचित क्षेत्र के 428) तथा राजस्थान मेडिकल एजुकेशन सोसायटी के विभिन्न संवर्ग के कुल 5142 (गैर अनुसूचित क्षेत्र के 4850 एवं अनुसूचित क्षेत्र के 292) पदों पर भर्ती हेतु विज्ञापन संख्या 01/2025 दिनांक 28.01.2025 तथा संशोधित विज्ञप्ति दिनांक 17.02.2025, 18.02.2025 तथा 01.04.2025 को जारी की गई थी। उक्त संवर्ग की भर्ती परीक्षाएं दिनांक 02.06.2025 से 13.06.2025 तक आयोजित करवाई गई हैं। इस भर्ती में आवेदकों को सूचित किया जाता है कि वे अपने ऑनलाईन आवेदन में **07.07.2025 से दिनांक 16.07.2025 तक को 23.59 बजे तक** संशोधन कर सकते है। अभ्यर्थी अपने ऑनलाईन आवेदन में **श्रेणी, विशेष श्रेणी, उप श्रेणी, वैवाहिक स्थिति** इत्यादि में निर्धारित रू. 300/- का शुल्क ऑनलाईन भुगतान कर संशोधन कर सकेंगे। इनके अतिरिक्त शेष अन्य सूचनाओं को परिवर्तित नहीं कर पाऐंगे।

उक्त समय सीमा के पश्चात् किसी भी स्थिति में बोर्ड द्वारा कोई भी ऑफलाईन प्रार्थना पत्र संशोधन हेतु स्वीकार नहीं किया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए बोर्ड की वेबसाईट https://rssb.rajasthan.gov.in का अवलोकन करें।

DIPR/C/9141/2025 (डॉ. बी. सी. बधाल) सचिव

दुष्कर्म मामले में आरोपी गिरफ्तार

अनूपगढ़, (निसं)। पुलिस ने नाबालिग से दुष्कर्म के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। वहीं पुलिस ने पीड़िता को सकुशल दस्तयाब कर लिया है।

एसएचओ ईश्वर जांगिड़ ने बताया कि पीड़िता के पिता ने अनूपगढ़ थाने में शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने बताया कि विक्रम (26) उनकी नाबालिग बेटी को बहला-फुसलाकर ले गया, जिसके बाद पुलिस ने पीड़ित की रिपोर्ट के आधार पर मामला दर्ज कर नाबालिग लड़की को दस्तयाब करने के लिए टीम का गठन किया। उन्होंने बताया कि नाबालिग लड़की को दस्तयाब लिया गया है और नाबालिग लड़की को श्रीगंगानगर में बाल कल्याण समिति के समक्ष पेश किया गया। नाबालिग लड़की को उसके परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि नाबालिग से दुष्कर्म के मामले में आरोपी विक्रम को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस टीम के द्वारा इस मामले में अनुसंधान किया जा रहा है।

Government Of Rajasthan

Water Resources Department

Office of the Executive Engineer Water Resources Division Dholpur

Tel & Fax No. 05642-220880 E-Mail - eewrddholpur1@gmail.com

INVITATION OF E-NIT NO. 04 YEAR 2025-26

No.- Date-

On behalf of governor of Rajasthan E-NIT No 04 Year 2025-26 is invited from eligible contractor for 04 Nos. works cost of works is Rs. 51.81 Lacs The detail of works is available on following websites.

UBN No. - (1) WRD 2526 WSO B00533, (2) INRD 2526 WSO B00534 (3) WRD 2526 WSO 1300535, (4) WRD 2526 WSO B00536

1. www.diprrajasthan.gov.in, 2. www.sppp.rajasthan.gov.in, 3. www.eproc.rajasthan.gov.in

Executive Engineer Water Resources Division Dholpur

DIPR/C/8867/2025

Office Of Superintending Engineer PHED Circle Jhalawar (Rajasthan)

NOTICE INVITING Bid No. 13/2025-26 Item No. 1-A to 1-C

Bids for Annual Rate contract for Construction & commissioning of 200 mm dia tube wells with submersible pump sets etc. complete work in all types of strata & laying, jointing, testing, commissioning of HDPE pipe line including defect liability period of PANCHAYAT SAMITI AKLERA, MANOHARTHANA, JHALARAPATAN, KHANPUR, BAKANI, BHAWANI MANDI, DAG & PIRAEA of PHED Division Jhalawar/ Bhawani Mandi, District Jhalawar (With Material Complete) are invited from interested bidders upto 10.07.2025 at 18.00 Hours. Other particulars of the bid may be visited on the www.dipr.rajasthan.gov.in, http://rajwater.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in and http://eproc.rajasthan.gov.In. Departmental websites.

NIB No. PHE2526A2023

UBN No. PHE2526WSOB04142, PHE2526WSOB04144, PHE2526WSOB04145

Superintending Engineer PHED Circle Jhalawar

DIPR/C/9070/2025

आठ फीट लंबे जख्मी ब्लैक कोबरा सांप की सफल सर्जरी

पशु चिकित्सक टीम ने कोबरा के शरीर पर आई गंभीर चोटों और कटे हुए अंगों को जोड़ने के लिए जटिल सर्जरी की

अजमेर, (कासं)। माखुपुरा गांव में मानवता और जीव संरक्षण की अनूठी मिसाल सामने आई है, जहां आठ फीट लंबे जख्मी ब्लैक कोबरा को स्नेक कैचर द्वारा रेस्क्यू कर शास्त्री नगर स्थित पशु चिकित्सालय पहुंचे, जहां डॉक्टर डॉ. मयंक और उनकी टीम ने कोबरा सांप की सफल सर्जरी कर उसकी जान बचाई। आमतौर पर जहरीले सांपों से दूरी बनाकर रखते हैं, स्नेक केचर और चिकित्सकों की इस मानवता की मिसाल की सब तारीफ कर रहे हैं।

चिकित्सकों टीम ने जख्मी सांप का उपचार किया।

■ डॉक्टरों की टीम ने कोबरा के जख्मी हिस्से को साफ किया, फिर लगभग 20 टांके लगाए

स्नेक कैचर ने जख्मी सांप रेस्क्यू कर पहुंचाया अस्पताल :-जानकारी के अनुसार आदर्श नगर थाना क्षेत्र के माखुपुरा गांव में घायल काले कोबरा को स्नेक कैचर नरेश कुमार ने देखकर रेस्क्यू किया और तत्काल शास्त्री नगर स्थित राजकीय पशु चिकित्सालय लेकर पहुंचे। जख्मी सांप को शास्त्री नगर स्थित पशु चिकित्सालय लाया गया, जहां पशु चिकित्सक डॉ. मयंक और उनकी टीम ने कोबरा के शरीर पर आई गंभीर चोटों और कटे हुए अंगों को जोड़ने के लिए जटिल सर्जरी की। डॉक्टरों ने कोबरा के जख्मी हिस्से को पहले साफ किया, फिर लगभग 20 टांके लगाए। डॉक्टरों की टीम ने सफलता पूर्वक सर्जरी को अंजाम दिया। डॉ. मयंक ने बताया कि घायल कोबरा को उचित इलाज देने के बाद पूरी तरह स्वस्थ होने पर सुरक्षित स्थान पर छोड़ दिया गया।

स्नेक केचर नरेश कुमार ने बताया कि मानसून के मौसम में विभिन्न प्रजातियों के अक्सर जहरीले सांप रिहायशी इलाकों में आ जाते हैं, ऐसे में वे लोगों को जागरूक कर सांपों को सुरक्षित तरीके से पकड़कर जंगल या नाग पहाड़ियों में छोड़ते हैं।

कार्यालय सदस्य सचिव, जिला स्वास्थ्य समिति, बीकानेर

क्रमांकः- एनएचएम/बिड/लेखा/2025/780-782 दिनांक :- 26/6/25

खुली / ई-निविदा सूचना संख्या DHS/BKN 03/2025-26

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय बीकानेर में आवास भोजन एवं जलपान व्यवस्था, औषधियों की व्यवस्था करने हेतु एक वर्ष के लिए दर संविदा हेतु ई-निविदा प्रक्रिया से दिनांक 07.07.2025 समय सांय 4.00 बजे तक प्रदायकर्ता से निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की अनुमानित लागत, टेण्डर शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण राजकीय वेबसाईट http:sppp.raj.nic.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

1. Essential Drugs E Tender — NIB NO:-MHS2526 — UBN No:-MHS 2546 GLRC02389
2. Food & Residential arrangements E Tender — NIB No :- 41511 — UBN No:- Mlts 2526 SLAC02390

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवं सदस्य सचिव, जिला स्वास्थ्य समिति, बीकानेर

DIPR/C/9044/2025

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियंता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

राजकीय जनाना चिकित्सालय परिरार, गोरी चार बाग भरतपुर 321 001 (राज0)

eemhbharatpur@gmail.com, ee-mh-bharatpur@gov.in, Mob. 9602097030

क्रमांक-M&H/2025-26/711 दिनांकः 24.06.2025

निविदा सूचना संख्याः 13/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत विभिन्न कार्य भरतपुर संभाग में रू. 270.00 लाख के निर्माण कार्य हेतु राजस्थान सरकार के समकक्ष उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में सिविल कार्यों हेतु पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.Org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

S.NO.	Name of work	Amount	UBIN No
1	Construction of New PHC Building at Tuhiya Distt. Bharatpur	135.00	MHS2526WSOB02306
2	Construction of New PHC Building at Gudla Distt. Karauli	135.00	MHS2526WSOB02307

(एल.के. अग्रवाल) अधिशाषी अभियंता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, भरतपुर

DIPR/C/8984/2025

राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डवलपमेंट एंड इनवेस्टमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(राजस्थान सरकार का उपक्रम)

उद्योग भवन, तिलक मार्ग, जयपुर- 302005, फोन-0141-2227751,4593201

ई-मेल-riico@riico.co.in वेबसाइट-riico.rajasthan.gov.in

निविदा सूचना

रीको द्वारा निम्नांकित कार्यों/आपूर्ति/सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए सीलबंद निविदाऐं एवं राशि रू. 2.00 लाख से अधिक की निविदाऐं ई-प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाइन निर्धारित प्रपत्र में eproc.rajasthan.gov.in पर आमंत्रित की जाती हैं:-

इकाई का नाम, UBN एवं कार्य की राशि (लाख रू. में): भिवाड़ी(प्रथम)-औद्योगिक क्षेत्र भिवाड़ी में जोन 4 और 5 में आर.सी.सी. नालियों के निर्माण, सी.डी. तथा अप्रोच कल्वर्ट का कार्य। **RDC2526WLOB00511(1754.57),** RDC2526WSOB00514(7.68), RDC2526WSOB00515(51.86), RDC2526WSOB00516(4.74), RDC2526WSOB00517(4.27), RDC2526WSOB00518(10.46), जयपुर(उत्तर)-औद्योगिक क्षेत्र विश्वकर्मा, जयपुर में थिन व्हाईट टोपिंग द्वारा सीमेंट कंक्रीट सड़क का निर्माण एवं विभिन्न स्थानों पर नालियों का उन्नयन का कार्य। **RDC2526WLOB00482(769.74),** औद्योगिक क्षेत्र विश्वकर्मा-विस्तार, जयपुर में थिन व्हाईट टोपिंग द्वारा सीमेंट कंक्रीट सड़क का निर्माण एवं आरसीसी बॉक्स टाईप नाली द्वारा नालियों का उन्नयन का कार्य। **RDC2526WLOB00483(701.46),** RDC2526WSOB00485(52.49), RDC2526WSOB00486(10.09), RDC2526WSOB00487(16.32), RDC2526WSOB00488(1.95), ईपीआईपी सीतापुरा, जयपुर-**RDC2526WSOB00492(271.45),** RDC2526WSOB00491(134.39), RDC2526WSOB00493(1.84), RDC2526WSOB00494(1.76), किशनगढ-**RDC2526WSOB00501(392.46),** RDC2526WSOB00504(8.49), सवाईमाधोपुर-RDC2526WSOB00505(199.84), अजमेर-RDC2526WSOB00458(19.81), कोटा-RDC2526WSRC00459(37.92), RDC2526WSRC00460(28.85), उदयपुर-RDC2526WSOB00461(7.50), RDC2526WSOB00462(8.38), RDC2526WSOB00463(2.65), RDC2526WSOB00464(20.23), RDC2526WSOB00481(95.34), चूरू-RDC2526WSOB00465(3.25), नागौर-RDC2526WSOB00466(75.48), RDC2526WSOB00467(17.62), RDC2526WSOB00512(4.08), RDC2526WSOB00513(21.27), अलवर-RDC2526WSOB00468(14.53), RDC2526WSOB00469(14.26), RDC2526WSOB00470(18.73), RDC2526WSOB00471(28.06), RDC2526WSOB00472(69.61), सीकर-RDC2526WSOB00473(1.85), RDC2526WSOB00474(1.91), RDC2526WSOB00475(1.85), RDC2526WSOB00476(1.91), RDC2526WSOB00477(2.49), RDC2526WSOB00478(9.30), RDC2526WSOB00479(10.55), RDC2526WSOB00480(10.02), पाली-RDC2526WSOB00484(5.11), नीमराना-RDC2526WSOB00489(33.72), RDC2526WSOB00490(11.31), झुंझुनु-RDC2526WSOB00499(65.05), RDC2526WSOB00502(4.64), जयपुर(दक्षिण)-RDC2526WSOB00495(78.81), RDC2526WSOB00496(8.32), RDC2526WSOB00497(2.49), RDC2526WSRC00498(1.08), RDC2526WSOB00500(1.46), मण्डोर-RDC2526WSOB00506(3.76), श्रीगंगानगर-RDC2526WSOB00507(8.25), RDC2526WSOB00508(12.45), धीलोठ-RDC2526WSOB00509(7.92), RDC2526WSOB00510(12.23), आबूरोड-RDC2526WSOB00519(1.90), RDC2526WSOB00524(19.12), RDC2526WSOB00520(12.05), जयपुर(ग्रामीण)-RDC2526WSOB00521(5.47), RDC2526WSOB00522(6.96), RDC2526WSOB00525(5.16), RDC2526WSOB00526(4.56), RDC2526WSOB00527(6.38), RDC2526WSOB00528(3.81), RDC2526WSOB00531(68.86), भिवाड़ी(द्वितीय)-RDC2526WSOB00523(17.41), RDC2526WSOB00529(11.20), RDC2526WSOB00530(73.80), RDC2526WSOB00532(84.58)

कुल कार्यों की संख्या-74

निविदा का विस्तृत विवरण, नियम इत्यादि एवं भविष्य में निविदा में किसी प्रकार के संशोधन/तिथि बढ़ने की जानकारी हेतु वेबसाइट riico.rajasthan.gov.in/ www.eproc.rajasthan.gov.in/ www.sppp.rajasthan.gov.in को देखें। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: महाप्रबंधक (सिविल), फोन- 0141-4593243

Raj.Samwad/C/25/5585

चाकू की नोक पर विवाहिता से दुष्कर्म

अजमेर, (कासं)। क्रिश्चियनगंज थाना क्षेत्र में रहने वाली विवाहिता के साथ चाकू की नोक पर दुष्कर्म और 10 लाख रुपए हड़पने का मामला सामने आया है। पीड़िता ने पति के दोस्त पर गंभीर आरोप लगाते हुए पुलिस में मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

क्रिश्चियनगंज थाना पुलिस के अनुसार पीड़िता के पति की 2024 में मृत्यु हो गई थी। इसके बाद पति का दोस्त लगातार मदद करने के बहाने घर आता-जाता रहा। आरोपित ने व्यवसाय में निवेश करवाने और बच्चों के भविष्य का भरोसा देकर मार्च 2024 से 2025 के बीच पीड़िता से करीब 10 लाख रुपये भी ले लिए।

■ पीड़िता ने पति के दोस्त पर दुष्कर्म व 10 लाख रुपए हड़पने का आरोप लगाया

पीड़िता का आरोप है कि आरोपी ने नशे की हालत में कई बार घर में अभद्र व्यवहार किया। आरोप है कि एक दिन जब पीड़िता घर में अकेली थी तब आरोपी ने चाकू दिखाकर उसके साथ जबरन दुराचार किया और पैसे लौटाने से भी इनकार कर दिया। पीड़िता के अनुसार आरोपी द्वारा लगातार मानसिक प्रताड़ना और डराया धमकाया जा रहा था। घटना की शिकायत मिलते ही क्रिश्चियनगंज थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कार्यालय नगर परिषद, झुन्झुनू (राज.)

क्रमांक :-एफ(5)( )विकास/2025-26/3755 दिनांक :- 03.07.2025

ई-निविदा संख्या 07/2025-26

(NIB Code- DLB2526A3188)

कुल राशि - 159.42 लाख

निविदा की कुल लागत (लाखो में)	15942000/-
कुल धरोहर राशि 2 प्रतिशत (रूपये में)	318840/-
कुल धरोहर राशि 1/2 प्रतिशत (रूपये में)	79710/-
निविदा डाउनलोड करने की तिथि	07.07.2025 को प्रातः 11.00 बजे से 18.07.2025 प्रातः 11.00 बजे तक
निविदा अपलोड करने की तिथि	07.07.2025 को प्रातः 11.00 बजे से 18.07.2025 प्रातः 11.00 बजे तक
निविदा खोलने की तिथि	18.07.2025 दोपहर 2.00 बजे

निविदा सूचना इंटरनेट साईट http://www.eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in वेबसाईट पर भी देखी जा सकती है।

आयुक्त नगर परिषद झुन्झुनू

राज.संवाद/सी/25/5571

राजस्थान सरकार

कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, राजसमन्द

(जिला स्वास्थ्य समिति, राजसमंद)

निविदा कमांक मु.चि.अ()/डीएचएस/लेखा/2025/2777 दिनांक-20/06/2025

आयुष्मान आरोग्य मंन्दिर में मानव संसाधन हेतु निविदा

ई-निविदा सूचना : 02/2025-26

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, राजसमन्द में आयुष्मान आरोग्य मंन्दिर हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26 तक एव राज0 लोक उपापन परदर्शिता अधिनियम 2012 एवं राज0 उपापन नियम 2013 के नियमानुसार जॉब बेसिस पर मानव संसाधन उपलब्ध कराये जाने हेतु इच्छुक श्रम आपूर्तिकर्ताओं / स्वयं सहायता समूहों / संवेदक एजेंसी से निविदा आमंत्रित की जाती हैं।

क्र. सं.	नाम कार्य	अनुमानित लागत	निविदा शुल्क	Sppp/Eproc पोर्टल एवं कार्यालय से निविदा प्रपत्र बिड इत्यादि प्राप्त करने की तिथि	RISL शुल्क	तकनीकी निविदा खोलने की तिथि	कार्यकारी एजेंसी	UBN No.
1	आयुष्मान आरोग्य मंन्दिर में मानव संसाधन हेतु	195 लाख	1000/-	20 जून 2025	2000/-	14 जुलाई 2025	मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी राजसमन्द	MHS2526 SLOBO2136

1. निविदा की विस्तृत सूचना एवं शर्ते कार्यालय के नोटिस बोर्ड www.eproc.rajasthan.gov.in www.sppp.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी राजसमन्द

DIPR/C/8703/2025

राज्य सरकार महिला सशक्तिकरण के लिए कृतसंकल्पित : भजनलाल शर्मा

राज्य महिला सदन में 11 आवासनियों का विवाह सम्मेलन हुआ

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 11 लाडलियों और उनके जीवनसाथियों को सुखी-वैवाहिक जीवन के लिए आशीर्वाद दिया।

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र व राज्य सरकार महिला सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए हमारी सरकार कृतसंकल्पित है। उन्होंने कहा कि सामूहिक विवाह सम्मेलन जरूरतमंदों का सहारा बन रहे हैं। ऐसे आयोजन समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। शर्मा शुक्रवार को राज्य महिला सदन, सांगानेर में सामूहिक विवाह सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन हमारी सरकार की सामाजिक समावेशन और महिला सशक्तिकरण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह आयोजन सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित बेटियों के लिए एक नया सवेरा है। इससे उन्हें सम्मान, स्नेह और आत्मनिर्भरता की राह मिली है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले सामूहिक विवाह के बाद 1900 से अधिक युवकों ने यहां की बेटियों से विवाह के लिए आवेदन किया था। इनमें से 11 योग्य युवकों का चयन किया गया, जो आज हमारी लाड़लियों के जीवनसाथी बने हैं। यह चयन प्रक्रिया पारदर्शी रही, इसमें बेटियों के सम्मान और पसंद को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। शर्मा ने कहा कि हमारा दृढ़ संकल्प है कि प्रदेश की हर बेटी, हर महिला न केवल आत्मनिर्भर बने, बल्कि समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए। हमारी सरकार ने उनके कल्याण और सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं, जिनका सीधा लाभ लाखों बालिकाओं और महिलाओं तक पहुंच रहा है। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना में विवाह के लिए 21 हजार से 51 हजार रुपये तक की सहायता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि योजना के तहत पिछले डेढ़ वर्ष में 13 हजार से ज्यादा बेटियों को 71 करोड़ रुपये की सहायता दी गई है। लाडो प्रोत्साहन योजना बालिकाओं के जन्म को प्रोत्साहित करने और उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने के लिए एक गेम-चेंजर साबित हो रही है।

मुख्यमंत्री ने 11 लाड़लियों और उनके जीवनसाथियों को सुखी-वैवाहिक जीवन के लिए आशीर्वाद दिया। उन्होंने मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत 21-21 हजार रुपये की सहायता राशि के चैक भेंट किए।

इस अवसर पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत, निदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग आशीष मोदी, आयुक्त नगर निगम ग्रेटर डॉ. गौरव सैनी, प्रताप राव, राजीव सिंह चौहान, डी.डी. सिंह, बबीता शर्मा, रीना शर्मा सहित समाजसेवी एवं आमजन उपस्थित रहे।

'चातुर्मास मंगल प्रवेश आत्म कल्याण का पावन प्रभात'

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने संतशक्ति को नमन करते हुए कहा कि चातुर्मास मंगल प्रवेश आत्म कल्याण का पावन प्रभात है। उन्होंने कहा कि यह आयोजन आत्मशुद्धि, संयम और साधना का जीवंत प्रतीक है। आचार्यश्री और समस्त साधु-साध्वियों के साथ चातुर्मास समाज को आंतरिक परिवर्तन, करुणा और अध्यात्म की दिशा में अग्रसर करने वाला पर्व है। देवनानी ने यहां तिलक नगर स्थित श्री साधुमार्गी शांत क्रांति जैन संघ द्वारा नवकार भवन में आयोजित समारोह में श्रद्धालुओं को सम्बोधित किया। देवनानी ने कहा कि आचार्यश्री के ओजस्वी प्रवचनों ने अंतर्मन को मंथन यात्रा के लिए प्रेरित किया है। विश्ववल्लभ आचार्य प्रवर 1008 प. पू. विजयराज के सान्निध्य में उनके आजानुवर्ती 30 साधु-साध्वियों ने चातुर्मास मंगल प्रवेश किया।

प्रगतिशील पूर्व विधायक संघ का एक प्रतिनिधि मंडल संघ के अध्यास जीतराम चौधरी के नेतृत्व में राजस्थान के राज्यपाल माननीय हरिभाऊ वागडे से मिला और अपनी विभिन्न समस्याओं के निराकरण के लिए ज्ञापन प्रस्तुत किया जिसे उन्होंने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल को भेज दिया। प्रतिनिधि मंडल में उपाध्याय रामकिशोर मीणा सचिव अत्तरसिंह भड़ाना, ममता शर्मा एवंअशोक तंवर शामिल थे।

सूचना सहायक भर्ती के नियुक्ति पत्र जारी करने पर लगी रोक हटी, याचिकाएं खारिज

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने सूचना सहायक भर्ती-2023 में नियुक्ति पत्र जारी करने पर लगी अंतरिम रोक को हटा लिया है। इसके साथ ही अदालत ने विवादित प्रश्न-उत्तरों को चुनौती देने वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया है। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश बबीता बाई बैरवा व अन्य की याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि अदालत न तो विषय विशेषज्ञ है और ना ही विशेषज्ञ की तरह काम कर सकता है। याचिकाकर्ताओं ने लिखित परीक्षा की निष्पक्षता पर सवाल नहीं उठाया है। याचिकाकर्ता सिर्फ अंतिम उत्तर कुंजी से सहमत नहीं है। वहीं अंतिम उत्तर कुंजी जारी करने से पूर्व सवालों का विषय विशेषज्ञों से परीक्षण कराया गया है। ऐसे में विवादित प्रश्नों के उत्तरों पर फिर से विचार करने के लिए नई विशेषज्ञ कमेटी गठित करने का कोई औचित्य नहीं है। याचिकाओं में कहा गया कि राज्य सरकार ने सूचना सहायकों के 3415 पदों के लिए भर्ती निकाली थी। जिसकी लिखीत परीक्षा 21 जनवरी, 2024 को हुई और प्रथम उत्तर कुंजी 2 फरवरी, 2024 को जारी की गई।

याचिका में कहा गया कि उत्तर कुंजी में कुछ सवालों के जवाब गलत जांचे गए। जिसके चलते याचिकाकर्ताओं के अंक कम आए और वे चयन प्रक्रिया से बाहर हो गए। इसलिए विवादित प्रश्नों की जांच के लिए विशेषज्ञ कमेटी का गठन किया जाए। जिसका विरोध करते हुए राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि चयन बोर्ड ने अभ्यर्थियों से आपत्तियां मांगकर उनका विशेषज्ञों से परीक्षण करवाकर अंतिम उत्तर कुंजी जारी की थी। ऐसे में अदालत विशेषज्ञ की रिपोर्ट पर दखल नहीं दे सकती है। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाओं को खारिज करते हुए पूर्व में नियुक्ति पत्र जारी करने लगी रोक को हटा दिया है।

अपील के निर्णय के अधीन रहेगी नर्सिंग ऑफिसर भर्ती

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने नर्सिंग ऑफिसर भर्ती-2023 में कोविड काल में संविदा पर दो साल से भी कम समय काम करने वाले कोविड हेल्थ वर्कर व कोविड हेल्थ ऑफिसर को कार्य अनुभव के 15 बोनस अंक का लाभ देने के मामले में राज्य सरकार से जवाब देने के लिए कहा है। वहीं भर्ती की चयन प्रक्रिया को अपील में होने वाले निर्णय के अधीन रखा है। सीजे एमएम श्रीवास्तव व जस्टिस मनीष शर्मा ने यह आदेश मनोहर लाल की अपील पर दिया।

मामले से जुड़े अधिवक्ता प्रदीप सिंह ने बताया कि अपील में एकलपीठ के उस आदेश को चुनौती दी है, जिसमें एकलपीठ ने याचिकाकर्ता की याचिका को खारिज कर दिया था। अपील में कहा कि राज्य सरकार ने 25 अप्रैल 2023 को अधिसूचना जारी कर कोविड काल में संविदा पर दो साल से भी कम समय काम करने वाले कोविड हेल्थ वर्कर व कोविड हेल्थ ऑफिसर को कार्य अनुभव के 15 बोनस अंक का

■ **सीएचए व सीएचओ का काम अपीलार्थियों के समान नहीं है**

लाभ देने के लिए कहा है। यह गलत है, इससे कोविड में एक दिन काम करने वाला अभ्यर्थी भी बोनस अंक का पात्र हो गया है।

इसके अलावा सीएचए व सीएचओ का काम अपीलार्थियों के समान नहीं है। ऐसे में सीएचए व सीएचओ को कार्य अनुभव के बोनस अंक देने से अपीलार्थी अस्थाई वरीयता सूची से बाहर हो गए हैं। जबकि वे पिछले 7-8 साल से नियमित तौर पर नर्सिंग का काम कर रहे हैं। उन्हें बोनस अंक देने से अपीलार्थियों के हित भी प्रभावित हो रहे हैं। इसलिए दो साल से कम काम करने वाले सीएचए और सीएचओ को बोनस अंक का लाभ नहीं दिया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए खंडपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब मांगते हुए चयन प्रक्रिया को अपील के निर्णय के अधीन रखा है।

तीन आरोपी गिरफ्तार

जयपुर। विधाधर नगर थाना पुलिस ने संगीन अपहरण की वारदात का 12 घंटे में खुलासा करते हुए तीन आरोपितों को गिरफ्तार एक नाबालिक बालक को भी निरुद्ध किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से वारदात के काम में ली गई बोलेरो कैम्पर गाड़ी भी बरामद की है। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए करीब 250 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले और रुट मैप तैयार कर आरोपियों को दबोच लिया।

कथा समापन दिवस पर उमड़ा भक्तों का सैलाब

जयपुर। श्री शिव महापुराण कथा समिति की ओर से बनीपार्क में आयोजित शिव महापुराण कथा में शुक्रवार अंतिम दिवस को भगवान शिव के महामृत्युंजय और पंचाक्षरी मंत्र की महिमा, महान शिवभक्तों के चरित का बखान कथावाचक संतोष सागर ने व्यास पीठ से किया।

■ **शिव महापुराण कथा शिव तत्व की प्राप्ति का श्रेष्ठ माध्यम : संतोष सागर**

संतोष सागर ने बताया कि भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव हैं। पंचाक्षरी मंत्र का जप उनकी विशेष कृपा देने वाला है। महामृत्युंजय जप जीव को मुक्ति देने वाला है। अनेक शिव भक्तों ने इन मंत्रों के जप और भगवान शिव के प्रति समर्पण के भाव से शिवलोक प्राप्त किया। समिति के महामंत्री अरुण खटोड़ ने बताया कि कथा के दौरान इस अनुष्ठान में सहयोग करने वाले समिति के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और सहयोगियों का व्यास पीठ की ओर से स्मृति चिह्न देकर आभार जताया गया। कथा के अंतिम दिवस भक्त भारी संख्या में उपस्थित रहे। 22 युगल जोड़े ऐसे रहे जिन्होंने अनुष्ठान के सभी नियमों का पालन करते हुए पूरे 9 दिन कथा श्रवण किया। समिति ने इन यजमान जोड़ों का विशेष सम्मान किया। कथा श्रवण में अतिथि के तौर पर घाट के बालाजी के महंत सुरेश मिश्रा, भाजपा नेता अशोक परनामी, एस एस अग्रवाल, संजय जैन, प्रधान यजमान हेरिटेज जयपुर नगर निगम मेयर कुसुम यादव सहित कार्यकर्ता व श्रोता उपस्थित रहे।

'लापताओं की तलाश के लिए उन्नत तकनीक का उपयोग किया जाए'

■ **हाईकोर्ट ने पुलिस महानिदेशक को कहा कि राजस्थान पुलिस की जांच का ढर्रा अभी भी पुरानी तरह से ही चल रहा है, आज एआई सहित मॉडर्न तकनीक आ गई है, लेकिन पुलिस उसका उपयोग नहीं कर रही है**

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने पुलिस महानिदेशक को कहा है कि राजस्थान पुलिस की जांच का ढर्रा अभी भी पुरानी तरह से ही चल रहा है। आज एआई सहित मॉडर्न तकनीक आ गई है, लेकिन पुलिस उसका उपयोग नहीं कर रही है। अदालत ने कहा कि लापताओं की तलाश के लिए उन्नत तकनीक का उपयोग किया जाए। जस्टिस अवनीश झिंगन और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने यह आदेश नरेंद्र सिंह रावत अन्य की और से दायर बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान डीजीपी राजीव शर्मा अदालत में पेश हुए। अदालत ने उन्हें कहा कि पुलिस लापता की तलाश की जांच मोबाइल तक ही सीमित रखती है। आजकल का युवा मोबाइल की तकनीक को भली-भांति समझता है। वहीं यदि पुलिस को जानकारी मिलती है कि आरोपी सुदूर इलाके में है तो पुलिस यहां से टीम बनाकर भेजती है। जब तक पुलिस वहां पहुंचती है, आरोपी वहां से निकल जाता है। यदि पुलिस उचित तकनीक काम में ले तो स्थानीय पुलिस की मदद से कुछ मिनट में ही आरोपी को पकड़ा जा सकता है। अदालत ने एक मामले का उदाहरण देते हुए कहा कि 2 साल के बच्चे की तलाश 6 साल बाद भी जारी है, लेकिन पुलिस के पास उसका स्केच तक नहीं है। ऐसे में पुलिस किस आधार पर जांच कर रही है, यह समझ के परे है। अदालत में यह भी कहा कि मामलों की सुनवाई के दौरान कोर्ट के ऑब्जरवेशन को जांच अधिकारी अदालत का निर्देश समझ लेते हैं, जो भी उचित नहीं है। अदालत ने डीजीपी को कहा कि हम उम्मीद करते हैं कि आपके कार्यकाल में कुछ अच्छा हो जाए। डीजीपी ने अदालत को कहा की लापताओं की तलाश नई तकनीक से की जाती है। वहीं अब अदालत की मंशा को देखते हुए मॉडर्न तकनीक काम में लाई जाएगी। अदालत में खाटू श्यामजी इलाके से लापता हुए 40 वर्षीय व्यक्ति के मामले में नामजद व्यक्ति की सहमति से उसका पॉलीग्राफ टेस्ट करने को कहा है। वहीं अदालत ने मामले में 10 दिन में तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश करने को कहा है।

बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका में अधिवक्ता नगेंद्र सिंह ने बताया कि अप्रैल 2024 में उसका भाई खाटू श्याम जी इलाके से लापता हुआ था। इसे लेकर स्थानीय पुलिस थाने में नामजद रिपोर्ट भी दर्ज कराई गई थी। इसके बावजूद अभी तक पुलिस कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर रही है। वहीं एक अन्य मामले में अधिवक्ता एसएस अली ने बताया कि रामगंज थाना इलाके से 6 फरवरी 2024 को 15 वर्षीय किशोरी लापता हुई थी। आरोपी युवक का घर पीड़िता के घर के सामने ही है। पुलिस को नामजद रिपोर्ट देने के बाद भी अब तक पुलिस ने पीडिता की बरामद की नहीं की है। दूसरी ओर संबंधित युवक के परिजनों ने भी युवक के लापता होने की कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई है। जिससे जाहिर है कि युवक के परिजनों को युवक को लेकर जानकारियां हैं।

'स्मार्ट मीटर नहीं, स्मार्ट बिजली व्यवस्था चाहिए'

जयपुर। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव गिरिराज खंडेलवाल ने राजस्थान सरकार द्वारा पुरानी मीटरिंग प्रणाली को हटाकर स्मार्ट मीटर लगाने की योजना को राज्य के विद्युत उपभोक्ताओं के साथ छलावा बताया है ।उन्होंने कहा कि सरकार आम उपभोक्ताओं के हितों को दरकिनार कर केवल कुछ चुनिंदा कंपनियों को लाभ पहुंचाने का जरिया बन गई है। इसी कारण सरकार के इस पूरे अभियान की पारदर्शिता पर गंभीर सवाल उठते हैं।

कांग्रेस नेता खंडेलवाल ने कहा कि जहां सरकार एक ओर यह दावा कर रही है कि स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए फायदेमंद होंगे, वहीं दूसरी ओर हाल ही में सामने आए तथ्यों के अनुसार स्मार्ट मीटर से रीडिंग कम नहीं बल्कि काफ़ी ज़्यादा आ रही हैं। एक उपभोक्ता द्वारा की गई जांच में पाया गया कि सामान्य मीटर से 279 यूनिट का उपयोग दर्ज हुआ, वहीं स्मार्ट मीटर ने उसी अवधि में 429 यूनिट दिखाए इससे 150 यूनिट का अंतर सीधा सीधा अत्यधिक बिल में तब्दील होता है ।यह अंतर उपभोक्ताओं की जेब पर सीधा हमला है।जबकि सरकार का तर्क है कि स्मार्ट मीटर से बिजली चोरी रुकेगी, रीडिंग ऑनलाइन जाएगी, और लाइव डाटा मिलेगा। लेकिन हकीकत यह है कि जो कार्य एक लाइनमैन करता है - जैसे चोरी पकड़ना, मीटर की जांच करना, उपभोक्ताओं से संपर्क बनाए रखना - वो काम एक मशीन नहीं कर सकती।कांग्रेस नेता खंडेलवाल ने बताया कि 1995-1996 से राजस्थान में कई बार मीटर बदल हजारों करोड़ रुपये खर्च किए गए ।अब पुनः इन पुराने मीटरो को हटाकर स्मार्ट मीटर लगाने की जबरदस्ती की जा रही है

उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार का यह प्रोजेक्ट लगभग 10,000 करोड़ का है इसमें से सिर्फ 15 (900 रुपए प्रति मीटर) की सहायता केंद्र देगा ।बाकी पूरा खर्च राज्य और उपभोक्ता उठायेगे ।अगर राज्य सहयोग नहीं करता तो केंद्र 5,400 करोड़ रुपयों की सहायता राशि रोकने की धमकी दी गई है। ऊपर से सूर्यघर योजना के तहत एक और स्मार्ट मीटर का प्रावधान कर दिया गया है जिससे कुल खर्च 20,000 करोड़ हो जाएगा।

गिरिराज खंडेलवाल ने राज्य सरकार के इस निर्णय को ग़लत बताते हुए कहा कि स्मार्ट मीटर लगवाना उपभोक्ताओं का वैकल्पिक अधिकार होना चाहिए, न कि जबरन थोपी गई व्यवस्था।

ज्वैलर्स से लूटपाट करने वाले पांच बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। प्रताप नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 28 जून की रात को एक ज्वैलर्स से लूटपाट करने वाले पांच बदमाशों को बापर्दा गिरफ्तार किया है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

थानाधिकारी मनोज कुमार बरेवाल ने बताया कि चंद्र प्रकाश सोनी ने मामला दर्ज करवाया था कि वह सेक्टर 26 प्रताप नगर में वर्ष 2004 से रह रहा है और वह मूलत बाटौदा जिला सवाई माधोपुर का रहने वाला है। उसकी शुभम ज्वैलर्स के नाम से दुकान है 28 जून की रात को दुकान मंगल कर घर जा रहा था तो प्रेम मंदिर के पास उसके घर की गली में मुड़ते ही उक स्कॉर्पियो गाड़ी ने टक्कर मार कर उसे नीचे गिर गया। इसके बाद गाडी में से दो-तीन लड़के उतरे और डंडों से मारते हुए बैंग लूट कर ले गये। बैग में 25 हजार रूपय नगद 15 ग्राम सोना व 12 किलो चांदी सामान सहित एटीएम कार्ड ,चेक बुक आदि सामान था। पुलिस ने मामला दर्ज कर आस-पास के लगे सीसीटीवी फुटेज से बदमाशों का रूट तैयार करते हुए सवाई माधोपुर, जयपुर व टोंक से डिटेन कर पांच बदमाशों को बापर्दा गिरफ्तार किया गया।

स्वप्रेरित प्रसंज्ञान अलवर बालिका गृह तक किया सीमित, गुप्ता न्यायमित्र नियुक्त

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने अलवर बालिका गृह की अव्यवस्थाओं और शेल्टर होम से बाहर निकले वयस्कों के लिए प्रावधान नहीं होने के संबंध में लिए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान को अलवर बालिका गृह तक सीमित किया है। अदालत ने कहा कि बालिका गृह की किशोरियों की ओर से भेजे पत्र पर ही अदालत सुनवाई करेगी। इसके साथ ही अदालत ने मामले में वरिष्ठ अधिवक्ता सुधीर गुप्ता को अदालत का सहयोग करने के लिए न्यायमित्र नियुक्त किया है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस चंद्र प्रकाश श्रीमाली की खंडपीठ ने यह आदेश प्रकरण में लिए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए।

महाधिवक्ता मनोज कुमार शर्मा को तीन सप्ताह में बताने को कहा है कि किशोरियों की ओर से भेजी गई शिकायत पर क्या कार्रवाई की गई है। यदि मामले में सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की है तो अदालत मामले में कठोर रुख अपनाएगी। गौरतलब है कि अलवर बालिका गृह में रहने वाली किशोरियों की ओर से गत दिनों हाईकोर्ट के एक

■ **बालिका गृह की किशोरियों की ओर से भेजे पत्र पर ही अदालत सुनवाई करेगी**

न्यायाधीश को शिकायती पत्र भेजा था। जिसमें कहा गया था कि सरकारी अधिकारियों की निष्क्रियता के चलते उन्हें अनुदान मिलने में गंभीर चुनौतियां हो रही हैं। इसके साथ ही अधिकारियों पर प्रताडऩा का भी आरोप लगाया गया था। पत्र पर कार्रवाई करते हुए हाईकोर्ट की एकलपीठ ने मामले में स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लिया था। इसके साथ ही अदालत ने वयस्क होने पर शेल्टर होम छोड़ने वाले वयस्कों के लिए कोई प्रावधान नहीं होने के बिंदु पर भी केन्द्र व राज्य सरकार से जवाब तलब किया था। एकलपीठ ने कहा था कि शेल्टर होम में रहने वाले हजारों युवाओं को वयस्क होते ही बिना किसी पहचान, स्थाई पते और बिना सहारे बाहरी दुनिया में धकेल दिया जाता है।

विवाहिता ने फांसी का फंदा लगाकर की आत्महत्या

जयपुर। रामगंज थाना थाना इलाके में एक विवाहिता ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या करने का मामला सामने आया है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव का सवाई मानसिंह अस्पताल(एसएमएस) में पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। मृतका की मां की शिकायत पर पुलिस ने आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सहायक पुलिस आयुक्त (रामगंज) हरिशंकर शर्मा ने बताया कि रामगंज में नेहरो की नदी निवासी लाली देवी (35) ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या की है। जिसकी मई-2018 में शादी राहुल तिमोली से हुई थी।

मृतका लाली ने अपने कमरे में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों के कमरे में जाने पर लाली देवी फंदे से लटकी मिली। फंदे से उतारकर लाली देवी को तुरंत सवाई मानसिंह अस्पताल (एसएमएस) पहुंचाया। डॉक्टर्स ने चेक कर उसे मृत घोषित कर दिया।

मेडिकल सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को मोर्चरी में रखवाया। पुलिस ने पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया।

मोहर्रम पर सोशल मीडिया तक रहेगी पुलिस की कड़ी निगरानी

जयपुर। मोहर्रम का पर्व छह जुलाई को है। इस दौरान शहर के अलग-अलग इलाकों से ताजिए निकाले जाएंगे। मोहर्रम पर शांति व कानून व्यवस्था बनाए रखने और ट्रैफिक व्यवस्था को लेकर जयपुर पुलिस ने कड़े व पुख्ता इंतजाम किए हैं। इस दौरान असामाजिक तत्वों पर सड़क से सोशल मीडिया तक पुलिस कड़ी निगरानी रखेगी।

पुलिस, आरएसी और होमगार्ड के साथ ही सादा वर्दी में पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे। जो असामाजिक तत्वों पर नजर रखेंगे। इसें अलावा अभय कमांड सेंटर से शहर के चप्पे-चप्पे पर पुलिस की नजर रहेगी। सोशल मीडिया पर अफवाहे फैलाने और भड़काऊ पोस्ट करने वालों पर भी नजर रखी जा रही है।

अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर (कानून-व्यवस्था) डॉ. रामेश्वर सिंह ने कहा कि छह जुलाई (रविवार)को मोहर्रम का पर्व मनाया जाएगा। इसे देखते हुए जयपुर पुलिस कमिश्नरेट के सभी जिलों में तैयारी पूरी कर ली गई है। सभी जगह पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया जाएगा। साथ ही थानों

■ **राजधानी में पुलिस के कड़े इंतजाम , सादा वर्दी में तैनात रहेंगे पुलिसकर्मी**

और जिलों के अलावा पुलिस लाइन का भी जाप्ता तैनात किया जाएगा। आरएसी और होमगार्ड का जाप्ता तैनात किया जाएगा। वहीं ट्रैफिक को लेकर भी माकूल इंतजाम किए जाएंगे,ताकि आमजन को परेशानी का सामना नहीं करना पड़े।

लाइसेंसधारी ताजियों को ही दी अनुमतिः- उन्होंने कहा कि शांति समिति और सीएलजी की बैठकों का आयोजन किया गया है। थानों और जिलों के साथ ही जयपुर पुलिस कमिश्नरेट स्तर पर भी शांति समिति और सीएलजी की बैठकों का आयोजन किया गया है। ताजिए के लाइसेंसधारकों के साथ भी बैठक ली गई है।

उन्होंने बताया कि लाइसेंसधारी ताजियों को ही अनुमति दी गई है। इस संबंध में सभी को स्पष्ट निर्देश जारी किए गए हैं। इसके साथ ही थाना अधिकारियों भी निर्देश जारी किए गए हैं । थानाधिकारी अपने स्तर पर प्रॉपर मॉनिटरिंग कर रहे हैं। थानाधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में निर्देशों की पालना सुनिश्चित कर रहे हैं।

यातायात के भी किए जाएंगे माकूल इंतजामः उन्होंने कहा कि मोहर्रम पर भीड़भाड़ अधिक रहती है। इसे देखते हुए भी पुलिस की ओर से पूरी सतर्कता बरती जाएगीं इसके साथ ही यातायात को लेकर भी माकूल इंतजाम किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अभय कमांड सेंटर की मदद से पूरे शहर में निगरानी रखी जाएगी।

उन्होंने बताया कि अफवाहों को लेकर पुलिस की साइबर सेल की टीमें सोशल मीडिया पर भी कड़ी निगरानी रखी जाएगी।

इसके साथ ही सादा वर्दी में अलग से जाप्ता तैनात किया जाएगा। जो बदमाश और असामाजिक प्रवृत्ति के लोगों पर निगरानी रखेगी। जो भी असामाजिक तत्व बदमाशी करने की कोशिश करेंगे। उनके खिलाफ समय रहते कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

रोटेरियन शिल्पा बेंद्रे को मिला मिस्टर रोटेरियन का प्रतिष्ठित सम्मान

जयपुर । रोटरी क्लब जयपुर की सक्रिय सदस्य रोटेरियन शिल्पा बेंद्रे को हाल ही में आयोजित एक भव्य समारोह में दोहरे सम्मान से नवाजा गया, जिससे उनकी असाधारण सेवाओं और नेतृत्व को मान्यता मिली। रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3056 की प्रांतपाल डॉ. राखी गुप्ता ने उन्हें आउटस्टैंडिंग लेडी रोटेरियन के खिताब से सम्मानित किया। एक समारोह में, उन्हें रोटरी क्लब जयपुर का प्रतिष्ठित मिस्टर रोटेरियन अवॉर्ड 2024-25 भी प्रदान किया गया, जो क्लब का सर्वोच्च सम्मान है।

यह सम्मान रोटरी के विभिन्न आयामों में उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता है। रोटरी क्लब जयपुर के सत्र 2024-25 के अध्यक्ष, रोटेरियन गिरधर माहेश्वरी ने बताया कि मिस्टर रोटेरियन अवॉर्ड उस सदस्य को प्रदान किया जाता है जिसने रोटरी सेवा के पांच प्रमुख आयामों (क्लब सेवा, व्यावसायिक सेवा, सामुदायिक सेवा और अंतरराष्ट्रीय सेवा और पार्टनर इन सर्विस) में अद्वितीय योगदान और प्रभावशाली नेतृत्व के साथ संस्था के मूल्यों को सशक्त रूप से आगे बढ़ाया हो। रोटेरियन शिल्पा बेंद्रे को पूरे वर्ष उनके सराहनीय सेवा कार्यों के लिए सम्मान से भी सम्मानित किया गया।

भस्मासुर मोहिनी में जीवंत हुए पौराणिक प्रसंग, कचहरी में ताल वाद्यों की गूंज

■ **जवाहर कला केन्द्र में आयोजित तीन दिवसीय मल्हार महोत्सव में नज़ारा देखने को मिला। यहां ताल वाद्य कचहरी और कथक की मनमोहक प्रस्तुतियां दी गयी**

■ **शास्त्रीय नृत्य कथक की दो विशेष प्रस्तुतियाँ रंगायन के मंच पर देखने को मिली। एक ओर नाट्यय रूप में भस्मासुर मोहिनी, दूसरी कथक की जटिल लयकारी पर आधारित 9 मात्रा का तकनीकी पक्ष**

जयपुर। सुहाना मौसम, चारों ओर हरियाली और शास्त्रीय विधाओं की प्रस्तुतियां। जवाहर कला केन्द्र में शुक्रवार शाम यह नज़ारा देखने को मिला। यहां ताल वाद्य कचहरी और कथक की मनमोहक प्रस्तुतियां दी गयी। परमेश्वर लाल कथक व समूह के कलाकारों ने ताल वाद्य कचहरी में अपना हुनर दिखाया। वहीं दिनेश परिहार ने कथक संरचना भस्मासुर मोहिनी व पारंपरिक शुद्ध कथक पेश कर दर्शकों का मन मोहा। इसी के साथ वर्षा ऋतु के सौंदर्य से रूबरू करवाने वाले तीन दिवसीय मल्हार महोत्सव का समापन हुआ।

सबसे पहले 8 वर्षीय प्रिंस कथक और शौर्य बेनीवाल ने अपनी नन्ही अंगुलियों का जादू तबले पर दिखाया। दोनों की जुगलबंदी के साथ कार्यक्रम की बेहतरीन शुरुआत हुई। इसके बाद ताल वाद्य कचहरी में विभिन्न ताल वाद्यों तबला, नगाड़ा, घटम, ढोलक, पखावज, जेम्बे की संयुक्त प्रस्तुति हुई। कलाकारों ने तीन ताल में विलंबित लय और द्रुत लय में वादन कर अपने हुनर का जलवा दिखाया। तबले पर परमेश्वर लाल कथक, मोहित कथक, नगाड़े पर मनीष कुमार देवली, घटम पर धीरज कुमार चौहान, ढोलक पर राकेश कुमार नागौरी और मुकेश कुमार चौहान ने जेम्बे वादन किया। किशन कथक ने सितार व सांवरमल कथक ने हारमोनियम पर संगत की।

इसके बाद शास्त्रीय नृत्य कथक की दो विशेष प्रस्तुतियाँ रंगायन के मंच पर देखने को मिली। एक ओर नाट्यय रूप में भस्मासुर मोहिनी, दूसरी कथक की जटिल लयकारी पर आधारित 9 मात्रा का तकनीकी पक्ष।

पहले नृत्य प्रस्तुति में कथक के नृत्य पक्ष की सूक्ष्मता,लयकारी, तोड़ा, टुकड़ा, परण और पढ़ंत की सुंदरता झलकी। पौराणिक कथा पर आधारित नृत्य नाटिका भस्मासुर मोहिनी में अभिनय, भाव एवं नृत्य का प्रभावशाली संगम दिखाई दिया। इसमें शिव, भस्मासुर और मोहिनी अवतार के प्रसंग को जीवंत किया गया। मुकेश गंगानी ने भगवान शिव, पूर्णिमा अरोड़ा ने मां पार्वती, दिनेश परिहार ने भस्मासुर, मोनिका अग्रवाल ने मोहिनी और जीवराज ने भगवान विष्णु की भूमिका निभाई।

हितेश गंगानी, लक्ष्य पंवार एवं गौरव ने अपनी सामूहिक प्रस्तुति से कार्यक्रम को और विशेष बनाया। कार्यक्रम को खास बनाने में प्रणय भारद्वाज ने अपने मंच संचालन से विशिष्ट भूमिका निभाई।

स्वायत्त शासन मंत्री खर्रा अजमेर पहुंचे, एलिवेटेड रोड का निरीक्षण किया

एलिवेटेड रोड निर्माण में भ्रष्टाचार की रिपोर्ट आने के बाद कार्यवाही होगी : खर्रा

अजमेर, (निसं)। करोड़ों रूपए की लागत से निर्मित एलिवेटेड रोड पर गत दिवस की बरसात से हुए खड्डों का निरीक्षण शुक्रवार को राज्य के स्वायत्त शासन मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि एलिवेटेड रोड के निर्माण मे हुए भष्ट्राचार की जांच रिपोर्ट आने के बाद सभी दोषियों के खिलाफ जांच की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों शहर में हुई मूसलाधार बरसात के कारण करोड़ों रूपए की लागत से बनाए गए एलिवेटेड रोड में जान लेवा खड्डे हो गए थे। जिसके कारण पुलिस ने आवागमन बंद कर दिया था। शुक्रवार को राज्य के स्वायत्त शासन मंत्री झाबर सिंह खर्रा अजमेर पहुंचे और उन्होंने एलिवेटेड रोड का निरीक्षण किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि एलिवेटेड रोड के हालात से उप सभापति ने उन्हें अवगत कराया था और 2023 के समाचार पत्रों की कटिंग भी भेजी थी। उस समय की सरकार की लापरवाही से यह काम हुआ है इसमें भष्ट्राचार का सदेह होता है। उनका कहना था कि उस समय जो भी तकनीकी या अन्य अधिकारी इस काम मे शामिल थे उनके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। इसके अलावा इस काम को करने वाली कंपनी को भी नहीं बख्शा जाएगा। कंपनी को ब्लैक लिस्टेड करके विधि के हिसाब से कार्यवाही होगी। खर्रा ने बताया कि मामले की जांच के लिए उच्च स्तरीय कमेटी बनाई गई है, जिसकी जांच रिपोर्ट आने के बाद ही कार्यवाही होगी। उन्होंने एक सवाल के जबाव में स्वीकार किया कि नगर निगम में उस समय भाजपा बोर्ड था, लेकिन शासन पिछली सरकार के हाथ में था यदि किसी भी तरह की मिलीभगत, लापरवाही या भष्ट्राचार सामने आता है तो निश्चित रूप से कार्यवाही होगी। इस अवसर पर विधायक अनिता भदेल, उपमहापौर नीरज जैन, शहर भाजपा के अध्यक्ष रमेश सोनी, सार्वजनिक निर्माण विभाग, एडीए व नगर निगम के अधिकारी भी मौजूद थे।

प्रशासन ने एलिवेटेड रोड के क्षतिग्रस्त हिस्से पर मजदूरों से सीमेंट कंक्रीट कराई।

- सड़क धंसने की जानकारी मिलते ही जिला कलेक्टर लोक बंधु ने अधिकारियों को तत्काल जांच के आदेश दिए

एलिवेटेड रोड की धंसी सड़क पर सीमेंट कंक्रीट से मरम्मत

अजमेर, (कासं)। स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत बने एलिवेटेड रोड़ की एक भुजा पर हाल ही में हुए सड़क धंसने की घटना के बाद प्रशासन ने क्षतिग्रस्त हिस्से की सीमेंट कंक्रीट से मरम्मत शुरू कर दी है। जिला कलेक्टर लोक बंधु ने अधिकारियों को तत्काल जांच के आदेश दिए।

ठेकेदार अतुल गुप्ता ने बताया कि मरम्मत कार्य के बाद शनिवार से इस मार्ग पर यातायात दोबारा शुरू कर दिया जाएगा। क्षतिग्रस्त सड़क का डामरीकरण बारिश के मौसम के बाद किया जाएगा।

जानकारी के अनुसार शुक्रवार को एलिवेटेड रोड की एक भुजा पर दो-दो फीट गहरे गड्ढे हो गए थे, जिससे यातायात पूरी तरह बाधित हो गया था।

सड़क धंसने की जानकारी मिलते ही जिला कलेक्टर लोक बंधु ने अधिकारियों को तत्काल जांच के आदेश दिए। 272 करोड़ की लागत से बने इस प्रोजेक्ट में महज दो साल में ही सड़क धंसने की घटना ने निर्माण गुणवत्ता और तकनीकी निगरानी पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

प्रशासन ने फिलहाल क्षतिग्रस्त हिस्से को सीमेंट कंक्रीट से भर दिया है। वहीं स्थानीय लोगों ने निर्माण एजेंसी और निगरानी करने वाली तकनीकी टीम की जवाबदेही तय करने की मांग की है। एलिवेटेड रोड की तकनीकी खामियों ने स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट की गुणवत्ता पर सवालिया निशान लगा दिए हैं।

युवक ने पारिवारिक विवाद के चलते जहर खाया, मौत

- महात्मा गांधी चिकित्सालय में उपचार के दौरान दम तोड़ा

भीलवाड़ा, (निसं)। महात्मा गांधी चिकित्सालय में विषाक्त वास्तु के सेवन से हालत बिगड़ने के बाद भारती बूंदी जिले के युवक ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। बताया जा रहा है कि रूपा पारोली बूंदी थाना क्षेत्र एसडीएम के सामने युवक ने पारिवारिक विवाद के चलते जहर खा लिया था, जिसके बाद उसे महात्मा गांधी चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया था।

एमजी चौकी पुलिस ने बताया कि कैंप के दौरान नितेश पिता मदनलाल सनाढ्य उम्र 30 साल ने एसडीएम को परिवार में चल रहे जमीन विवाद को लेकर ज्ञापन सौंपने आया। ज्ञापन सौंपने के बाद उसने आक्रोश में आकर विषाक्त वस्तु का सेवन कर लिया जिसके चलते उसकी हालत बिगड़ने पर उसे तत्काल भीलवाड़ा जिला मुख्यालय स्थित महात्मा गांधी चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया। जहां देर रात उसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। सूचना मिलने पर स्थानीय सरपंच के साथ ही परिजन एमजी अस्पताल पहुंचे पुलिस ने मृतक केशव का पोस्टमार्टम करा शव परिजनों के सुपुर्द कर मामले की अग्रिम जांच शुरू की है। पारोली थाना प्रभारी प्रभातीलाल मीणा को नीतू ने एक रिपोर्ट दी। रिपोर्ट में सुनील व भागचंद आदि पर नित्यानंद को खुदकुशी के लिए मजबूर करने का आरोप लगाया गया। इन लोगों ने रोपां गांव में स्थित पैतृक जमीन नित्यानंद उर्फ नितेश व उसके परिवार को नहीं दी, जिससे वह तनाव में था और इसी के चलते जहरीली वस्तु खाकर उसने खुदकुशी कर ली।

जानकारी के अनुसार नित्यानंद ने खुदकुशी से पहले चार पेज का सुसाइड नोट लिखकर सोशल मीडिया पर वायरल भी किया था। नित्यानंद उर्फ नितेश सनाढ्य परिवार का इकलौता बेटा था। उसके पिता मदनलाल सनाढ्य जो कि रोपां में सहकारी समिति में शक्कर, केरोसिन देने का काम करते थे, उनका निधन हो गया था। पिता की मौत के बाद नित्यानंद पर ही मां व बहन की देखभाल एवं घर चलाने की जिम्मेदारी थी। नित्यानंद के खुदकुशी करने के बाद उसके परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। नित्यानंद ने इसी साल 5 मार्च को अंतरजातीय विवाह किया था। उसकी पत्नी गर्भवती है। अंतरजातिय विवाह के कारण उसे अपनी जमीन जायदाद से बेदखल कर जमीन पर अतिक्रमण कर लिया। इसे लेकर दिये परिवाद में भी उसने जीवनलीला समाप्त करने की बात लिखी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। उसने सुसाइड नोट में भागचंद, कमल, सुनील व सोभाग बाई के नाम लिखे हैं। नित्यानंद ने लिखा कि इन लोगों ने उसे परेशान कर यह कदम उठाने के लिए मजबूर किया है। नित्यानंद ने सुसाइड नोट में लिखा कि तत्कालीन तहसीलदार, पटवारी, एसएसओ, जांच अधिकारी पारोली की भी बराबर की भूमिका है। विधायक साहब के दबाव में आकर उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की, जिससे मेरे को यह कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा। मुस्कान देख ले, मैंने वादा निभाया है मुस्कान देख ले, मैंने वादा निभाया है। गांव जाकर कोई झगड़ा नहीं किया। भले ही जिंदगी हार गया पर वादा नहीं तोड़ा है। शायद ईश्वर को अपना यह सफर यहीं तक मंजूर था। मेरे बच्चे को रोपां गांव में कदम मत रखने देना। नीतू और मम्मी का खयाल रखना। यह बात नित्यानंद ने खुदकुशी से पहले सुसाइड नोट में लिखी।

उसकी बहन नीतू ने शुक्रवार को यहां मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को प्रार्थना-पत्र दिया, जिसमें बताया कि नित्यानंद परिवार में कमाने वाला अकेला था। बाकी तीन महिलायें हैं। परिवार को एक करोड़ का मुआवजा दिलाया जाये। नीतू ने पत्र में लिखा कि नित्यानंद के परिवार की 6.5 बीघा जमीन आरोपितों ने अपने कब्जे में ले रखी है, उसे रास्ते के साथ कब्जा मुक्त करवाकर मृतक के परिवार को सुपुर्द की जाये। नित्यानंद को जान देने के लिए मजबूर करने वालों को कठोर से कठोर सजा दिलाने को मांग की है।

नारणावास से खेजड़ला मार्ग पर भरे बारिश के पानी से हादसे का अंदेशा

जालोर, (कासं)। जिले के नारनावास से मादलपुरा ग्राम के बीच की मुख्य सड़क पर बीते दिनों हुई तेज बारिश के चलते जगह-जगह पानी भर गया है।

- दोपहिया वाहन चालकों व स्कूली बच्चों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है
- ग्रामीणों ने प्रशासन से शीघ्र पानी की निकासी कराने और मार्ग को सुरक्षित बनाने की मांग की

नारनावास से मादलपुरा ग्राम के बीच की मुख्य सड़क पर बीते दिनों हुई तेज बारिश से पानी भर गया है।

इस पानी की निकासी नहीं होने के कारण यह मार्ग अब खतरनाक होता जा रहा है। ग्रामवासियों का कहना है कि सड़क पर भरे पानी के कारण वाहन चालक मार्ग की गहराई या गड्ढों का अनुमान नहीं लगा पाते, जिससे दुर्घटना का खतरा बना हुआ है। विशेष रूप से दोपहिया वाहन चालकों व स्कूली बच्चों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय ग्रामीणों ने प्रशासन से शीघ्र कार्रवाई कर पानी की निकासी कराने और मार्ग को सुरक्षित बनाने की मांग की है।

फिरोज मेहर ने बताया कि इस मार्ग पर गहरा खड्ढा होने से बारिश का पानी जमा हो गया जिससे दो मोटरसाइकिल सवार गिरने से घायल हो गये। ग्राम पंचायत सहित आला अधिकारियों को अवगत करवाने बावजूद भी समस्या का समाधान नही हो रहा है।

स्कूल हॉस्टल में किशोर ने आत्महत्या की

उदयपुर, (निसं)। शहर के घंटाघर थाना क्षेत्र में एमएमपीएस स्कूलछात्र ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार तीन जुलाई को दक्षराजसिंह पुत्र गजेन्द्रसिंह चौहान निवासी आवडा जालोर हाल एमएमपीएस हॉस्टल के कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर घंटाघर थाना एएसआई भगवानलाल ने मौके पर पहुंचकर मृतक को नीचे उतार एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवाकर परिजनों को सूचना दी। शुक्रवार को एएसआई भगवानलाल ने मृतक का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंपा। पुलिस ने मौके से एफएसएल व विधी विशेषज्ञों को बुलाकर आवश्यक साक्ष्य जुटाए है। दक्षराज सिंह एमएमपीएस में कक्षा 12वीं का छात्र होकर हॉस्टल में ही रहता था एवं दो जुलाई को गांव से हॉस्टल आया था। हॉस्टल में उसका साथी छात्र नहीं आया था। आत्महत्या करने के कारणों का पता नहीं चल पाया। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

खम्भे में फैले करंट से युवक की मौत

- मुआवजे की मांग को लेकर तेलीखेड़ा के लोगों ने धरना प्रदर्शन किया

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा बिजली विभाग की अनदेखी का खामियाजा एक युवक को अपनी जान दे कर चुकाना पड़ा है। तेली खेड़ा में खम्भे में फैले करंट को लेकर कई बार ग्रामीणों ने विभाग को अवगत करवाया, लेकिन सुनवाई नहीं होने के कारण करंट लगने से एक युवक की मौत हो गई, अब मुआवजे की मांग को लेकर तेलीखेड़ा के लोग प्रदर्शन कर रहे हैं।

जानकारी के अनुसार तेलीखेड़ा निवासी बाबूलाल माली सड़क से गुजरने के दौरान खंभे में विभागीय लापरवाही के चलते फैले करंट की चपेट में आने से बेहोश होकर गिर पड़ा। आनन-फानन में लोगों ने उसे एमजी हॉस्पिटल में भर्ती करवाया, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मौत की खबर क्षेत्र में आग की तरह फैली और देखते ही देखते एमजी मोर्चरी के बाहर बड़ी संख्या में महिलाओं के साथ ही क्षेत्रवासी एकत्रित हो गए। तेली खेड़ा के क्षेत्रवासी और माली समाज के लोगों ने मुआवजे की मांग को लेकर मोर्चरी के बाहर प्रदर्शन शुरू कर दिया। उनका कहना था कि बिजली विभाग को बार-बार शिकायत करने के बावजूद कोई कार्यवाही नहीं की गई, जिसके कारण यह हादसा हुआ और बाबूलाल को अपनी जान गंवानी पड़ी है। मृतक के चार बच्चे हैं और घर ने कमाने वाला वो अकेला था। मृतक आश्रितों को उचित मुआवजा और लापरवाही बरतने वाले अधिकारी, कर्मचारी पर कार्यवाही की मांग को लेकर एमजी मोर्चरी के बाहर प्रदर्शन किया।

इस चेतावनी को देखते हुये डीएसपी सदर श्यामसुंदर विश्नोई, सदर थाना प्रभारी कैलाशकुमार विश्नोई, भीमगंज, कोतवाली, प्रताप नगर व सदर थाने के साथ ही पुलिस लाइन से जाब्ता अस्पताल बुलवाया। दोपहर में आक्रोशित लोगों ने बिजली निगम के अधीक्षक अभियंता कार्यालय के बाहर धरने पर बैठ प्रदर्शन शुरू कर दिया। बाद में निगम की ओर से दिये गये आर्थिक सहायता के आश्वासन पर शाम करीब चार बजे प्रदर्शन खत्म कर दिया गया। इसके बाद ही सदर थाना पुलिस ने पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों को सौंप दिया।

बीकानेर के ट्रक ड्राइवर की हिमाचल में मौत

बीकानेर, (निसं)। हिमाचल प्रदेश के चंबा में पठानकोट-भरमौर राष्ट्रीय राजमार्ग पर चनेड़ के पास एक ट्रक दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में ड्राइवर की मौत हो गई। ट्रक ड्राइवर व मालिक राम स्वरूप की मौके पर मौत हो गई। राम स्वरूप राजस्थान के बीकानेर जिले के स्वनतसर के रहने वाला था। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

जानकारी के अनुसार, ट्रक टाइलों से भरा था जो कि चंबा के चनेड़ के पास 200 मीटर गहरी खाई में जा गिरा। इस हादसे में ट्रक ड्राइवर व मालिक राम स्वरूप की मौके पर मौत हो गई। रामस्वरूप बीकानेर जिले के स्वनतसर के रहने वाला था। रामस्वरूप चंबा में टाइल और दूसरी निर्माण सामग्री की डिलीवरी करने जा रहा था और आज सुबह के वक्त हादसे का शिकार हो गया। जैसे ही चनेड़ के ट्रक पलटा तो आसपास के ग्रामीणों ने जोर-जोर की आवाजें लगाई, जिस पर स्थानीय लोगों ने जब घरों से बाहर निकलकर देखा तो ट्रक खाई में पड़ा था। इसके बाद ग्रामीण मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचित किया। ग्रामीणों ने ट्रक ड्राइवर को गाड़ी से बाहर निकाला और अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने मृतक घोषित कर दिया।

नौकरी का प्रलोभन देकर युवक का फर्जी खाता खोला

जोधपुर, (कासं)। शहर के मंडोर स्थित शिव मंदिर के पीछे खोखरिया की पाल के रहने वाले एक युवक को निजी बैंक में 40-50 हजार की नौकरी देने का प्रलोभन देकर शातिर ने फर्जी तरीके से खाता खोलने के बाद 40 लाख का फ्रॉड कर डाला। उसके नाम से 40 लाख रूपए ट्रांजेक्शन कर लिए गए। बाद में उसे पश्चिमी बंगाल पुलिस को नोटिस मिला तो इसका पता लगा। स्थानीय इस युवक के खिलाफ वेस्ट बंगाल में फ्रॉड का केस भी दर्ज हो गया। अब पीड़ित ने कोर्ट की शरण लेकर मंडोर थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दी है। पुलिस ने इसमें अब गहनता से तफ्तीश आरंभ की है।

मंडोर थाने के एसआई अरूणा कुमारी ने बताया कि शिव मंदिर के पीछे खोखरिया की पाल का रहने वाला प्रकाश सांखला पुत्र कमलेश सांखला की तरफ से रिपोर्ट दी गई है। इसमें बताया कि वह किराणा की दुकान पर काम करता है। गत साल 21 फरवरी को उसके पास किसी अंजान शख्स का कॉल आया और कहा कि वह एचडीएफसी बैंक से बोल रहा है। उसको बैंक में नौकरी दी जा रही है और उसकी तनख्वाह 40-50 हजार होगी। इसके लिए वह अपने संबंधित दस्तावेज ऑनलाइन भेजें। इस पर प्रकाश सांखला ने अपना पैन, आधार कार्ड इत्यादि दस्तावेज अंजान नंबर वाले को भेज दिए।

एसआई अरूणा कुमारी ने बताया कि प्रकाश ने ऑनलाइन ही सभी दस्तावेज भेजे जाने के साथ थंब इंप्रेशन भी कर दिया। शातिरों ने उसके द्वारा भेजे गए दस्तावेजों के आधार पर एक फर्जी खाता बालेसर की एचडीएफसी बैंक में खोल दिया। उसे पता भी नहीं चला। उसके घर पर लिफाफा भी आया मगर उसने उसे खोल कर भी नहीं देखा। उसके खाता खुलने की जानकारी उसे तब हुई जब पश्चिमी बंगाल पुलिस से उसे नोटिस मिला कि उसके बैंक खाते से 40 लाख रूपयों का ट्रांजेक्शन हुआ है। प्रकाश के खिलाफ वेस्ट बंगाल में धोखाधड़ी और आईटी एक्ट में केस भी दर्ज हो गया। पीड़ित प्रकाश सांखला अपने स्तर पर सालभर से ज्यादा समय तक वेस्ट बंगाल पुलिस के चक्कर काटने के साथ बालेसर की एचडीएफसी बैंक शाखा पर भी गया मगर निराशा हाथ लगी। अब उसने अपने साथ हुई धोखाधड़ी को लेकर कोर्ट की शरण लेकर मंडोर थाने में केस दर्ज कराया है।

अजमेर जेएलएन अस्पताल में डिजिटल टोकन व्यवस्था शुरू

- मरीज या परिजन क्यूआर कोड को स्कैन कर आसानी से टोकन नंबर प्राप्त कर सकेंगे

अजमेर, (कासं)। जवाहरलाल नेहरू अस्पताल में मरीजों और उनके परिजनों के लिए उपचार की प्रक्रिया अब पहले से कहीं ज्यादा आसान और तकनीकी हो गई है। अस्पताल प्रबंधन ने पर्ची और टोकन के लिए लगने वाली लंबी कतारों से निजात दिलाने के लिए नया डिजिटल टोकन सिस्टम लागू किया है, जिसके तहत मरीज या उनके परिजन अस्पताल परिसर में लगे क्यूआर कोड को स्कैन कर आसानी से टोकन नंबर प्राप्त कर सकेंगे।

नवाचार के तहत मरीज या उनके परिजन को सबसे पहले अपने स्मार्ट फोन में आभा एप डाउनलोड करना होगा। इसके बाद अस्पताल में प्रदर्शित क्यूआर कोड को मोबाइल से स्कैन करते ही एक ओटीपी मरीज के मोबाइल नंबर पर प्राप्त होगा। ओटीपी डालते ही मरीज को डॉक्टर के परामर्श के लिए एक डिजिटल टोकन नंबर जारी हो जाएगा। यह नंबर स्क्रीन पर भी दिखेगा और एसएमएस के जरिए भी प्राप्त किया जा सकता है। डिजिटल टोकन नंबर के आधार पर मरीज अपनी बारी के अनुसार डॉक्टर से परामर्श प्राप्त कर सकेंगे। अस्पताल प्रबंधन के अनुसार इस व्यवस्था से न सिर्फ मरीजों को लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा, बल्कि कतार में खड़े रहने की परेशानी भी समाप्त हो जाएगी। उपअधीक्षक डॉ. अमित यादव ने बताया कि यह नई सुविधा के जरिए मरीजों के इलाज में अनावश्यक भीड़, धक्का-मुक्की और अव्यवस्था पर भी नियंत्रण पाया जा सकेगा।

खेजड़ी को बचाने के लिए नोखा दैया में पर्यावरण प्रेमी 351 दिन से धरने पर

- चार साल में 40 हजार बीघा में 80 हजार खेजड़ी के पेड़ काटे, सरकारी आंकड़े में सिर्फ 2283

बीकानेर, (निसं)। देश का सबसे बड़ा सोलर हब बनाने की होड़ के कारण गांवों में हरियाली खत्म हो रही है। चार साल में 40 हजार बीघा में सोलर प्लांटों के कारण करीब 80 हजार खेजड़ी के पेड़ों की बलि दी गई है। खेजड़ी को बचाने के लिए नोखा दैया में पर्यावरण प्रेमी 351 दिन से धरने पर बैठे हैं।

बीकानेर तहसील के लाखूसर गांव में सोलर प्लांट पर खेजड़ी की कटाई को लेकर आए दिन बवाल हो रहा है। अब तक 800 से अधिक पेड़ काटे जा चुके हैं। पूगल, छत्तरगढ़, जयमलसर, नोखा दैया सहित एक दर्जन से अधिक गांवों में यही हालात हैं। तीन साल में कटी खेजड़ी की 26 मौका रिपोर्ट और पंचनामा खंगाले तो सरकारी आंकड़ा 2283 खेजड़ी का सामने आया। पर्यावरण प्रेमियों का कहना है कि इसके अलावा भी कोई रिपोर्ट पटवारियों ने बनाई होगी तब भी आंकड़ा पांच हजार से ज्यादा नहीं पहुंचेगा। मौके की फर्द रिपोर्ट बनाने का काम 2023 से पर्यावरण प्रेमियों के विरोध के बाद शुरू हुआ था। इन तीन सालों में एक ही रात में सबसे ज्यादा 565 खेजड़ी लाखूसर में कटी है। खेजड़ी को बचाने के लिए नोखा दैया में 351 दिन से धरना चल रहा है।

पर्यावरण संघर्ष समिति के कार्यकर्ताओं का पिछले दिनों सोलर प्लांट में भारी विवाद भी हुआ था। एक जानकारी के अनुसार जिले में छत्तरगढ़, पूगल, खाजूवाला, लूणकरणसर, जामसर, श्रीडूंगरगढ़, कोलायत, गजनेर, नोखा में पांच मेगावाट से लेकर तीन हजार मेगावाट तक के करीब 30 सोलर प्लांट लग चुके हैं। इन स्थानों पर लगभग 40 हजार बीघा जमीन पर सोलर प्रोजेक्ट चल रहे हैं। मोटे अनुमान के अनुसार एक बीघा में खेजड़ी के औसत पेड़ दो मानें तो 80 हजार पेड़ों की बलि दी जा चुकी है। हमने गूगल अर्थ से बीकानेर सहित जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर जिले की 15 साल तक की इमेज का सर्वे किया है। इसके अलावा पांच साल से ग्राउंड सर्वे चल रहा है।

सर्वे में अब तक इन चारों जिलों में खेजड़ी के करीब 20 लाख पेड़ कट चुके हैं, जिससे पर्यावरण को भारी नुकसान हो रहा है। अधिकांश पेड़ सोलर के कारण कटने पाए गए हैं। जहां-जहां सोलर प्लांट लगे हैं वहां अब हरियाली का नामोनिशान तक नहीं है। अमेरिका की विस्कॉन यूनिवर्सिटी के प्रो. जोनाथन भी थार में 15 दिन बिता चुके हैं। उन्होंने भी पर्यावरण के नुकसान पर चिंता जताई थी।

खेजड़ी बचाने के लिए एक साल में दिए 180 ज्ञापन, कोई असर नहीं :- सोलर प्लांटों पर खेजड़ी को बचाने के लिए खेजड़ी बचाओ पर्यावरण बचाओ संघर्ष समिति ने पिछले साल लंबा आंदोलन चलाया। छत्तरगढ़ में 87 दिन और कलेक्ट्रेट पर 70 दिनों तक धरना दिया। इस दौरान एसडीएम और कलेक्टर को 180 ज्ञापन दिए। आंदोलन को शांत करने के लिए किसानों को सरकार ने बुलाया।

समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि मुख्यमंत्री से 9 सितंबर 24 को वार्ता हुई थी, जिसमें उन्होंने ट्री प्रोटेक्शन कानून बनाने का वादा किया था, लेकिन अब तक नहीं बना। खेजड़ी की कटाई पर पूरी तरह से रोक लगाने की बात कही थी, लेकिन कटाई आज भी चल रही है। मोखराम धारणिया, रामगोपाल बिश्नोई, जेठाराम जाखड़ का कहना है कि वन विभाग ने आंखें मूंद रखी है। हरियाली की चिंता किसी को नहीं है।

380 किलोमीटर लंबी रेललाइन से पश्चिमी राजस्थान और गुजरात को नया आयाम मिलेगा

- रेललाइन के विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन सर्वे के लिए दस करोड़ रुपये के बजट को मंजूरी दी
- सर्वे के बाद निर्माण लागत और समय सीमा तय होगी, क्षेत्र में रेल नेटवर्क मजबूत होगा

जालोर, (कासं)। सांचोर जैसलमेर-बाडमेर-भाभर रेललाइन सर्वे के लिए दस करोड़ रुपये स्वीकृति मिलने से सांचोर को रेल कनेक्टिविटी का तोहफा मिला है।

भारत सरकार के रेल मंत्रालय ने पश्चिमी राजस्थान और गुजरात को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण रेल परियोजना, जैसलमेर-फतेहगढ़-शिव-बाड़मेर-धोरीमन्ना-रामजी का गोल-सांचोर-थराद-वाव-दियोदर-भाभर रेल लाइन के विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (डीपीआर) सर्वे के लिए दस करोड़ रुपये के बजट को मंजूरी दे दी है। यह परियोजना तीन दशकों से लंबित थी और इसके सर्वे की स्वीकृति क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है। यह प्रस्तावित 380 किलोमीटर लंबी रेल लाइन पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर और बाडमेर जिलों को गुजरात के भाभर तक जोड़ेगी, जिससे क्षेत्र की सामरिक और आर्थिक कनेक्टिविटी में बदलाव आएगा। यह रेल मार्ग खनन, पर्यटन और स्थानीय व्यापार को बढ़ावा देगा, साथ ही सीमावर्ती क्षेत्रों में रक्षा बलों की आवाजाही को भी सुगम बनाएगा। सांचोर, चितलवाना, और अन्य क्षेत्रों के लिए यह परियोजना विकास का नया द्वार खोलेगी।

इस स्वीकृति से सांचोर, बाड़मेर और जैसलमेर के स्थानीय निवासियों में उत्साह की लहर है। इस रेल लाइन के निर्माण से न केवल यात्रा सुविधा बढ़ेगी, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

रेल मंत्रालय द्वारा स्वीकृत दस करोड़ रुपये का बजट इस रेल लाइन के डीपीआर और सर्वे कार्य के लिए उपयोग किया जाएगा। सर्वे पूरा होने के बाद परियोजना की कुल लागत और निर्माण की समय सीमा तय की जाएगी। इस रेल लाइन के बनने से क्षेत्र में रेल नेटवर्क का विस्तार होगा और यह पश्चिमी भारत की रेल कनेक्टिविटी को मजबूत करने में मील का पत्थर साबित होगा। जैसलमेर-बाड़मेर-भाभर रेल लाइन परियोजना के लिए सर्वे की मंजूरी क्षेत्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। यह परियोजना न केवल आर्थिक विकास को गति देगी, बल्कि सामरिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण साबित होगी। क्षेत्रवासी इस रेल लाइन के निर्माण के लिए अब अगले कदमों का इंतजार कर रहे हैं।

ऐसा है प्रस्ताव दो स्टेट, 4 जिले के कई तहसील जुड़ेगी :- यह लाइन राजस्थान व गुजरात को जोड़ेगी। इसमें राजस्थान का बाड़मेर, जैसलमेर व जालोर जिला शामिल है, जबकि गुजरात का बनासकांठा। लाइन इन जिलों के बाड़मेर, गुडामालाणी, चौहटन, सांचौर, शिव, फतेहगढ़, जैसलमेर व गुजरात के थराद, वाव व दियोदर तहसील से होकर निकलेगी।

राजस्थान में 986 हैक्टेयर जमीन अवाप्त होगी :-रेलवे विभाग के मुताबिक इस लाइन के लिए बड़ी मात्रा में जमीन अवाप्त करनी होगी। राजस्थान में 986.8 हेक्टेयर व गुजरात में 246.2 हेक्टेयर जमीन अवाप्त होगी। साथ ही इस रेलवे लाइन पर 256 छोटे ब्रिज, 34 बड़े ब्रिज, 31 रोड ब्रिज व 56 अंडर रोड ब्रिज बनेंगे।

भाजपा नेता को रोहित गोदारा के नाम से धमकी मिली

अनूपगढ़, (निसं)। भाजपा नेता व व्यवसायी को वॉट्सऐप पर वॉयस मैसेज के जरिए रोहित गोदारा के नाम से धमकी मिली है और उनसे फिरौती की मांग भी की गई है।

एसएचओ ईश्वर प्रसाद जांगिड़ ने बताया कि भाजपा नेता के पास बुधवार रात पौने आठ बजे के करीब पहले अनजान नंबर से कॉल आई, जिस पर उन्होंने कॉल का जवाब नहीं दिया, जिसके बाद वॉट्सऐप पर एक वॉयस मैसेज आता है जिसके अंदर वह अपने आप को रोहित गोदारा बताते हुए धमकी देता है और फिरौती की डिमांड कर रहा है। इसके बाद गुरुवार दोपहर 12.30 बजे के करीब भी भाजपा नेता के पास विदेशी नंबर से फोन कॉल आया जिस पर इसी प्रकार से धमकी दी गई, जिसके बाद भाजपा नेता ने स्थानीय पुलिस थाने में इसकी जानकारी दी। पुलिस ने तुरंत मामले का संज्ञान लेते हुए भाजपा नेता को सुरक्षा भी मुहैया करवाई है। एसएचओ जांगिड़ ने बताया कि मामले की सूचना मिलते ही पुलिस टीमों का गठन कर मौके पर भेजा गया और आसपास लगे हुए कैमरे की भी जांच करवाई।

मेरी डॉक्टर्स के साथ अपॉइंटमेंट नहीं बदली जा सकती। अपॉइंटमेंट को बदलने की कोशिश की लेकिन किसी कारणवश वह ऐसा नहीं कर सके। दौरे की शुरुआत से पहले उन्होंने इस संबंध में बोर्ड से बात की और योजना बनाई। – फिल सिमंस

बांग्लादेश के मुख्य कोच, यूके में डॉक्टर के साथ अपॉइंटमेंट की जानकारी देते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ **डी गुकेश**

वर्ल्ड चेस चैंपियन भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने ठौंड शतरंज टूर रैपिड 2025 के जागरेब चरण में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन को छठे राउंड में परास्त किया है। गुकेश 10 अंकों के साथ टूर्नामेंट में शीर्ष बढ़त पर आ गए हैं। पहले दिन तीन में से दो मैच जीतने वाले गुकेश ने चौथे और पांचवें दौर में उजबेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव और अमेरिकी ग्रैंडमास्टर फैबियानो कारूआना को मात दी थी। ये गुकेश की कार्लसन पर लगातार दूसरी जीत है। पिछले महीने उन्होंने कार्लसन को नार्वे शतरंज में हराया था।

क्या आप जानते हैं ?... जेमी स्मिथइंग्लैंड के लिए तीसरा सबसे तेज शतक टेस्ट क्रिकेट में जड़ने वाले बल्लेबाज बन गए हैं।

टेस्ट कप्तान बनना चाहते हैं रविंद्र जडेजा

बर्मिंघम, 4 जुलाई। भारतीय टीम मौजूदा समय में इंग्लैंड दौरे पर है। जहां टीम में युवा खिलाड़ियों के साथ-साथ सबसे अनुभवी खिलाड़ी रवींद्र जडेजा भी है। वह अपने करियर में अब तक 80 से ज्यादा टेस्ट खेल चुके हैं।

हालांकि, रोहित शर्मा के संन्यास लेने के बाद उन्हें कप्तानी या उपकप्तानी नहीं दी गई। एजबेस्टन टेस्ट के दूसरे दिन जडेजा शतक से चूक गए। उन्होंने 89 रन की पारी खेली और कप्तान शुभमन गिल के साथ 203 रन की पार्टनरशिप भी की। वहीं दूसरे दिन स्टंप के बाद जडेजा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की , इस दौरान उन्होंने स्वीकार किया कि उनके लिए कप्तान की भूमिका निभाने का समय चला गया है। 2012 में डेब्यू करने वाले जडेजा के पास करीब 13 साल का टेस्ट अनुभव है। इतना ही नहीं वह अपने चौथे इंग्लैंड दौरे पर है। पीसी में जडेजा से कप्तानी की इच्छा के बारे में पूछा गया। इस पर जडेजा ने कहा कि, नहीं अब वह समय चला गया है। दिन के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए जडेजा से गिल की पारी के बारे में भी पूछा गया। उन्होंने कहा कि, ईमानदारी से कहूं तो वह बहुत आत्मविश्वास से भरे हुए दिख रहे हैं। बल्लेबाजी में वह कप्तान की तरह नहीं दिख रहे हैं उन्हें एक अतिरिक्त जिम्मेदारी दी गई है। जडेजा ने कहा कि, वह सब कुछ अपने साथ लेकर चल रहे हैं। मुझे उनकी बल्लेबाजी में ऐसा कुछ नहीं लगता। आज भी दुर्भाक्य से गेंद फील्डर के हाथ से चली गई। लेकिन आज मुझे नहीं लगा कि वह इस पारी में आउट होंगे। उन्होंने बहुत अच्छा खेला। जब हम साथ में बल्लेबाजी कर रहे थे तो हम साझेदारी के बारे में बात कर रहे थे कि हमारी साझेदारी लंबी होगी और हम एक-दूसरे से बात करते रहेंगे।

मेयो कॉलेज के 150 वर्षों का जश्न पोलो मैच, गोल्फ टूर्नामेंट, क्रिकेट मैच, पिकल बॉल आदि का आयोजन होगा

जयपुर, 4 जुलाई। विश्व प्रसिद्ध अजमेर स्थित मेयो कॉलेज अपनी स्थापना के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में देशभर में विविध कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है। इस जश्न की श्रृंखला में मेयो एलुमनाई चैप्टर, जयपुर द्वारा 11 और 12 अक्टूबर को जयपुर में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन में देशभर से स्कूल के पूर्व छात्र, स्कूल के बोर्ड मेम्बर्स सहित कई गणमान्य लोग शामिल होंगे। जयपुर में होने वाले कार्यक्रम के संबंध में मेयो एलुमनाई जयपुर चैप्टर की कार्यकारी समिति द्वारा अशोक क्लब में एक बैठक का आयोजन किया गया। यह बैठक जयपुर चैप्टर के अध्यक्ष, जगदीप सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई, जिसमें मेयो कॉलेज ओल्ड बॉय सोसायटी के अध्यक्ष, कर्नल भवानी सिंह; जयपुर चैप्टर के सचिव, पृथ्वी सिंह सहित अन्य सदस्य और आमंत्रित मेहमान उपस्थित रहे। जयपुर के कार्यक्रम के लिए 1991 बैच के पूर्व छात्र हरीश भार्गव को समारोह का संयोजक नियुक्त किया गया है। बैठक में इस दो दिवसीय समारोह के दौरान आयोजित होने वाली गतिविधियों की रूपरेखा तय की गई। इसमें पोलो मैच, गोल्फ टूर्नामेंट, क्रिकेट मैच, पिकल बॉल और नारायण निवास में भव्य गेट-टूगेदर डिनर का आयोजन आदि शामिल हैं।

134वें डूरंड कप ट्रॉफियों को राष्ट्रपति ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

नई दिल्ली, 4 जुलाई। विरासत और राष्ट्रीय गौरव से भरे इस ऐतिहासिक क्षण में, भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र (आरबीसीसी) से 134वें इंडियनऑयल डूरंड कप, एशिया का सबसे पुराना और भारत का सबसे प्रतिष्ठित फुटबॉल टूर्नामेंट, को औपचारिक रूप से प्रारंभ करते हुए तीन प्रतिष्ठित डूरंड कप ट्रॉफियों को रवाना किया। यह लगातार दूसरा वर्ष है जब राष्ट्रपति ने यह प्रतीकात्मक कार्य किया है, जो डूरंड कप की खेल, सेवा और राष्ट्रभक्ति के संगम के रूप में स्थायी महत्व की पुष्टि करता है। यह समारोह स्वतंत्रता के बाद की उस गौरवशाली परंपरा को भी जारी रखता है, जिसमें देश के सर्वोच्च सेनापति की डूरंड कप से सीधी भागीदारी रही है।

एएफसी महिला एशिया कप ऑस्ट्रेलिया 2026 में जगह बनाने के लिए भिड़ेंगे भारत और थाईलैंड

चियांग माई (थाईलैंड), 4 जुलाई। भारत और थाईलैंड की महिला फुटबॉल टीमें शनिवार को एएफसी महिला एशिया कप ऑस्ट्रेलिया 2026 में जगह बनाने के लिए भिड़ेंगी। दो महीने से अधिक लगातार मेहनत और ग्रुप में तीन जीत के बाद भारतीय महिला टीम कल चियांग माई स्टेडियम की 700वीं वर्षगांठ पर छह बजे पर एएफसी महिला एशिया कप ऑस्ट्रेलिया 2026 में जगह बनाने के लिए थाईलैंड से भिड़ेगी। भारतीय टीम के लिए यह इतिहास का एक नया अध्याय लिखने का अवसर होगा। भारत इससे पहले कभी भी क्वालीफायर के जरिए एएफसी महिला एशिया कप में नहीं पहुंचा है। भारतीय टीम ने आखिरी बार 2003 में महाद्वीप के शीर्ष चरण में जगह बनाई थी। उस समय कोई क्वालीफायर नहीं था। भारत ने मेजबान देश के रूप में एएफसी महिला एशिया कप 2022 में भाग लिया था, लेकिन टीम में कोविड प्रकोप के कारण उसे हटना पड़ा। भारतीय टीम के पास यह तीन साल पहले की गई गलतियों को सुधारने का अवसर होगा। भारत के लिए बड़ा सपना निश्चित रूप से 2027 में फीफा महिला विश्व कप के लिए पहली बार क्वालीफिकेशन हासिल करना है। ब्राजील का रास्ता ऑस्ट्रेलिया से होकर जाता है। थाईलैंड की रैंकिंग 46वीं है जोकि भारत से 24 पायदान ऊपर है।

सिराज ने झटके 6 विकेट, इंग्लैंड 407 पर ढेर

बर्मिंघम, 4 जुलाई। तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने घातक गेंदबाजी करते हुए छह विकेट झटककर इंग्लैंड को दूसरे टेस्ट के तीसरे दिन शुक्रवार को चायकाल के बाद 407 रन पर ढेर कर दिया और भारत को पहली पारी में 180 रन की महत्वपूर्ण बढ़त दिला दी। भारत ने पहली पारी में 587 रन बनाये थे।

भारत ने दूसरी पारी में तेज बल्लेबाजी करते हुए स्टंप्स तक एक विकेट खोकर 64 रन बना लिए हैं और उसकी कुल बढ़त 244 रन की हो गयी है। यशस्वी जायसवाल 28 रन बनाकर जोश टंग की गेंद पर पगबाधा आउट हुए। जायसवाल ने 22 गेंदों की अपनी पारी में छह चौके लगाए। स्टंप्स के समय के एल राहुल छह चौकों की मदद से 28 और करुण नायर सात रन बनाकर क्रीज पर हैं।

इससे पहले इंग्लैंड ने सुबह तीन विकेट पर 77 रन से आगे खेलना शुरू किया और पहले दो सत्रों में अपना दबदबा बनाया लेकिन तीसरे सत्र में सिराज ने इंग्लैंड को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया। सिराज ने सुबह के सत्र में दो विकेट झटके थे और आखिरी सत्र में तीन विकेट लेकर 70 रन पर छह विकेट हासिल किये। कल दो विकेट लेने वाले आकाशदीप सिंह ने आज दो विकेट निकाले और 88 रन देकर चार विकेट हासिल किये। सिराज ने चौथी टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में यह पहली बार हुआ है जब किसी एक पारी में दो बल्लेबाजों ने 150 का स्कोर बनाया हो और उसी पारी में छह बल्लेबाज शून्य पर आउट हुए हों। स्मिथ और ब्रूक के बीच हुए 303 रनों की साझेदारी ने इंग्लैंड को एक बेहद खराब स्थिति से अच्छी स्थिति में जरूर ला दिया है लेकिन बाकी के बल्लेबाजों का साथ मिलता तो वे अच्छी जगह पर होते। आकाश दीप और सिराज ने दूसरे नई गेंद के साथ कमाल की गेंदबाजी की। सिराज ने कुल छह विकेट हासिल किए और आकाश दीप ने चार विकेट। अब भारत इस लीड को कम से कम 500 तक लेकर जाना चाहेगा।

जेमी स्मिथ 184 रन पर नाबाद रह गए। उन्होंने 207 गेंदों का सामना कर अपनी पारी में 21 चौके और चार छक्के लगाए। हैरी ब्रूक ने 234 गेंदों पर 158 रन में 17 चौके और एक छक्का लगाया।

इससे पहले इंग्लैंड ने चायकाल तक पांच विकेट खोकर 355 रन बना लिए थे। दिन का दूसरा सत्र पूरी तरह से इंग्लैंड के नाम रहा । इस सेशन में इंग्लैंड ने कुल 106 रन बनाए और कोई विकेट नहीं गंवाया। भारत ने स्मिथ और ब्रूक के खिलाफ जो कुछ भी प्लान किया, वह विफल रहा। हालांकि पिछले कुछ ओवरों में जडेजा को टर्न एंड बाउंस मिला है लेकिन सुंदर अभी भी लय नहीं पकड़ पा रहे थे। भारत उम्मीद करेगा कि अगले सेशन में जल्दी कुछ विकेट लिए जाएं।। दूसरे तरफ बैजबॉल वाली टीम निश्चित रूप से ड्रॉ के लिए नहीं खेलेगी, ऐसे में कुछ चौंकाने वाले फैसले लिए जा सकते हैं। भारत ने दूसरी नयी गेंद के साथ इंग्लैंड की कमर तोड़ दी।

इंग्लैंड ने लंच तक पांच विकेट पर 249 रन बनाये थे। इंग्लैंड ने कल के तीन विकेट पर 77 रन के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया। सुबह के सत्र में इंग्लैंड के खाते में सात रन और जुड़े थे कि मोहम्मद सिराज ने जो रूट (22) को अपना शिकार बनाकर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद अगली ही गेंद पर कप्तान बेन स्टोक्स (शून्य) को भी आउटकर भारत को पांचवी सफलता दिलाई। ऐसे संकट के समय बल्लेबाजी करने आये जेमी स्मिथ ने हैरी ब्रूक के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अपने-अपने अर्धशतक पूरे किये। इसके बाद जेमी स्मिथ ने 47वें ओवर की तीसरी गेंद पर चौका लगाकर अपना शतक पूरा किया।

मोहम्मद सिराज हैट्रिक से चूके, रूट-स्टोक्स को भेजा पैवेलियन

बर्मिंग़न, 4 जुलाई। इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच की पहली पारी में खेल के तीसरे दिन मोहम्मद सिराज ने बेहतरीन गेंदबाजी की। इस दौरान उन्होंने जो रूट और कप्तान बेन स्टोक्स को बैक- टू बैक आउट करके भारत को बड़ी सफलता दिलाई। सिराज ने खेल के दूसरे दिन भी एक विकेट लिया था और ओपनर जैक क्राउली को आउट किया था।दूसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन पहली पारी में सिराज ने 22वें ओवर की तीसरे गेंद पर इंग्लैंड के सबसे खतरनाक बल्लेबाज जो रूट को अपना शिकार बनाया। लेकिन स्मिथ और ब्रूक के बीच कमाल की साझेदारी हुई। स्मिथ ने भारत की शॉर्ट पिच गेंदबाजी का बेहतरीन जवाब दिया और उसके बाद स्पिनरों पर भी करारा प्रहार किया। हालांकि एक फैक्ट यह भी है पिच फ्लैट है। यहां रन बनेंगे। काफी संयम के साथ यहां पर गेंदबाजों को सही लाइन और लेंथ गेंद पर गेंदबाज़ी करनी होगा और कैच नहीं टपकाना होगा। सुंदर और गिल दोनों के पास मुश्किल लेकिन अच्छा मौका था लेकिन उन्होंने कैच गिरा दिया।

ताज पहने नहीं, कमाए जाते हैं : पीसीए

शुभमन गिल की तारीफ की

नई दिल्ली, 4 जुलाई। विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गजों के संन्यास के बाद शुभमन गिल को टीम इंडिया की टेस्ट कप्तानी सौंपी गई। अपनी कप्तानी में दूसरे ही टेस्ट में भारतीय क्रिकेट के प्रिंस ने बल्ले से साबित कर दिया कि टीम इंडिया में नए किंग की दस्तक हो गई है। इंग्लैंड के खिलाफ पहले लीड्स टेस्ट में शतक और अब एजबेस्टन टेस्ट में दोहरा शतक। उनकी 269 रन की ऐतिहासिक पारी का हर तरफ इस्तकबाल हो रहा है। लेकिन संभवतः सबसे प्यारा संदेश उनके गृह राज्य के क्रिकेट एसोसिएशन का है।

गिल के दोहरे शतक पर पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन ने उनके सबसे पहले टीवी इंटरव्यू का क्लिप एक्स पर शेयर किया है। तब गिल शुरुआती किशोरावस्था में थे। बमुश्किल 15 साल के। लेकिन उस क्लिप के साथ पीसीए ने जो लिखा है कि वो किसी का भी दिल जीत लेगा। पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन ने एक्स पर पोस्ट किया कि, हां शुभमन गिल आपने सिर्फ नेतृत्व ही नहीं किया बल्कि आपने राज किया। पंजाब के हृदय से लेकर भारतीय क्रिकेट की आत्म तक। आपने दुनिया को दिखाया है कि मैदान पर राजसीपन कैसा होता है। सिर्फ कप्तान ही नहीं, एक ताकत, एक आग, एक सुनहरा भविष्य। ताज पहने नहीं जाते उन्हें कमाया जाता है। और आज आपका ताज सबसे ज्यादा चमक रहा है।

सिलिच से हारकर ड्रेपर विंबलडन से हुए बाहर

लंदन, 4 जुलाई। ब्रिटेन के नंबर एक खिलाड़ी जैक ड्रेपर क्रोएशियाई टेनिस खिलाड़ी मारिन सिलिच से हारकर विबंलडन से बाहर हो गये हैं। 36 वर्षीय मारिन सिलिच ने गुरुवार को खेले गये दूसरे दौर के मुकाबले में ब्रिटेन के ड्रेपर को 6-4, 6-3, 1-6, 6-4 से हराया। विंबलडन से बाहर होने के बाद ड्रेपर ने कहा कि उनका प्रदर्शन खराब रहा। उन्होंने इस दौरान दो बार विम्बलडन का खिताब जीतने वाले हमवतन एंडी मरे का जिक्र किया।

उन्होंने कहा, इससे मुझे लगता है कि एंडी मरे ने जो हासिल किया 'यहाँ दो बार जीतना' अविश्वसनीय था। यह दबाव नहीं है। मैं यह सोचकर मैदान पर नहीं गया था कि मुझ पर इतना दबाव है। पत्रकार हमेशा इसका जिक्र करते हैं। मैंने बस अच्छा नहीं खेला। मैं एक बेहतर खिलाड़ी से हार गया। यही मुख्य कारण है।

गेंदबाजों की फिटनेस से संबंधी चिंताएं इंग्लैंड के लिए अशुभ संकेत : वॉन

बर्मिंघम, 4 जुलाई। पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने कहा है कि गेंदबाजों की फिटनेस संबंधी चिंताएं इंग्लैंड के लिए 'अशुभ' संकेत हैं। वॉन ने कहा कि बेन स्टोक्स की टीम ने टेस्ट मैच के दूसरे दिन पूरी मेहनत की, हालांकि भारत ने 587 रन बनाए और मेजबान टीम ने 77 के स्कोर पर तीन विकेट गंवा दिये। ब्राइडन कार्स को पैर की समस्या से जूझना पड़ा, जबकि बेन स्टोक्स और क्रिस वोक्स ने अपने पहले स्पैल के बाद गेंदबाजी नहीं की।

उन्होंने कहा, यह स्पष्ट है कि ब्रायडन कार्स के साथ समस्या है और हम इंग्लैंड में पाँच मैचों की सीरीज में दूसरा टेस्ट मैच खेल रहे हैं और उसमें ज्यादा समय नहीं बीता है। इसके बाद हमें ऑस्ट्रेलिया में पांच मैच खेलने होंगे, जहां बहुत गर्मी होगी।

इस साल की शुरुआत में कार्स को पैर की उंगलियों पर गंभीर कट और छाले के कारण टीम से तीन महीने के लिए बाहर कर दिया गया था। यह समस्या क्रिसमस से पहले पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के दौरे पर पहली बार सामने आई थी। हालांकि वह बर्मिंघम में मैदान पर रहे, लेकिन उन्हें क्षेत्ररक्षण और गेंदबाजी के दौरान कई बार लंगड़ाते हुए देखा गया।

इस बीच, स्टोक्स हैमस्ट्रिंग सर्जरी के बाद इस साल गेंदबाजी में वापस आ गए हैं। पहले दिन उनमें कमर में खिंचाव की समस्या को देखा गया और खेल से पहले लंबे अभ्यास के बाद दूसरे दिन गेंदबाजी की शुरुआत की। इसी तरह वोक्स ने दिन की शुरुआत में चार ओवर में 22 रन देने के बाद नहीं खेले। ऑफ स्पिनर शोएब बशीर ने 45 ओवर फेंके और तीन विकेट लेकर 167 रन दिए। जॉश टंग ने संघर्ष करते हुए 119 रन देकर दो विकेट लिये। 28 ओवरों में और यहां तक कि हैरी ब्रूक ने उनकी अनुपस्थिति में अपने पार्ट-टाइम सीम के पांच ओवर फेंके। वॉन ने कहा, भारत ने शानदार और बहुत नियंत्रण के साथ बल्लेबाजी की है, लेकिन इंग्लैंड ने जिस तरह से गेंदबाजी की, वह थोड़ी चिंताजनक थी। मैंने मैदान में कुछ चीजें देखीं, जिससे मुझे लगा कि यह अशुभ संकेत है।

भारत ने जीता रजत पदक

अस्ताना (कजाकिस्तान), 4 जुलाई। भारत की पुंगनी तारा ने शुक्रवार को 2025 एशियाई युवा एवं जूनियर भारोत्तोलन चैंपियनशिप 2025 के पहले दिन शानदार प्रदर्शन करते हुए 44 किलोग्राम भार वर्ग (युवा बालिका) में रजत पदक जीता। पुंगनी ने कुल 141 किलोग्राम वजन उठाया। उनके व्यक्तिगत भारोत्तोलनों में 60 किलोग्राम स्नैच, 81 किलोग्राम क्लीन एंड जर्क शामिल थे, जिससे उनका उठाया कुल वजन 141 किलोग्राम हो गया।

इंडिया और बांग्लादेश सीरीज हो सकती है रद्द

बीसीसीआई और बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ले सकती हैं बड़ा फैसला

नई दिल्ली, 4 जुलाई। विराट कोहली और रोहित शर्मा को मैदान पर देखने के लिए क्रिकेट फैंस बेकरार हैं। ये दोनों खिलाड़ी अब केवल वनडे क्रिकेट में ही खेलते हुए नजर आएंगे। क्रिकेट फैंस को उम्मीद थी अगले महीने बांग्लादेश के खिलाफ होने वाली वनडे सीरीज में ये दोनों खिलाड़ी नीली जर्सी में दिखाई देंगे, लेकिन अब बांग्लादेश का दौरा खटाई में पड़ता हुआ दिख रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक टीम इंडिया का बांग्लादेश दौरा रद्द हो सकता है, पड़ोसी देश में हालात अच्छे नहीं है। शायद इसी कारण से केंद्रे सरकार इस दौरे की इजाजत भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड को नहीं दे रही है, क्योंकि वहां पर खिलाड़ियों की सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है।भारतीय क्रिकेट टीम अगले महीने बांग्लादेश के दौरे पर जाने लगी थी, लेकिन अब इस दौरे पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक बांग्लादेश में इन दिनों हालात अच्छे नहीं हैं। सत्ता परिवर्तन के बाद वहां पर माहौल काफी बिगड़ गए हैं।

अंडर-17 वर्ग में युवराज सिंह ने जीता पहला स्वर्ण पदक

नई दिल्ली, 4 जुलाई। 59वीं दिल्ली राज्य जूनियर और सब जूनियर तैराकी चैंपियनशिप का आज यहां तालकटोरा स्विमिंग पूल में उद्घाटन एडहॉक कमेटी के अध्यक्ष सीताराम साहू और पंजाब स्विमिंग एसोसिएशन के सीईओ बलराज शर्मा ने किया। चैंपियनशिप का आयोजन 7 जुलाई तक चलेगा। चैंपियनशिप में 410 से अधिक लड़के और लड़कियां भाग ले रहे हैं।

नोवाक जोकोविच का बेहतरीन प्रदर्शन, तीसरे राउंड में पहुंचने के साथ ही बनाया रिकॉर्ड

लंदन, 4 जुलाई। विंबलडन 2025 में नोवाक जोकोविच ने अपना बेहतरीन प्रदर्शन जारी रखा है। इस दौरान उन्होंने डैन इवांस को सीधे सेटों में 6-3, 6-2, 6-0 से मात देकर मेन्स सिंगल्स के तीसरे दौर में प्रवेश कर लिया है। इस जीत के साथ जोकोविच ने टूर्नामेंट में अपना 99वां मुकाबला अपने नाम किया और 19वीं बार तीसरे दौर में पहुंचने वाले ओपन एरा के पहले पुरुष खिलाड़ी बन गए। इससे पहले ये रिकॉर्ड दिग्गज रोजर फेडरर के नाम था, जिन्होंने 18 बार विबंलडन के तीसरे दौर तक का सफर तय किया था।इस 38 वर्षीय टेनिस स्टार ने अब तक सात विंबलडन खिताब और कुल 24 ठौंड स्लैम खिताब जीते हैं। इस मौके पर उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा कि 19 बार तीसरे दौर में पहुंचना बेहतरीन है।ये संख्या शायद यानिक सिनर और कार्लोस अल्कारेज की उम्र जितनी है। बता दें कि, पिछले दो विंबलडन फाइनल में जोकोविच को हराने वाले अल्कारेज की उम्र 22 साल है जबकि दुनिया के नंबर-1 खिलाड़ी सिनर 23 साल के हैं।

वूमेन प्रीमियर क्रिकेट लीग 2025 का हुआ भव्य आगाज

जयपुर, 4 जुलाई। वीरांगना वेलफेयर के तत्वावधान में आयोजित वूमेन प्रीमियर क्रिकेट लीग 2025 का जय क्लब में भव्य आगाज हुआ। क्रिकेट प्रतियोगिता में महिला खिलाडियों ने उत्कृष्ट खेल भावना का परिचय देते हुए खेल प्रतिभा का परिचय भी दिया। इस मुकाबले में रॉयल वॉरियर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 7.1 ओवर में 15 रन बनाए और 7 विकेट गवाए जिसके बाद स्पेषल टास्क एडवोकेट के बॉलर रौनक शेखावत ने 1 विकेट लिया। स्पेषल टास्क एडवोकेट ने बल्लेबाजी करते हुए सर्वाधिक रन किरण शर्मा 10 रन, सलिता 4 रन, मिडसू 2 रन बनाए। यह मैच स्पेषल टास्क एडवोकेट टीम ने 9 विकेट से जीता।

8वीं हाजी गनी बाबा स्मृति लीग कम नॉकआउट क्रिकेट प्रतियोगिता

जयपुर, 4 जुलाई। सबा क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 8वीं हाजी गनी बाबा स्मृति लीग कम नॉकआउट क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज खेले गये पहले मैच में नावेद खान 51 रन (42 गेंद 6 चौके 2 छक्के) के अद्धर्शतक तथा आयुष्ज्ञ आमेरिया 36 रन व 26 रन पर 2 विकेट के ऑलराउण्ड प्रदर्शन की बदौलत ऐमी क्रिकेट एकेडमी ने रेल्वे क्रिकेट एकेडमी को 25 रन से हराकर महत्वपूर्ण 2 अंक अर्जित कर 4 अंको से सेमीफाईनल में प्रवेश किया।

टॉस जीतकर ऐमी क्रिकेट एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए नावेद खान 51 रन, आयुष आमेरिया 36 रन, यथार्थ भारद्वाज 26 रन की मदद से निर्धारित 20 ओवर में 4 विकेट खोकर 164 रन बनाये रेल्वे एकेडमी की ओर से अविनाश शर्मा, अर्णव वशिष्ठ, नावेद खान, राकेश लरूसान ने 1-1 विकेट लिये। जवाबी पारी में हैदर रशीद 57 रन (48 गेंद 3 चौके 4 छक्के) मयंक परमार 32 रन की पारियों के बावजूद निर्धारित

20 ओवर में 9 विकेट 139 रन ही बना सकी।

दूसरा मैच : आज खेले गये दूसरे मैच में नीरजा मोदी एकेडमी ने प्रतीक मान 57 रन (41 गेंद, 4 चौके 3 छक्के), मानेन्द्र सिंह 35 आदित्य झाला 32 रन की मददद से वी.जी.डी आधार पर केंडलविक एकेडमी को 17 रन से हराकर पूल-ए तीनों मैच जीतकर 6 अंकों के साथ पहला स्थान तथा केन्डलविक ने 4 अंक के साथ दूसरे स्थान हासिल कर सेमीफाईनल में प्रवेश किया नीरजा मोदी ने निर्धारित 20 ओवर में 5 विकेट खोर 167 रन बनाये केन्डलविक की ओर से आदित्य सर्राफ 15/2, कुशाठा ओझा, सार्थक त्यागी, आयुष गुर्जर प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे।

जवाबी पारी में केन्डलविक एकेडमी ने ओशनिक ठोवर 54 रन नाबाद (44 गेंद, 4 चौके 2 छक्के) अनिकेत श्रीवास्तव 21 रन की मदद से 6 विकेट पर 125 रन बनाये। वर्षा से मैच रोकना पड़ा और फिर वी.जे.डी. द्वारा, नीरजा मोदी 17 रन से जीत गयी नीरजा मोदी की ओर मोंटी जयसवाल, मानेन्द्र सिंह, चिराग शर्मा व हर्षित शर्मा प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे।

तीसरा मैच आज खेले गये तीसरे मैच में हैदर रशीद 107 रन नाबाद (50 गेंद 9 चौके 8 छक्के) के शानदार नाबाद शतक, मयंक परमार 33 रन, अंकित सैन, 19 रन नाबाद की मदद से 14 ओवर में 1 विकेट खोकर रेल्वे क्रिकेट एकेडमी ने 1 विकेट खोकर 175 रन बनाये शिवा एकेडमी की ओर से भास्कर 1 मात्र विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे। जवाबी पारी में शिवा क्रिकेट एकेडमी के बल्लेबाजों ने 176 रन के लक्ष्य को लेकर उतरे मगर तेज गति से रन बनाने के प्रयास में लगातार विकेट गिरने लगे तो उनके बल्लेबाज 14 ओवर तक टिक कर 14 ओवर में 6 विकेट खोकर 44 रन बनाये और 131 रन से मैच गवां दिया।

राजस्थान के 24 निशानेबाजों का एशियाई शूटिंग चैम्पियनशिप, कज़ाकिस्तान 2025 के लिए हुआ चयन

जयपुर, 4 जुलाई। कज़ाकिस्तान के सिमकेत शहर में होने वाली में एशियाई शूटिंग चैंपियनशिप, कज़ाकिस्तान 2025 जो की 16 अगस्त से 30 अगस्त 2025 तक होगा। इस प्रतियोगिता में राजस्थान शूटिंग के 24 प्रतिभाशाली निशानेबाजो का चयन हुआ है जो कि भारत का नेतृत्व करेंगे। पूर्व में भारत में आयोजित प्रतियोगिताओ में राजस्थान के इन खिलाड़ियों द्वारा बहुत ही शानदार प्रदर्शन कर प्रदेश का नाम रोशन किया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि निशानेबाजो के समर्पण, कौशल और निशानेबाजी के खेल के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। शूटर्स ने अपने शूटिंग करियर के दौरान लगातार असाधारण प्रतिभा और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया है। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन ने चयनकर्ताओं का ध्यान खींचा है और उन्हें भारतीय निशानेबाजी दल में एक अच्छी जगह बनाई है। एशियाई गेम्स-2025 के लिए निशानेबाजों का चयन राजस्थान रायफल संघ के लिए बड़े सम्मान का क्षण है। यह खेल में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और युवा प्रतिभाओं को उनकी पूरी क्षमता हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एसोसिएशन की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एशियाई गेम्स-2025 में सेलेक्ट होने के लिए उन्हें शुभकामनाएं देते हैं। हमें विश्वास है खिलाड़ियों द्वारा इस प्रतियोगिता में पदक हासिल कर अपने देश व राज्य का नाम रोशन करेंगे उनके उल्लेखनीय कौशल और अटूट भावना से निशानेबाज़ और देश दोनों का गौरव बढ़ेगा।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में खेल हित में शानदार कार्य किया जा रहा है : विनोद सहारण

जयपुर, 4 जुलाई। विनोद सहारण, सचिव जिला क्रिकेट संघ गंगानगर एवं पूर्व संयोजक एडहोक कमेटी राजस्थान क्रिकेट संघ ने कहा कि मुख्यमंत्रीद्वारा राजस्थान क्रिकेट संघ के ताले खोलने का स्वागत करते हैं। राजस्थान क्रिकेट संघ के कार्यालय एसएमएस स्टेडियम जयपुर खुलवाने के लिये बहुत समय बाद भाजपा सरकार ने खेल हित में ही निर्णय किया हैं।मुख्यमंत्री के नेतृत्व में खेल हित मे शानदार कार्य किया जा रहा है। मेरा विश्वास है कि जल्दी दीनदयाल कुमावत के नेतृत्व मे एडहॉक के सभी सदस्य जल्दी चुनाव करवाकर राजस्थान क्रिकेट संघ कार्यकारिणी का गठन किया जा सकेगा। सभी एडहोक के सदस्य भाजपा परिवार के अहम सदस्य है। अब जल्द ही कांठोस के एजेंटों का सफाया होगा और जल्द ही चुनाव की घोषणा करेंगे। ऐसा सभी खेल प्रेमी और खेल प्रशासक के लिये महत्वपूर्ण कार्य होगा। ये सोच हमारे खेल मंत्री राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़ और एडहोक कमेटी आरसीए के सदस्य धनंजय सिंह खिवसर समय समय पर कहते रहे कि एडहोक का काम ही चुनाव करवाने का है। हमे पूर्ण विश्वास है अब जल्दी ही चुनाव का कार्य सम्पन्न करवाया जायेगा। भाजपा कभी जातिवाद पर राजनीति नही कीओर ना ही खेल में राजनिति की है।वर्तमान कमेटी खेल हित में निर्णय करेगी।

मारवाड़ खेल महोत्सव की ओर से जयपुर से कुणाल मनचंदा होंगे अध्यक्ष

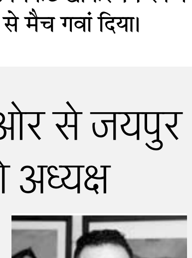

जयपुर, 4 जुलाई। जोधपुर राज मारवाड़ खेल महोत्सव की ओर से राष्ट्रीय स्तर के बिलियड्र्स स्नूकर खिलाड़ी और टेबल खेल के प्रति समर्पण और इस खेल में खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करना कई खेल आयोजन करवाने वाले प्रतिष्ठित खिलाड़ी कुणाल मनचन्दा को राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न खेल आयोजन करने वाले राज मारवाड़ खेल महोत्सव द्वारा राजस्थान के जयपुर जिले से कुणाल मनचन्दा को बिलियड्र्स स्नूकर विंग के अध्यक्ष पद से सुशोभित किया है जयपुर संभाग से राज मारवाड़ खेल महोत्सव में भाग लेने वाले सभी खिलाडियों का चयन आप ही के द्वारा निर्धारित किया जाएगा । सह संस्थापक राजेन्द्र कुमार गुर्जर ने बताया की आज की बैठक में अध्यक्ष उत्कर्ष सिंह दोनों उपाध्यक्ष पुष्पेन्द्र सिंह भाटी भानु प्रताप सिंह चौहान के अलावा सभी पदाधिकारियों द्वारा सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

आरसीए एडहॉक कमेटी कल आरसीए अकादमी कार्यालय पर ग्रहण करेगी पदभार

जयपुर, 4 जुलाई। राज्य सहकारिता विभाग द्वारा राजस्थान क्रिकेट संघ के संचालन हेतु गठित आरसीए एडहॉक कमेटी आगामी दिनांक 6 जुलाई को सवाई मान सिंह स्टेडियम स्थित आरसीए अकादमी पहुंच विधिवत रूप से अपना कार्यभार संभालेगी।

राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्यों धनञ्जय सिंह खींवसर, पिंकेश पोरवाल, आशीष तिवारी व मोहित यादव की उपस्थिति में दिनांक6 जुलाई को प्रातः 11.11 बजे आरसीए अकादमी स्थित आरसीए ऑफिस में आरसीए एडहॉक कमेटी विधिवत रूप से अपना पदभार ग्रहण करेगी। डी डी कुमावत के अनुसार आरसीए एडहॉक कमेटी को राज्य में क्रिकेट के विकास व राजस्थान क्रिकेट संघ को पुनः पटरी पर लाने की जो जिम्मेदारी व विश्वास राज्य के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, सहकारिता मंत्री गौतम कुमार दक ने दी है उसे समस्त आरसीए एडहॉक कमेटी अपने पूर्ण सामर्थ्य के साथ पूर्ण करेगी।

'डेढ़ साल में कोटपूतली-बहरोड़ को 4500 करोड़ रू. विकास के लिए दिये'

मुख्यमंत्री भजनलाल ने गिरुड़ी ग्राम पंचायत में अंत्योदय शिविर में लाभार्थियों को प्रशस्ति पत्र दिये

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बानसूर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने कई योजनाओं के लाभार्थियों को प्रशस्ति पत्र व स्कूटी वितरित की।

कोटपूतली, 4 जुलाई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को शाम को बानसूर की निकटवर्ती ग्राम पंचायत गिरुड़ी में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवड़ा शिविर का अवलोकन किया तथा योजनाओं के लाभान्वितों से बातचीत की।

इस दौरान, जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल शिविर हमारा संकल्प है। राजस्थान सरकार शिविर के माध्यम से हर घर तक योजनाओं को लेकर जा रही है। चाहे वह उज्ज्वला गैस योजना हो, वृद्धावस्था

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि 2027 तक किसानों को दिन में बिजली मिलने लगेगी तथा घरेलू बिजली 24 घंटे मिलेगी।**

पेंशन, किसानों के लिए मुख्यमंत्री फसल बीमा योजना, छात्रवृत्तियां, जन आवास योजनाएं या रोजगार बढ़ाने के प्रयास। उन्होंने ग्रामीणों को भरोसा दिलाया कि सरकार उनके साथ है।

मुख्यमंत्री ने पूर्ववर्ती गहलोत सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि पिछले डेढ़ साल में एक भी पेपर लीक नहीं हुआ। सरकार ने वादा किया था कि युवाओं को 5 साल में चार लाख नौकरियाँ देगी।

उनके लिए सरकार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि कोटपूतली बहरोड़ जिले को डेढ़ साल में साढ़े चार हजार करोड़ रुपये विकास के लिए दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि 2027 तक किसानों को दिन में बिजली मिलने लगेगी एवं 24 घंटे घरेलू बिजली मिलेगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने अजबपुरा सरपंच प्रियंका नरूका और हमीरपुर सरपंच सीता सैनी को टीबी-मुक्त ग्राम पंचायत बनाने पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया और अन्य योजनाओं में लाभर्थियों को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। बानसूर विधायक देवी सिंह शेखावत ने मुख्यमंत्री का साफा पहनाकर स्वागत किया और बानसूर कस्बे में सीवर लाइन डालने, रामपुर ग्राम पंचायत को नगरपालिका बनाने व हरसौरा को तहसील बनाने की मांग की।

इस अवसर पर विराटनगर विधायक कुलदीप धनकड़ ने भी सभा को सम्बोधित किया। कोटपुतली, बहरोड़ जिला प्रभारी मंत्री विजय चौधरी, कोटपुतली विधायक हंसराज पटेल, बानसूर विधायक देवीसिंह शेखावत, विराटनगर विधायक कुलदीप धनकड़,बहरोड़ विधायक जसवंत यादव पूर्व मंत्री राजेंद्र यादव, शशिकांत बोहरा, जिला अध्यक्ष सहित, बड़ी संख्या में भाजपाई इस अवसर पर मौजूद थे।

कोलकाता रेपः केस पुलिस ने क्राइम सीन रीक्रिएट किया

कोलकाता, 04 जुलाई। कोलकाता में लॉ की छात्रा के साथ हुए गैंगरेप मामले में पुलिस की जांच जारी है। पुलिस ने अभी तक इस मामले में मुख्य आरोपी समेत कुल चार को गिरफ्तार किया है। जिनसे पूछताछ जारी है। कोलकाता पुलिस ने आज सुबह इस घटना को लेकर क्राइम सीन को रीक्रिएट किया। इस दौरान सभी चार आरोपी पुलिस के साथ ही मौके पर मौजूद रहे। पुलिस ने आरोपी को करीब 5 घंटे घटनास्थल पर ही रखा। सीन रीक्रिएट करने के बाद आरोपियों को वापस लेकर जाया गया।

पुलिस की जांच के बीच मोनोजीत मिश्रा को लेकर कई बड़े और चौकाने वाले खुलासे हो रहे हैं। सूत्रों के अनुसार आरोपी मोनोजीत मिश्रा का लम्बा आपराधिक इतिहास रहा है। उस पर 11 आपराधिक मामले दर्ज हैं। कोलकाता पुलिस के टॉप सूत्रों ने एनडीटीवी को बताया

- **पुलिस चारों गिरफ्तार आरोपियों को लॉ कॉलेज लेकर गई।**

कि इनमें से कई मामले महिलाओं के साथ छेड़खानी और उनके साथ बदसलूकी के हैं। मोनोजीत इन सभी मामलों में जमानत पर चल रहा था। पीड़िता कॉलेज में पहले दिन से मोनोजीत के निशाने पर थी।

25 जून को हुए पीड़िता के साथ सामुहिक दुस्कर्म के बाद से मुख्य आरोपी मनीजित मिश्रा ने कुछ भरोसेमंद साथियों को कॉलेज में रुककर कासबा पुलिस स्टेशन के आसपास निगरानी करने को कहा था। कॉलेज से पुलिस स्टेशन करीब एक किलोमीटर दूर है।

इसके बाद वह दूसरे आरोपी प्रमित मुखर्जी और जैब अहमद के साथ कॉलेज से निकल गया।अगले दिन सुबह मोनोजित ने एक कॉलेज अधिकारी को कॉल किया और पुलिस के आने के बारे में पूछा। उसी दिन प्रमित ने एक वकील से संपर्क किया और दोनों ने कॉलेज के कई वरिष्ठ छात्रों से भी मदद मांगी।

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव सचिन पायलट ने माधोगढ़ में थानागाजी विधायक कांति मीणा के पेट्रोल पंप उद्घाटन व सवामणी कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने उनका कई जगह पर माला व साफा पहनाकर स्वागत किया।

'केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकार को महंगाई व बेरोजगारी की फिक्र नहीं'

सचिन पायलट ने थानागाजी विधायक के पेट्रोल पंप के उद्घाटन व सवामणी में भाग लिया

प्रतापगढ़ , 4 जुलाई (निस)। समीपवर्ती गांव माधोगढ़ में एक निजी कार्यक्रम में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सचिन पायलट का प्रतापगढ़ , पडाक-छापली, चौसला, आगर सहित, विभिन्न जगहों पर कार्यकर्ताओं ने माला व साफा पहनाकर स्वागत किया।

माधोगढ़ में थानागाजी विधायक कांति मीणा के पेट्रोल पंप उद्घाटन व सवामणी कार्यक्रम में अखिल भारतीय कांग्रेस संगठन महासचिव सचिन पायलट, पूर्व मंत्री भंवर जितेन्द्र सिंह, दौसा सांसद मुरारीलाल मीणा, दौसा विधायक डीसी बेरवा, राजगढ़ विधायक मांगीलाल मीणा, पूर्व मंत्री शंकुतला रावत, मुंडावर विधायक ललित यादव, किशनगढ़ बास विधायक दीपचंद खोरिया, पूर्व विद्यायक गोपाल मीणा, पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर, शाहपुरा विधायक मनीष

- **पायलट का प्रतापगढ़, पडाक छापली, चौसला, आगर आदि विभिन्न स्थानों पर माला व साफा पहना कर स्वागत किया गया। पायलट के कार्यक्रम में भंवर जितेन्द्र सिंह, सांसद मुरारी लाल मीणा, दौसा, राजगढ़, मुंडावर, किशनगढ़बास, शाहपुरा के विधायक व कई पूर्व विधायक भी मौजूद थे।**

यादव सहित, अनेक दिग्गज कांग्रेस नेताओं के आगमन पर जगह-जगह जेसीबी मशीन से फूल बरसाकर स्वागत किया किया। इस अवसर पर मंच से आमजन को संबोधित करते हुए पायलट ने कहा कि केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकार को महंगाई व बेरोजगारी की कोई फिक्र नहीं है। हर कोई राज्य में पिछली सरकार के कामों को याद कर रहा है। भाजपा धर्म साम्प्रदायिकता सम्बन्धी झगड़ों को बढ़ावा दे रही हैं।

आगामी दिनों में बिहार विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में भाजपा वहां नागरिकों की मतदाता सूची तैयार करवा रही है।

देश में अगर विपक्ष जनता के लिए आवाज उठाता है तो सरकारी संस्थाओं के माध्यम से उस पर ईडी, इनकम टैक्स जैसी कई संस्था को पीछे लगाकर उसे दबाने की कोशिश की जाती है। इस अवसर पर अलवर,जयपुर ग्रामीण व दौसा से अनेक कांग्रेस संगठन के अनेक पदाधिकारी व स्थानीय ग्रामीण महिला-पुरुष मौजूद थे।

'भगवान को न्याय में देखें ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रूप से कहा था कि जजों को देवताओं से जोड़ने की प्रवृत्ति गलत है। उन्होंने कहा था कि जज का कर्तव्य जनहित की सेवा करना है और उन्होंने चेतावनी दी थी कि कोर्ट न्याय का मंदिर है यह कहना एक गंभीर खतरा है।

न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कोलकाता में राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी में एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था। "जब हमें मान्यवर या लॉर्डशिप या लेडीशिप के रूप में संबोधित किया जाता है, तो यह एक बहुत ही गंभीर खतरा है और लोग कहते हैं कि कोर्ट न्याय का मंदिर है।

यह एक गंभीर खतरा है कि हम खुद को उन मंदिरों में देवता के रूप में देख सकते हैं।"

उन्होंने यह भी कहा था, "इसलिए मैं अपने बारे में बात करते हुए कहूं तो, हालांकि मेरे अपने व्यक्तिगत मूल्य हैं जो मेरे काफी करीब हैं, मुझे थोड़ा संकोच होता है जब मुझे कहा जाता है कि यह न्याय का मंदिर है, क्योंकि मंदिर यह मानता है कि न्यायाधीश देवता की स्थिति में होते हैं।"

बिहार के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एसआईआर के खिलाफ शीर्ष न्यायालय में याचिका दायर की जायेगी। यह राष्ट्रीय मसला है। बिहार के बाद अन्य राज्यों में यह प्रक्रिया शुरु की जा सकती है। सूत्रों के मुताबिक यह मसला सिर्फ राज्य का होता तो इसे उच्च न्यायालय में चुनौती दी जाती। चूंकि यह राष्ट्रीय स्तर का मामला है, इसलिए सुप्रीम कोर्ट का दवाजा खटखटाया जायेगा। सूत्रों के अनुसार अगर सर्वोच्च न्यायालय इसे हाई कोर्ट ले जाने के लिए कहेगा तो संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत इसके खिलाफ उच्च न्यायालय में याचिका दायर की जायेगी।

पिछली सरकार के इस्तीफा प्रकरण की सुनवाई 4 सप्ताह टली

जयपुर, 4 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में कांग्रेस के तत्कालीन 81 विधायकों के इस्तीफे देने से जुड़े मामले में 6 विधायकों द्वारा अपने और 75 विधायकों के इस्तीफे की कॉपी स्पीकर को सौंपने वाले तत्कालीन पांच विधायकों पर नोटिस तामील नहीं होने पर मामले की सुनवाई चार सप्ताह के लिए टाल दी। अदालत ने पांचों विधायकों पर नोटिस तामील कराने को कहा है। चीफ जस्टिस एम एम श्रीवास्तव और जस्टिस चन्द्र प्रकाश श्रीमाली की खंडपीठ ने यह आदेश भाजपा नेता राजेन्द्र राठौड़ की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

- **हाई कोर्ट ने पाँच तत्कालीन विधायकों, शांति धारीवाल, महेश जोशी, महेन्द्र चौधरी, रामलाल जाट व संयम लोढ़ा को नोटिस तामील कराने के निर्देश दिए।**

सुनवाई के दौरान अदालत के सामने आया कि अदालत की ओर से पूर्व में छह विधायकों शांति धारीवाल, महेश जोशी, रफीक खान, महेन्द्र चौधरी, रामलाल जाट व संयम लोढ़ा को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। लेकिन अभी तक सिर्फ रफीक खान को ही नोटिस की तामील हुई है। इस पर अदालत ने मामले की सुनवाई चार सप्ताह के लिए टाल दी।

याचिका में कहा गया कि 81 विधायकों ने 25 सितंबर, 2022 को विधानसभा स्पीकर को अपने इस्तीफे दिए थे। इसके बाद याचिकाकर्ता ने कई बार स्पीकर को प्रतिवेदन देकर इस्तीफों पर निर्णय करने को कहा, लेकिन उन्होंने कोई निर्णय नहीं लिया। याचिकाकर्ता की ओर से अदालत को कहा गया कि इस्तीफा देने के बाद इन 81 विधायकों ने वेतन भत्तों के तौर पर करीब 18 करोड़ रुपए प्राप्त किए हैं। ऐसे में इस बिन्दु पर उचित आदेश दिए जाए। इसके अलावा स्पीकर के समक्ष लंबित इस्तीफों के संबंध में निर्णय करने की अधिकतम समय सीमा तय की जाए।

अधिवक्ता हेमंत नाहटा ने बताया कि इन छह तत्कालीन विधायकों ने अपने व 75 अन्य विधायकों के इस्तीफे स्पीकर को सौंपे थे। वहीं तत्कालीन स्पीकर ने इन इस्तीफों को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया था कि विधायकों ने अपने इस्तीफे स्वेच्छा से नहीं दिए थे। इसलिए इन विधायकों को मामले में पक्षकार बनाने के लिए प्रार्थना पत्र इसलिए दायर किया था, ताकि पता चल सके कि विधायकों ने किसके दबाव में विधानसभा स्पीकर को इस्तीफे सौंपे थे।

कुंभलगढ़ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लिए बंद रहेगा। समिति ने तय किया है कि केवल सुबह 6 से 8 बजे और शाम 6 से 8 बजे तक जरूरी वस्तुओं की खरीद फरोख्त के लिए दुकानें खोली जाएंगी।

विवाद का असर कुंभलगढ़ में पर्यटन और स्थानीय व्यापार पर स्पष्ट रूप से दिख रहा है। शुक्रवार को दूर-दूर से आए सैकड़ों पर्यटक किले के बाहर से ही लौटते देखे गए।

होटल, दुकानें और गाइड सेवाएं सब ठप हो गई हैं। इससे ना केवल पर्यटकों को असुविधा हो रही है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी इसका असर पड़ रहा है।

'चीन, पाकिस्तान...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बैयरैक्टर और अन्य अनेक ड्रोन प्रदान किए।"

साथ ही, तुर्की और चीन दोनों ही भारत के प्रयासों को बढ़ने से रोकने के लिए प्रयत्नशील थे। संघर्ष के निचले स्तर पर, बीजिंग और अंकारा दोनों जानते थे कि इस्लामाबाद की भारत पर बढ़त है। दूसरी ओर, यदि भारत, पाकिस्तान के खिलाफ हमलों को तेज करके संघर्ष की स्तर को ऊपर ले जा पाता तो भारत की मूलभूत ताकतों को नज़रअंदाज़ करना मुश्किल हो जाता।

इसलिए, भारत के युद्ध के प्रयासों को जटिल बनाकर और शांति का रास्ता दिखा कर तुर्की जैसे देशों ने प्रभावी रूप से युद्ध का उपयोग अमेरिका के बाद वैश्विक व्यवस्था में अपनी खुद की स्थिति को सुधारने के लिए किया।

उन्होंने कहा कि भारत को हमेशा "एस्केलेशन लैडर" पर एक कदम आगे रहना चाहिए।

उन्होंने कहा, "जब हम एक सैन्य उद्देश्य तक पहुंच जाते हैं, तो हमें कोशिश करनी चाहिए कि उसे वहीं रोक दें, युद्ध शुरू करना आसान है, लेकिन उसे नियंत्रित करना बहुत मुश्किल है। इसलिए मैं यह कहना चाहूँगा कि यह एक बहुत ही कुशल दांव था, जो युद्ध को उपयुक्त समय पर रोकने के लिए उठाया गया था।"

सिंह ने यह भी कहा कि संघर्ष विराम होने से पहले, भारत की ओर से वह कठोर प्रहार पूरी तरह तैयार था तथा पाकिस्तान को एहसास हो गया था कि वह बुरी स्थिति में पहुँच सकता है, यही कारण था कि उसने संघर्षविराम की मांग की।

सिंह ने यह स्पष्ट किया कि भारत की रणनीति अब बदल चुकी है।

उन्होंने कहा, "यदि आवश्यक हुआ तो दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। अब दर्द सहने की कोई गुंजाइश नहीं है, जैसा कि हमने कुछ साल पहले किया था। यह एक महत्वपूर्ण संदेश है, जो स्पष्ट और बुलंद आवाज में सामने आ चुका है।"

लेफ्टिनेंट जनरल सिंह के इस स्वीकारोक्ति और खुलासे, जिसे मोदी सरकार छिपाने की कोशिश कर रही है, पर नज़र डालने से यह साफ़ होता है कि रणनीति तय करने वाले ग्रुप, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तथा राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार शामिल थे, ने ऑपरेशन सिंदूर शुरू करने का निर्णय लेते समय चीन के कारक को ध्यान में नहीं रखा था।

युद्ध के एक पुराने अनुभवी ने नाम न बताने की शर्त पर कहा कि सैन्य हमला शुरू करने के लिए केवल साहस से भरे शब्द ही पर्याप्त नहीं होते, ऐसा कदम उठाने के लिए सभी संभावित कारकों को ध्यान में रखते हुए व्यापक योजना बनानी पड़ती है। उन्होंने कहा कि सामान्य व्यक्ति भी इस बात को खारिज नहीं करता कि चीन पाकिस्तान की पूरी तरह से सहायता करेगा।

पीएम मोदी को त्रिनिदाद-टोबैगो का सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिला

पोर्ट ऑफ स्पेन, 04 जुलाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को शुक्रवार को त्रिनिदाद और टोबैगो के सर्वोच्च नागरिक सम्मान द ऑर्डर ऑफ द रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एंड टोबैगो से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें उनकी वैश्विक नेतृत्व क्षमता, भारतीय प्रवासी समुदाय से गहरे जुड़ाव और कोविड-19 महामारी के दौरान मानवीय प्रयासों के लिए दिया गया। बता दें कि पीएम मोदी फिलहाल पांच देशों के दौरे पर हैं और त्रिनिदाद और टोबैगो की यह दो दिन की यात्रा उनका दूसरा पड़ाव है। वहीं सम्मान मिलने के बाद उन्होंने कहा, त्रिनिदाद एंड टोबैगो के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित होकर मैं गौरवान्वित हूं।

सब लैफ्टिनैंट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एडमिरल जनक बेवली ने प्रतिष्ठित 'विंग्स ऑफ गोल्ड' पुरस्कार से सम्मानित किया।

सब लेफ्टिनेंट पूनिया नौसेना विमानन की फाइटर स्ट्रीम में शामिल होने वाली पहली महिला हैं। इससे नौसेना में महिला फाइटर पायलटों के एक नए युग का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

नौसेना में टोही विमानों और हेलीकॉप्टरों में पायलट तथा नौसेना वायु संचालन अधिकारियों के रूप में पहले से ही महिला अधिकारी काम कर रही हैं। नौसेना ने सब लेफ्टिनेंट पूनिया की इस उपलब्धि की जानकारी सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में भी दी है। पोस्ट में लिखा है , नौसेना विमानन में एक नया अध्याय। भारतीय नौसेना ने तीन जुलाई को द्वितीय बेसिक हॉक कन्वर्जन कोर्स के साथ ऐतिहासिक मील का पत्थर स्थापित किया।

कांग्रेस बिहार में 5 लाख महिलाओं को सैनिटरी पैड बाँटेगी

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश कुमार ने यह घोषणा कर यह भी बताया कि पैड के पैकेट पर राहुल गाँधी की तस्वीर होगी

पटना, 04 जुलाई। बिहार में विधानसभा चुनाव सन्निकट है और प्रदेश में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। शुक्रवार को कांग्रेस प्रदेश के अध्यक्ष राजेश कुमार ने महिलाओं के लिए एक नई योजना की घोषणा करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी राज्य की 5 लाख महिलाओं को मुफ्त सैनिटरी पैड बांटेगी। जिसके पैकेट पर राहुल गांधी की तस्वीर होगी।

कांग्रेस की इस घोषणा पर भाजपा ने कड़ा एतराज जताया है। भाजपा प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा, "सैनिटरी पैड पर राहुल गांधी की तस्वीर लगाना बिहार की महिलाओं का अपमान है। कांग्रेस महिला विरोधी पार्टी रही है और अब वह सस्ती लोकप्रियता के लिए महिलाओं की गरिमा से खिलवाड़ कर रही है। बिहार की महिलाएं कांग्रेस और आरजेडी को चुनाव में मुंहतोड़ जवाब देंगी।"

अब देखना यह होगा कि कांग्रेस की यह नई पहल चुनावी मैदान में कितना असर डालती है और महिला वोटर्स की प्राथमिकता को कितना प्रभावित कर पाती है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश कुमार ने बताया कि इन सैनिटरी पैड के पैकेट पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी की तस्वीर छपी होगी, और इसे माई-बहन मान योजना के तहत वितरित किया जाएगा।

कोचिंग ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कोचिंग सेंटरों के विद्यार्थियों की ओर से आत्महत्या करने के मामले में स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान ले रखा है।

अमेरिका व भारत के बीच टैरिफ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अमेरिका द्वारा लगाए गए एकतरफा शुल्क के खिलाफ शिकायत भी दर्ज कराई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत ने औपचारिक रूप से अमेरिका के साथ कुछ व्यापार मुद्दों पर असहमति व्यक्त की है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने दावा किया था कि भारत के साथ एक बहुत बड़ा व्यापार समझौता जल्द ही पूरा हो जाएगा। यह दावा उन्होंने उस समय किया, जब चीन ने अमेरिका को महत्वपूर्ण दुलर्भ खनिजों (रेअर अर्थ) की आपूर्ति का समझौता हाल ही में किया था। ट्रंप ने चीन को चेतावनी दी थी कि अगर कोई व्यापार समझौता नहीं हुआ तो उस पर प्रतिबंध लगाए जाएंगे।

भारत के मामले में, ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंधों में आई तल्ख़ी का असर व्यापार समझौते की गति पर भी पड़ा है।

ट्रंप ने पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर को वाइट हाउस में लंच के लिए आमंत्रित किया था। माना जाता है कि मुनीर के भारत और पाकिस्तान को लेकर दिए गए भड़काऊ बयान ने पहलगाम में हुई हत्याओं की पृष्ठभूमि तैयार की थी। इसके बाद से भारत और अमेरिका के रिश्ते मित्रता से हटकर एक तरह की औपचारिकता तक सीमित हो गए।

- **अमेरिका के इस अद्भुत बर्ताव से भारत अमेरिका के आपसी संबंधों में खटास तो आनी ही थी, और इससे टैरिफ वार्ता को पटरी से उतरना ही था।**

ट्रंप समझौते करने को लेकर लगातार ऐसे दावे कर रहे थे जो भारत पर दबाव डालने जैसे लगते थे। उन्होंने यह तक कह दिया था कि भारत और पाकिस्तान के बीच "युद्ध विराम" उनके व्यापार प्रस्ताव के कारण संभव हो सका।

ट्रंप के दावों को भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने विभिन्न मंचों पर सिरे से खारिज किया।

ट्रंप के दावों के बाद, पाकिस्तान ने व्यक्तिगत रूप से उन्हें प्रसन्न करने की कोशिशें कीं, यहां तक कि पाकिस्तान के सेना प्रमुख ने उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित करने का प्रस्ताव दिया।

अहम् से भरी उनकी मानसिकता इस हद तक पहुँच गई कि ट्रंप ने एक बार, जब पिछले पोप का निधन हुआ, खुद को अगला पोप तक घोषित कर दिया।

अब तक दो दौर की बातचीत हो चुकी है, पहले दौर में एक उच्च स्तरीय अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधिमंडल भारत आया था। उसके बाद भारत की ओर से विशेष सचिव के नेतृत्व में एक टीम वॉशिंगटन गई थी।

वैसे भी, व्यापार समझौते जटिल प्रकिया होते हैं और इन्हें जल्दबाज़ी में नहीं निपटाया जा सकता। इन्हें अंतिम रूप देने से पहले औद्योगिक क्षेत्रों की चिंताओं को गहराई से समझना पड़ता है। भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के मामले में, कुछ विशेष क्षेत्रों में बाकी बचे मुद्दों को हल किए बिना अंतिम समझौता नहीं हो सकता।

इन क्षेत्रों में कृषि एवं कृषि-आधारित उद्योग, ऑटोमोबाइल, रत्न एवं आभूषण, चमड़ा उत्पाद, वस्त्र, प्लास्टिक, रसायन, झींगा और अंगूर जैसे अनेक श्रमिक-प्रधान क्षेत्र शामिल हैं। यह उल्लेखनीय है कि अंगूर एक महत्वपूर्ण वस्तु बन गए हैं क्योंकि भारतीय किसान अब शराब उत्पादन के लिए उपयुक्त उच्च गुणवत्ता वाले अंगूर उगा रहे हैं।

अमेरिका ने नट्स, डेयरी उत्पादों और अन्य वस्तुओं पर शुल्क रियायतों का प्रस्ताव दिया ह

हालिया दौर के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि बातचीत विभिन्न क्षेत्रों में मतभेदों के कारण रुक गई है। फिलहाल भारत को अमेरिका की ओर से अधिक शुल्क का सामना करना पड़ सकता है।

'लंगड़े बारात के घोड़े, "रेस हॉर्स"...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हैं, आज पूरी तरह से किनारे कर दिए गए हैं और उनकी वापसी की भी कोई उम्मीद नहीं है, क्योंकि उन्होंने सोनिया गांधी के नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह किया था तथा नेतृत्व के साथ विश्वासघात किया था। वे इतिहास के कूड़ेदान का हिस्सा हो गये हैं तथा अब उनके पुनरागमन की कोई संभावना नहीं दिखती, भले ही कांग्रेस के कई नेता उनके पक्ष में हों।

कमलनाथ भी अब पार्टी से बाहर हैं। उन्होंने गांधी परिवार के लिए लंबे समय तक काम किया और उसकी वित्तीय सुरक्षा का भी ध्यान रखा। लेकिन जब राहुल गांधी मध्य प्रदेश के संदर्भ में "लंगड़े घोड़े" की बात करते हैं, तो शायद उनका इशारा कमलनाथ की ओर ही होता है।

हरियाणा के वरिष्ठ नेता भूपिंदर सिंह हुड्डा के घर हर दिन राजनीतिक आगन्तुकों की भीड़ लगी रहती है, लेकिन राहुल गांधी को लगता है कि हुड्डा को अब राजनीति से रिटायर हो जाना चाहिए ,क्योंकि वे राजनीति के लिए उपयोगी नहीं रहे हैं।

- **गुलाम नबी भी गहमागहमी में पार्टी छोड़ तो गए, पर अब "लाइट वेट" जयराम रमेश जैसे लोग उन्हें पुनः पार्टी में प्रवेश नहीं दे रहे हैं।**
- **ज्योतिरादित्य सिंधिया व आर.पी.एन. सिंह भाजपा में शामिल हो गए। क्योंकि कांग्रेस में उन्हें वो मान-सम्मान नहीं मिल रहा।**
- **अब अगली बारी शशि थरुर की है।**

ऐसे उदाहरण हर राज्य में मिल जाएंगे। अब शशि थरूर को भी दरकिनार करने या उन्हें पार्टी से बाहर करने की कोशिश चल रही है, जबकि बाकी दुनिया उन्हें एक असैट के रूप में देखती है।

गुलाम नबी आजाद, जिनके पास अपार संगठनात्मक अनुभव है, केवल इसलिए पार्टी से बाहर हो गए, क्योंकि उन्होंने कुछ सच्चाई बोल दी थी। जब उन्होंने पार्टी में वापस आने की कोशिश की, तो जयराम रमेश जैसे आधारहीन नेताओं ने ऐसा नहीं होने दिया।

मनीष तिवारी न केवल प्रतिभाशाली हैं, बल्कि बहुत स्पष्ट वक्ता भी हैं। लेकिन उन्हें भी किनारे कर दिया गया, क्योंकि वे राहुल गांधी के चापलूसी वाले ब्रांड में फिट नहीं बैठते।

ज्योतिरादित्य सिंधिया तथा आरपीएन सिंह जैसे कई प्रतिभाशाली नेता पार्टी छोडकर भाजपा में चले गए, क्योंकि उनसे काम तो खूब लिया गया, लेकिन कांग्रेस ने उन्हें उनका वाजिब हक नहीं दिया।

ऐसे नेताओं की सूची बहुत लंबी है, जो खुद को उपेक्षित महसूस करते है और जिन्हें लगता है कि उन्हें पार्टी की सेवा के लिए प्रशंसा नहीं मिल रही है।

जब राहुल गांधी कहते हैं कि बारात के घोड़े रेस के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं और रेस के घोड़े बारात में, तब पार्टी का एक चतुर सदस्य टिप्पणी करता है: "यह बात अन्य बहुत से लोगों की अपेक्षा राहुल गांधी पर ही सबसे ज़्यादा लागू होती है!" लेकिन उनसे यह बात कहे कौन?

राहुल गांधी का मुख्य निशाना अहमद पटेल थे। उन्होंने उन्हें हटाने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया था। ने अहमद - मुक्त कांग्रेस चाहते थे। लेकिन कुदरत ने अपना काम किया और अहमद पटेल शीघ्र ही दुनिया से विदा हो गए।

आज की राहुल गांधी की कांग्रेस अव्यवस्था, राजनीतिक समझ की कमी और अनुभवहीन युवा नेताओं के भरोसे चल रही है और राहुल उन्हीं को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इनमें से ज्यादातर 'घोड़े' चुनावी रणभूमि में नाकाम हो रहे हैं।

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 जयपुर कार्यालयः सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोनः 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोनः 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोनः 2200660, फैक्स 0151-2527371 अजमेर कार्यालयः राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोनः 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्सः 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोनः 230200, 230400, फैक्सः 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्सः 01562-256908